जरथुस्त्र : नाचता-गाता मसीहा

(Translated from English: Zarathustra: A God That Can Dance and Zarathustra: The Laughing Prophet (parts))

अनुक्रम

1. पूर्वरंग—भाग-1 3
2. पूर्वरंग—भाग-2 4
3. पूर्वरंग—भाग-3 6
4. कायापलट की बात 9
5. शरीर का तिरस्कार करने वालों की बातें 15
6. जीवन और प्रेम की बात 17
7. मित्र की बात 20
8. नये बुतों की बात 23
9. न्याय की बात 25
10. सर्जक के ढंग की बात 27
11. सद्‌गुण संप्रदान करने की बात 29
12. प्रसिद्ध दार्शनिकों की बात 32
13. आत्म—विजय की बात 37
14. विद्वानों की बात 42
15. कवियों की बात 47
16. उद्धार की बात 52
17. मानवोचित होशियादी की बात 57
18. परिव्राजक 60
19. आनंदमय द्वीपों की बात 62
20. धर्मत्यागियों की बात 65
21. तीन बुरी बातों की बात 69
22. भारता—मनोवृत्ति की बात-भाग-1 75

23. भारता—मनोवृत्ति की बात-भाग-2 79

24. पुरानी व नयी नियम— तालिकाओं की बात-भाग-1 83

25. पुरानी व नयी नियम— तालिकाओं की बात-भाग-2 86

26. स्वास्थ्य— लाभ करनेवाला 89

27. उच्चतर मानव से मुलाकात की बात 92

28. हास्य व नृत्य की बात 94

पूर्वरंग—भाग-1

प्यारे ओशो,

जब जरथुस्त्र तीस साल के थे, वह अपना घर और उसकी सुखद सुरक्षा छोड़कर पहाड़ों में चले गये। वहां उन्होंने अपने स्व का और अपने एकांत का भरपूर आनंद लिया और दस साल तक उससे थकित नहीं हुए। लेकिन अंतत: उनके हृदय का भाव बदला — और एक प्रात: वह अरुणोदय के साथ उठे चल कर सूर्य के सम्मुख आए और उससे इस प्रकार बोले :

महा सितारे! क्या होगा तुम्हारा आनंद यदि वे न हों जिनके लिए तुम चमकते हो!

तुम यहां मेरी गुफा पर दस वर्षों से आते रहे हो : तुम अपने प्रकाश से और इस यात्रा से थक गये होते मेरे बिना मेरे गरुड़ और मेरे सर्प के बिना।

लेकिन हमने हर सुबह तुम्हारा इंतजार किया तुमसे तुम्हारी बहुलता ग्रहण की और उसके लिए तुम्हें धन्यवाद दिया

देखो! मैं अपनी प्रज्ञा से थकित हूं एक मधुमक्खी की भांति जिसने बहुत ज्यादा मधु इकट्ठी कर ली हो; मुझे ऐसे हाथों की जरूरत है जो इसे लेने के लिए फैले हों।

मैं इसे देना और बांटना चाहूंगा जब तक कि मनुष्यों में बुद्धिमान अपनी मूढ़ता में फिर से आनंदित न हो जाएं और गरीब अपने धन में आनंदित न हो जाएं।

... ऐसे प्रारंभ हुआ जरथुस्त्र का नीचे उतरना।

मैं इतिहास को पूरी तरह उसके मूल से ही लिखना चाहूंगा, खासकर इन लोगों के बारे में क्योंकि इनको मैं अपनी स्वयं की अंतर्दृष्टि से जानता हूं — मुझे तथ्यों की चिंता लेने की जरूरत नहीं है, मैं सत्य को ही जानता हूं। ये लोग जीवन के विरोध में होकर नहीं गये थे : ये केवल एकांत के लिए गये थे; ये अकेले होने के लिए गये थे; ये बस चित्त—विक्षेपों से दूर गये थे।

लेकिन गौतम बुद्ध और जरथुस्त्र के बीच फर्क यह है कि गौतम बुद्ध ने — स्वयं को पा लेने के बाद भी — कभी यह घोषणा नहीं की, 'अब मेरे एकांतवासी बने रहने की, मठवासी बने रहने की जरूरत नहीं है। मैं वापस लौट सकता हूं और संसार में एक सामान्य व्यक्ति की तरह रह सकता हूं।'

शायद इसके लिए संसार छोड्कर जाने से भी ज्यादा साहस की जरूरत होती है; संसार में वापस लौटने के लिए और अधिक साहस की जरूरत होती है। चढ़ाई दुर्गम होती है, लेकिन बहुत ज्यादा तुष्टिदायक। तुम ऊंचे ही ऊंचे और ऊंचे और ऊंचे चले जा रहे हो, और एक बार तुम उच्चतम शिखर पर पहुंच गये कि फिर महत साहस की जरूरत होती है नीचे की तरफ उन अंधेरी घाटियों में लौटने के लिए जिन्हें तुम छोड़ गये थे, केवल लोगों तक संदेश पहुंचाने के लिए कि : 'तुम्हें सदा—सदा के लिए अंधकार में बने रहने की जरूरत नहीं है। तुम्हें सदा—सदा के लिए दुख और नर्क में बने रहने की जरूरत नहीं है। ' इस नीचे उतरने वाली यात्रा की उन लोगों द्वारा निंदा भी हो सकती है जिनकी तुम मदद करने जा रहे हो। जब तुम ऊपर की तरफ जा रहे थे, तुम एक महान संत थे, और जब तुम नीचे की तरफ आ रहे हो, लोग सोचेंगे शायद तुम्हारा पतन हो गया, तुम्हारा अपनी महानता से, अपनी ऊंचाइयों से पतन हो गया। निश्चित ही परम ऊंचाइयों को छूने के बाद फिर से सामान्य व्यक्ति होने के लिए जगत के महानतम साहस की जरूरत होती है।

जरथुस्त्र वह साहस दिखलाते हैं।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

पूर्वरंग—भाग-2

प्यारे ओशो,

जरथुस्त्र पहाड़ से अकेले नीचे उतरे और किसी से उनकी मुलाकात नहीं हुई। लेकिन जब उन्होंने जंगल में प्रवेश किया, एक बूढ़ा व्यक्ति जो जंगल में जड़िया खोजने के लिए अपनी पवित्र कुटिया से बाहर आया था, सहसा उनके समुख था। और वह बूढ़ा व्यक्ति जरथुस्त्र से इस प्रकार बोला :

'यह परिव्राजक मेरे लिए अजनबी नहीं है : बहुत वर्षों पहले वह यहां से गुजरा था। वह जरथुस्त्र कहलाता था; लेकिन वह बदल गया है।

'तब तुम अपनी राख पहाड़ों पर ले गये थे : क्या तुम आज अपनी अग्नि घाटियों में ले जाओगे? क्या तुम्हें एक आगलगाऊ की सजा का भय नहीं है?

'हां, मैं जरथुस्त्र को पहचान रहा हूं। उसकी आंखें निर्मल हैं और उसके मुंह के आसपास घृणा नहीं झांक रही है। क्या वह एक नर्तक की तरह नहीं आगे बढ़ रहा है?

'जरथुस्त्र कितना बदल गया है! जरथुस्त्र बन गया है — एक शिशु एक जाग्रत पुरुष

(संबुद्ध) : अब तुम सोनेवालों से क्या चाहते हो?

'तुम एकांत में रहे जैसे सागर में और सागर ने तुम्हें जन्म दिया। अफसोस क्या तुम तट पर जाना चाहते हो? अफसोस क्या तुम फिर से अपने शरीर को खुद ही घसीटना चाहते हो?' जरथुस्त्र ने जवाब दिया : 'मैं मनुष्यजाति को प्रेम करता हूं। '

जरथुस्त्र अकेलेपन की खोज में पहाड़ों में गये थे। भीड़—भाड़ में तुम स्वयं का एकाकी पा सकता है। लेकिन अकेला कभी नहीं। एकाकीपन एक प्रकार की भूख है दूसरे के लिए। तुम दूसरे की कमी महसूस कर रहे हो। तुम स्वयं में ही पर्याप्त नहीं हो — तुम रिक्त हो। इसलिए हर कोई भीड़ में होना चाहता है, और अपने इर्दगिर्द बहुत प्रकार के संबंधों के ताने—बाने बुनता है केवल स्वयं को धोखा देने के लिए, यह भूलने के लिए कि वह अकेला है। लेकिन वह एकाकीपन बार—बार उभर पड़ता है। कोई भी संबंध उसे छिपा नहीं सकता। सारे संबंध इतने उथले और इतने नाजुक हैं। गहरे में तुम भलीभांति जानते हो कि यद्यपि कि तुम भीड़ में हो, फिर भी तुम अजनबियों के बीच हो। तुम स्वयं अपने लिए भी अजनबी हो।

जरथुस्त्र और सारे ही रहस्यदर्शी अकेलेपन की तलाश में पहाड़ों में गये। अकेलापन विधायक अनुभूति है, तुम्हारे अपने ही अस्तित्व की अनुभूति — और यह अनुभूति कि तुम अपने आप में पर्याप्त हो — कि तुम्हें किसी अन्य की जरूरत नहीं है।

एकाकीपन हृदय की एक रुग्णता है।

अकेलापन एक स्वास्थ्य—लाभ है।

जो लोग अकेलेपन को जानते हैं वे सदा—सदा के लिए एकाकीपन के पार जा चुके। चाहे वे अकेले हों अथवा लोगों के साथ, वे स्वयं में ही अवस्थित होते हैं। वे पहाड़ों में अकेले हैं, वे भीड़ में अकेले हैं, क्योंकि यह उनका बोध है कि अकेलापन हमारा स्वभाव है। जगत में हम अकेले आए हैं और जगत से हम विदा भी अकेले ही होंगे।

इन दो अकेलेपनों के बीच, जन्म और मृत्यु के बीच भी तुम अकेले ही हो; लेकिन तुमने अकेलेपन के सौंदर्य को नहीं समझा है, और इसीलिए तुम एक प्रकार के भ्रम में पड गये हो — एकाकीपन का भ्रम।

अपने अकेलेपन को उद्घाटित करने के लिए व्यक्ति को भीड़ से बाहर जाना होता है। धीरे—धीरे, जैसे—जैसे वह जगत को भूलता है, उसका सारा होश स्वयं पर सघन होता है, और फिर प्रकाश का विस्फोट होता है। पहली बार उसे पता चलता है अकेले होने के सौंदर्य और वरदानों का, अकेले होने की अपरिसीम स्वतंत्रता और प्रज्ञा का। जरथुस्त्र के पास एक सर्प और एक गरुड़ हुआ करते थे जब वह पहाड़ों में रह रहे थे। पूरब में, सर्प सदा ही प्रज्ञा का प्रतीक रहा है। सबसे बड़ी प्रज्ञा है. अतीत से बाहर खिसकते जाना, बिना उसे पकड़े, ठीक जैसे कि सर्प अपनी पुरानी केंचुल से बाहर खिसक जाता है और कभी लौटकर पीछे नहीं देखता। उसकी गति सदा पुराने से नये में है।

प्रज्ञा अतीत का संग्रह नहीं है; प्रज्ञा सतत नवीन हो रहे जीवन की अनुभूति है।

प्रज्ञा पर स्मृतियों की धूल नहीं जमती; वह एक स्वच्छ दर्पण की तरह बनी रहती है — उसे प्रतिबिंबित करती हुई जो है — सदा ताजी, सदा नवीन, सदा वर्तमान में।

गरूड़ स्वतंत्रता का प्रतीक है। अकेले वह सूरज के आरपार उड़ान करता है, सुदूर असीम आकाश में, बिना किसी भय के। प्रज्ञा और स्वतंत्रता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

पहाड़ों में दस वर्ष रहकर, जरथुस्त्र ने अकेले होने की अलमस्ती उपलब्ध की, अकेले होने की परिशुद्धता, अकेले होने की स्वतंत्रता — और यहीं वह दूसरे बुद्धपुरुषों के मध्य अनूठे हैं; जब उन्होंने खोज लिया, वे अपनी ऊंचाइयों पर ही बने रहे, जरथुस्त्र " अधोगमन " शुरू कर देते हैं, भीड़ में वापस

उन्हें मनुष्यजाति तक यह संदेश पहुंचाना है कि तुम अनावश्यक रूप से दुख उठा रहे हो, तुम अनावश्यक रूप से पराश्रित हो रहे हो, तुम अपने लिए स्वयं हर प्रकार के कारागार निर्मित कर रहे हो — मात्र सुरक्षित और निरापद महसूस करने के लिए। लेकिन एकमात्र बचाव और एकमात्र सुरक्षा स्वयं को जानने में है, क्योंकि तब मृत्यु भी नपुंसक है। वह तुम्हें नष्ट नहीं कर सकती।

जरथुस्त्र पहाड़ों से नीचे की तरफ जा रहे हैं लोगों को बताने के लिए कि प्रज्ञा ज्ञान की पर्यायवाची नहीं है; वास्तव में, ज्ञान प्रज्ञा का ठीक विलोम है। प्रज्ञा मूलरूप से निर्दोष सरलता है। ज्ञान अहंकार है, और प्रज्ञा अहंकार का विसर्जन है। ज्ञान तुम्हें जानकारियों से भर देता है। प्रज्ञा तुम्हें नितांत रूप से खाली बनाती है। लेकिन वह खालीपन एक नये प्रकार की भरावट है। वह विस्तीर्णता है।

वह लोगों के पास जा रहे हैं उन्हें बताने के लिए कि प्रज्ञा स्वतंत्रता लाती है। अन्य कोई स्वतंत्रता नहीं है — राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, वे सारी स्वतंत्रताएं नकली हैं। एकमात्र असली स्वतंत्रता आत्मा की है, जो एक गरुड़ बन सकती है और अज्ञात तथा अज्ञेय में बिना किसी भय के जा सकती है। क्योंकि उन्होंने परम चैतन्य की यह दशा उपलब्ध कर ली है, वह इसे बांटना चाहते हैं। उनका अनूठापन यह है कि वह अभी भी मनुष्यजाति से प्रेम करते हैं। सोए हुए लोगों के प्रति, अंधे लोगों के प्रति निंदा का कोई भाव नहीं है। उनके लिए विशाल करुणा है। वह नीचे की तरफ जा रहे हैं क्योंकि वह जीवन को प्रेम करते हैं। वह जीवन के खिलाफ नहीं हैं।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

पूर्वरंग—भाग-3

प्यारे ओशो

जब जरथुस्त्र जंगल के सामने के निकटतम नगर में पहुंचे वहीं पर उन्हें बहुत सारे लोग बाजार के चौराहे पर एकत्र हुई मिल गये : क्योंकि ऐसी घोषणा की गयी थी कि कोई रस्सी पर चलने वाला नट आने वाला था। और जरथुस्त्र लोगों से इस प्रकार बोले :

मैं तुम्हें परममानव (सुपरमैन) सिखाता हूं। मानव कुछ ऐसी चीज है जिससे पार उठना है तुमने उससे पार उठने के लिए क्या किया है?

आज तक के सभी प्राणियों ने कुछ अपने से पार निर्मित किया है : और क्या तुम इस महान ज्वार का उतार बनना चाहते हो और मानव के पार जाने के बजाय पशुओं में लौट जाना चाहते हो?

मनुष्यों के लिए बंदर क्या है? हंसी की सामग्री अथवा एक दुखद शर्मिन्दगी। और ठीक ऐसा ही मानव है परममानव के लिए : हंसी की सामग्री अथवा एक दुखद शर्मिन्दगी।

तुम कीड़े—मकोड़ों से चल कर मनुष्य तक आए हो और बहुत कुछ तुम में अभी भी कीड़ा— मकोड़ा है। एक समय तुम सब बंदर थे और अब भी किसी भी बंदर के बजाय मनुष्य ज्यादा बंदर है।

लेकिन तुम्हारे बीच जो सबसे बुद्धिमान है वह भी केवल पेड़— पौधों की और भूत—प्रेतों की विसंगति और संकरवर्णता भर है। लेकिन क्या मैं कह रहा हूं कि तुम भूत— प्रेत और पेड़— पौधे बन जाओ?

देखो मैं तुम्हें परममानव (सुपरमैन) सिखाता हूं।

.....ऐसा जरथुस्थ ने कहा।

जरथुस्त्र का प्रत्येक वक्तव्य इतना अर्थगर्भित है कि उसके सारे निहितार्थों को प्रगट कर पाना, उसमें छिपे सारे रहस्यों को उघाड़ पाना करीब—करीब असंभव है। और यह और भी कठिन हो जाता है क्योंकि वह किसी भी परंपरा, किसी भी रूढ़िवादिता, किसी भी अतीत के सर्वथा खिलाफ हैं। साधारणत:, हमारे वक्तव्यों की व्याख्या अतीत के परिप्रेक्ष्य में की जा सकती है। उनमें अतीत समाया होता है। वे अतीत के ही निष्कर्ष हैं।

जरथुस्त्र के साथ स्थिति ठीक उलटी है। उनके वक्तव्यों में भविष्य समाया हुआ है; और भविष्य विस्तीर्ण है, भविष्य बहु—आयामी है। अतीत के बारे में हम सुनिश्चित बातें कह सकते हैं क्योंकि वह मृत है। भविष्य के बारे में हम केवल संभाव्यताएं संभावनाएं शक्यताएं भर कह सकते हैं क्योंकि भविष्य खुला है। वह अभी घटने को है, और उसकी पूर्वघोषणा की जानी संभव नहीं — वही उसका सौंदर्य है, वही उसकी अज्ञेयता है, वही उसकी भव्यता है। भविष्य की ओर देखने पर, तुम केवल एक गहन विस्मयविमुग्धता, एक आश्चर्य, एक हैरत महसूस कर सकते हो। हर कोने—कातर में इतने सारे खजाने छिपे पड़े हैं कि जब तक वे तुम्हारे सम्मुख ही न आ जाएं उनके बारे में कुछ भी कह सकने का उपाय नहीं है। गौतम बुद्ध आसान हैं, वैसे ही जीसस हैं, वैसे ही महावीर हैं — वे सब के सब अतीत के निष्कर्ष हैं। जरथुस्त्र एक भविष्यवाणी हैं भविष्य के लिए।

इसे याद रखना चाहिए : कि वह मनुष्य के पूरे इतिहास में सवोधिक अ—पूर्वघोषणीय रहस्यदर्शी हैं। जब जरथुस्त्र जंगल के सामने के निकटतम नगर में पहुंचे, वहीं पर उन्हें बहुत सारे लोग बाजार के चौराहे पर एकत्र हुए मिल गये : क्योंकि ऐसी घोषणा की गयी थी कि कोई रस्सी पर चलने वाला नट आने वाला था।

मनुष्य इतना दुखी है कि वह अपने दुख को किसी भी प्रकार के मनोरंजन में भूल जाना चाहता है, चाहे वह ?? ही मूढ़तापूर्ण क्यों न दिखे उन लोगों को जिनके पास जरा—सी भी बुद्धि है। हमारे सारे खेल इतने

बचकाने हैं, लेकिन लाखों—लाखों लोग उनमें ऐसे उत्सुक हैं जैसे कि वे उन्हें एक नया जीवन दे जाने वाले हैं, प्राणों की बदलाहट, जैसे कि वे उनके दुख,उनकी आत्मा की अंधेरी रात दूर कर देने वाले हैं।

अगर ऐसी घोषणा हो कि रस्सी पर चलने वाला नट आ रहा है, तो हजारों लोग इकट्ठे हो जाएंगे, सिर्फ किसी व्यक्ति को तने हुए रस्से पर चलता देखने के लिए — जैसे कि इन लोगों के पास अपने जीवन में कुछ भी सार्थक करने के लिए नहीं. है; जैसे कि वे नहीं जानते कि उस समय का क्या करना जो अस्तित्व ने उन्हें दिया हुआ है।

जरथुस्त्र को यह जमात मिली। निश्चित ही ये वे लोग न थे जो किसी जरथुस्त्र और उनके संदेश की पात्रता रखते हैं, लेकिन यही एकमात्र किस्म है लोगों की पूरी पृथ्वी पर — दूसरी और कोई किस्म नहीं है।

इसलिए, इस प्रकार बोले जरथुस्त्रलोगों से.... बिना यह फिक्र किये कि क्या उनकी पात्रता है, कि क्या ' समझ भी सकेंगे कि क्या कहा जा रहा है?

वह वर्षा के बादल की तरह हैं, प्रज्ञा से इतने भारी हो रहे हैं कि वह कहीं भी बरसना चाहते हैं। वह स्वयं को खाली करना चहाते हैं। उनकी खुशी, उनके मौन, उनकी आनंदमयता के खजाने इतने भारी हो चले हैं कि कोई भी चल जएगा जो इन्हें बाट लेता हो। सवाल यह नहीं है कि वे पात्र हैं अथवा नहीं। निश्चित ही यह वह जमात न थी जो उन्हें सुने, लेकिन वर्षा के मेघ पत्थरों, चट्टानों, बंजर भूमि पर भी बरसते हैं। वर्षा का मेघ भेदभाव नहीं कर सकता; उसकी सारी समस्या यह है कि कैसे वह अपने को निर्भार करे।

पहला बहस जो उन्होंने बोला, उसमें उनका सारा दर्शन, सारा धर्म समाया हुआ है :

मैं तुम्हें परममानव सिखाता हूं।

मानव कुछ ऐसी चीज है जिस पर विजय पाना है तुमने उस पर विजय पाने के लिए क्या किया है " इतने सटीक रूप से, इतने स्पष्ट रूप से किसी ने नहीं कहा है कि मनुष्य को स्वयं का अतिक्रमण करना है, कि उसे स्वयं के पार जाना है, कि मनुष्य कुछ ऐसी चीज है जिस पर विजय पायी जानी है।

परममानव से क्या अर्थ है उनका? — ठीक वही जो मेरा अर्थ है नये मनुष्य से। मैंने एक खास कारण से 'परम' शब्द छोड दिया है। उससे गलतफहमी हो सकती है : उससे गलतफहमी हुई है। यह ऐसी धारणा देता है कि मनुष्य जो तुम्हारा स्थान लेने वाला है वह तुमसे श्रेष्ठ होगा। यह तुम्हें अपमानित करता है। और शायद यही कारण है कि परममानव आया नहीं; क्योंकि कौन हीन होना चाहता है न: यदि परममानव तुम्हें हंसी का पात्र बनानेवाला है, शायद वही मूलभूत कारण है कि क्यों मनुष्य ने न केवल स्वयं के पार जाने की चेष्टा नहीं की है बल्कि उसने किसी के भी उससे पार जाने को रोकने के लिए सब कुछ किया है।

नया मनुष्य क्या है? — एक मनुष्य जिसने अतीत से उस पर आरोपित सभी शर्तों को छोड़ दिया है; जिसने उस सारे शान को छोड़ दिया है जो उधार है; जो अपने ही सत्य की, अपनी ही अंतरात्मा की खोज में है। उसका धर्म वैयक्तिक है, कोई संगठन नहीं, कोई भीड़ नहीं, कोई सामूहिकता नहीं। उसका धर्म सामाजिक नैतिकता का पर्यायवाची नहीं है। उसका धर्म एक शब्द में कहा जा सकता है: ध्यान — अ—मन की दशा, जिसमें वह अपनी अंतरात्मा के सारतत्व का अनुभव कर सकता है, जोकि अमृत है, जोकि शाश्वत है।

जैसे ही तुम अपनी आत्मपरकता (सब्जेक्टिविटी) में प्रवेश करते हो, हजारों संभावनाओं का द्वार खुलता है। तुम पर सर्वथा नये अनुभवों की वर्षा होने लगती है, तुम उनकी स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते। तुम्हारे पास उनके लिए शब्द नहीं हैं, तुम्हारे पास उनके लिए प्रतीक नहीं हैं : हर्षोल्लास, आनंदमयता, शांति जो समझ के पार है, एक सजीव मौन — कब्रिस्तान का मौन नहीं बल्कि एक उपवन का मौन। मौन जो एक गीत भी है।

मौन जिसमें एक संगीत है, स्वररहित संगीत, और सभी दिशाओं में छलकता हुआ प्रेम, जो किसी को संबोधित नहीं है।

ठीक एक झरने की भांति तुम्हारे पास इतना अधिक है, और तुम्हारे सारे स्रोत तुम्हारे प्राणों में और— और प्रेम ला रहे हैं कि तुम्हारे पास उसे बिना किसी भेदभाव के लुटाने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है — बिना यह फिक्र लिए कि वह पात्रों तक पहुंचता है कि अपात्रों तक, कि वह संत—महात्माओं को मिलता है कि पापियों को। एक करुणा उत्पन्न होती है क्योंकि अब तुम जानते हो कि तुम सर्व के हिस्से हो — किसी भी चीज को नष्ट करना कुछ अपने में ही नष्ट करना है, किसी की भी हत्या करना अपने ही अंग की हत्या करना है।

नया मनुष्य तुमसे उच्चतर या पवित्रतर नहीं होगा, वह तुमसे समग्रत: भिन्न होगा — तुलना का कोई सवाल ही नहीं है। तुम केवल एक बीज हो।

नया मनुष्य फूल होगा।

…….ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

कायापलट की बात

प्यारे ओशो,

मैं तुम्हें प्राण के तीन कायापलट के नाम बताता हूं : कैसे प्राण ऊंट बनेगा और ऊंट शेर बनेगा और शेर अंतत: एक शिशु।

बहुत सी भारी वस्तुएं हैं प्राण के लिए मजबूत भारवाही प्राण के लिए जिसमें सम्मान और विस्मयविमुग्धता का वास है : उसकी मजबूती भारी की अभीप्सा करती है सर्वाधिक भारी की। क्या है भारी? इस प्रकार भारवाही प्राण पूछता है इस प्रकार वह ऊंट की तरह घुटने टेकता है और चाहता है भलीभांति लदना भारवाही प्राण अपने ऊपर ये सर्वाधिक भारी वस्तुएं ले लेता है : जैसे कोई लदा हुआ ऊंट रेगिस्तान में जल्दी— जल्दी चला जा रहा हो इस प्रकार वह अपने रोगिस्तान में जल्दी— जल्दी चलता लेकिन एकांततम रेगिस्तान में दूसरा कायापलट घटता है : यहां प्राण शेर बन जाता है; वह स्वतंत्रता को वश में करना और अपने ही रेगिस्तान में मालिक बनना चाहता है। यहां वह अपने परम मालिक को खोजता है : यह उसका और अपने ईश्वर का शत्रु होगा यह विजय के लिए महा दैत्य से संघर्ष करेगा।

यह महा दैत्य क्या है जिसे प्राण अब और आगे मालिक तथा ईश्वर नहीं कहना चाहता? यह महा दैत्य 'तुम्हें चाहिए' कहलाता है। लेकिन शेर का प्राण कहता है 'मैं करूंगा'

मेरे बंधुओ शेर की जरूरत क्या है प्राण में? क्यों लद्दू जानवर प्राप्त नहीं है, जो त्याग करता है और श्रद्धालु है?

नये मूल्य निर्मित करने के लिए — शेर भी असमर्थ है उसके लिऐ: लेकिन नये निर्माण हेतु अपने लिए स्वतंत्रता निर्मित करने के लिए — वह शेर की शक्ति कर सकता है।

अपने लिए स्वतंत्रता और कर्तव्य के प्रति भी एक पवित्र नहीं निर्मित करने: उसके लिए शेर की जरूरत है मेरे बंधुओ।

नये मूल्यों का अधिकार झपट लेना — वही भारवाही और श्रद्धाल प्राण के लिए सर्वाधिक भयानक कार्रवाई है।....

लेकिन मुझे बताओ मेरे बंधुओ शिशु क्या कर सकता है जिसे शेर भी नहीं कर सकता? शिकारी शेर को अभी भी शिशु बनना क्यों आवश्यक है? शिशु निदाषिता है और भुलक्कड़पन एक नया प्रारंभ एक खेल एक आत्म— चालित चक्र प्रथम गति एक पवित्र हां।

हां एक पवित्र हां की जरूरत है मेरे बंधुओ निर्माण के खेल के लिए : प्राण अब अपने ही संकल्प का संकल्प करता है दुनिया से पृथक हो चला प्राण अब अपनी ही दुनिया की विजय करता है।

मैने तुमसे प्राण के तीन कायापलट कहे : कैसे प्राण ऊंट बना और ऊंट शेर बना और शेर अंतत: एक शिशु।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र विनम्रता के शिक्षक नहीं हैं, क्योंकि विनम्रता की सारी शिक्षाएं असफल रही हैं। वह मनुष्य की गरिमा की शिक्षा देते हैं। वह मनुष्य के गौरव की शिक्षा देते हैं और वह शक्तिशाली मानव की सिखावन देते हैं, कमजोर, गरीब और निरीह मानव की नहीं। उन शिक्षाओं ने मानवता को ऊंट के स्तर पर बनाए रखने में मदद की है। जरथुस्त्र चाहते हैं कि तुम कायापलट से गुजरो। ऊंट को एक शेर में परिवर्तित होना है, और उन्होंने सुंदर प्रतीक चुने हैं, बहुत अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण।

ऊंट संभवत: पूरे अस्तित्व में सर्वाधिक कुरूप जानवर है। तुम उसकी कुरूपता में कुछ और जोड़ नहीं सकते। तुम और अधिक क्या जोड़ सकते हो? वह ऐसा टेढ़ा—मेढ़ा है। ऐसा लगता है जैसे कि वह सीधे नर्क से चला आ रहा है।

निम्नतम चेतना के रूप में ऊंट को चुनना बिलकुल ठीक है। मनुष्य में निम्नतम चेतना अंग— भंग है; वह चाहती है कि गुलाम बनायी जाए। वह स्वतंत्रता से भयभीत है क्योंकि वह उत्तरदायित्व से भयभीत है। वह तैयार है कि उस पर जितना बोझ संभव हो लाद दिया जाए। लादे जाने में वह प्रसन्न होता है; ऐसे ही निम्नतम चेतना प्रसन्न होती है — उधार ज्ञान से लादे जाने में। कोई भी गरिमाशील व्यक्ति स्वयं को उधार ज्ञान से लादे जाने की अनुमति नहीं देगा। वह उस नैतिकता से लदी हुई है जो मृतकों द्वारा जीवितों को हस्तांतरित की गयी है; यह जीवितों पर मृतकों का हावी होना है। कोई भी गरिमा वाला व्यक्ति अपने ऊपर मृतकों को शासन करने की इजाजत नहीं देगा।

मनुष्य की निम्नतम चेतना अज्ञानी और अचेतन, असजग, गहन निद्रा में रही आती है — क्योंकि इसे विश्वास करने का, श्रद्धा रखने का, कभी संदेह न करने का, कभी भी नहीं न कहने का जहर लगातार दिया जा रहा है। और कोई मनुष्य जो ना नहीं कह सकता उसने अपनी गरिमा खो दी। और जो मनुष्य ना नहीं कह सकता, उसके हौ का कोई अर्थ नहीं है। क्या तुम इसमें निहित अर्थ को देखते हो? हा का अर्थ केवल उसके बाद ही है यदि तुम ना कहने में समर्थ हो। यदि तुम ना कहने में समर्थ नहीं हो, तो तुम्हारा ही नपुंसक है, उसका कुछ अर्थ नहीं।

इसीलिए ऊंट को एक सुंदर शेर के रूप में बदलना ही होता है, जो मर जाने को तैयार है लेकिन गुलाम बनाए जाने को नहीं। तुम एक शेर को लद्दू जानवर नहीं बना सकते। शेर के पास एक गरिमा होती है जिसका दावा कोई भी दूसरा जानवर नहीं कर सकता; उसके पास कोई खजाने नहीं हैं, कोई राज्य नहीं है, उसकी गरिमा बस उसके होने के ढंग में है — निर्भीक, अज्ञात से निर्भय, मौत की कीमत पर भी ना कहने को तैयार।

ना कहने की यह तैयारी, यह विद्रोहीपन उसे उस समस्त धूल से स्वच्छ कर देता है जो ऊंट छोड़ गया है — सभी निशान व पदचिह्न जो ऊंट छोड़ गया है।

और केवल शेर के बाद ही — महान ना के बाद ही — एक बच्चे की पवित्र ही संभव है।

बच्चा हां इसलिए नहीं कहता है क्योंकि वह भयभीत है। वह हां कहता है क्योंकि वह प्रेम करता है। क्योंकि वह भरोसा करता है। हां कहता है क्योंकि वि निदो्रष हे; उसके खायाल में भी आ सकता कि उसे धोखा दिया जा सकता है। उसकी ही एक विशाल भरोसा है। वह भयवश नहीं है, वह गहन निर्दोषता के कारण है। केवल यह ही उसे चेतना के परम शिखरों पर ले जा सकती है, जिसे मैं भगवत्ता कहता हूं।

बहुत सी भारी वस्तुएं हैं प्राण के लिए मजबूत, भारवाही प्राण के लिए जिसमें सम्मान और विस्मयविमुग्धता का वास है : उसकी मजबूती भारी की अभीप्सा करती है, सर्वाधिक भारी की।

क्या है भारी? इस प्रकार भारवाही प्राण पूछता है इस प्रकार वह ऊंट की तरह घुटने टेकता है और चाहता है भलीभांति लदना। ऊंट के लिए निम्नतम प्रकार की चेतना के लिए एक अंतर्निहित कामना है झुकने की और जितना ज्यादा संभव हो उतने बोझ से लदने की।

सबसे भारी चीज क्या है बहादुरो? इस प्रकार भारवाही प्राण स्यता है: कि उसे मैं अपने ऊपर ले सकूं और अपनी शक्ति का आनंद मना सकूं लेकिन मजबूत मनुष्य के लिए तुम्हारे भीतर के शेर के लिए सबसे भारी एक अलग ही अर्थ और एक अलग ही आयाम लेता है — कि उसे मैं अपने ऊपर ले सकूं और अपनी शक्ति का

आनंद मना सकूं। उसका एकमात्र आनंद उसकी शक्ति है। ऊंट का आनंद केवल आज्ञाकारी होने में, सेवा करने में, गुलाम होने में है।

भारवाही प्राण अपने ऊपर ये सर्वाधिक भारी वस्तुएं ले लेता है : जैसे कोई लदा हुआ ऊंट रेगिस्तान में जल्दी— जल्दी चला जा रहा हो, इस प्रकार वह अपने रेगिस्तान में जल्दी— जल्दी चलता है।

लेकिन एकांततम रेगिस्तान में दूसरा कायापलट घटता है : यहां प्राण शेर बन जाता है। ऐसे क्षण होते हैं — ऐसे लोगों के जीवन में भी जो अंधकार और मूर्च्छा में टटोल रहे होते हैं — जब बिजली की कौंध की तरह कोई घटना उन्हें जगा देती है और ऊंट ऊंट नहीं रह जाता है — एक कायापलट, एक रूपांतरण घट जाता है।

ऊंट बदल चुका है शेर में। कायापलट घटित हो चुका है। कोई भी चीज इसका सूत्रपात कर सकती है, लेकिन व्यक्ति के पास बुद्धिमत्ता चाहिए।

यहां वह अपने परम मालिक को खोजता है : यह उसका और अपने ईश्वर का शत्रु होगा....

अब उसकी खोज अपनी परम भवगत्ता के लिए है। कोई अन्य ईश्वर उसके लिए शत्रु होगा। वह किसी अन्य ईश्वर के सामने झुकने वाला नहीं है, वह अपना मालिक आप होने जा रहा है।

यही शेर का प्राण है — निश्चित ही परम स्वतंत्रता का अर्थ होता है ईश्वर से स्वतंत्रता, तथाकथित ईश्वरीय आदेशों से स्वतंत्रता, धर्मशास्त्रों से स्वतंत्रता, दूसरों द्वारा तुम पर आरोपित किसी भी प्रकार की नैतिकता से स्वतंत्रता।

निश्चित ही सद्गुण उत्पन्न होगा, लेकिन वह कुछ ऐसी बात होगा जो तुम्हारी अपनी ही नीरव, नन्ही आवाज से उठ रहा होगा। तुम्हारी स्वतंत्रता उत्तरदायित्व लाएगी, लेकिन वह उत्तरदायित्व किसी अन्य द्वारा तुम पर थोपा नहीं गया होगा।.... यह विजय के लिए महा दैत्य से संघर्ष करेगा

यह महा दैत्य क्या है जिसे प्राण अब और आगे मालिक तथा ईश्वर नहीं कहना चाहता? यह महा दैत्य 'तुम्हें चाहिए' कहलाता है। लेकिन शेर का प्राण कहता है 'मैं करूंगा'!

अब किसी अन्य द्वारा उसे आज्ञा दिये जाने का सवाल ही नहीं है। ईश्वर भी अब कोई ऐसा न रहा जिसकी आज्ञा का उसे पालन करना है।

जरथुस्त्र का कहीं एक महान कथन है : "ईश्वर मर चुका है और मनुष्य पहली बार स्वतंत्र है। " ईश्वर के रहते, मनुष्य कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। वह राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हो सकता है, वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकता है, वह सामाजिक रूप से स्वतंत्र हो सकता है, लेकिन आध्यात्मिक रूप से वह गुलाम ही बना रहेगा और वह एक कठपुतली भर बना रहेगा।

यह अवधारणा मात्र कि ईश्वर ने मनुष्य को बनाया स्वतंत्रता की सारी संभावनाओं को नष्ट कर देती है। यदि उसने तुम्हें बनाया है, वह तुम्हें मिटा सकता है। उसने तुम्हें जोड़ा है, वह तुम्हें अलग—अलग कर सकता है। यदि वह सर्जक है, तो उसके पास विध्वंसक होने की समस्त संभावनाएं व क्षमताएं हैं। तुम उसे रोक नहीं सकते। तुम उसे तुम्हें बनाने से नहीं रोक सके, कैसे तुम उसे तुम्हें नष्ट करने से रोक सकोगे? यही कारण है कि गौतम बुद्ध, महावीर, जरथुस्त्र, दुनिया के इन तीन महान द्रष्टाओं ने ईश्वर की सत्ता से इनकार कर दिया है।

तुम चकित होओगे। ईश्वर को इनकार करने का उनका तर्क अनोखा तर्क है, लेकिन बड़ा अर्थपूर्ण। वे कहते हैं, 'जब तक ईश्वर है, मनुष्य के सम्पूर्ण स्वतंत्र होने की संभावना नहीं रह जाती।'

मनुष्य की स्वतंत्रता, उसकी आध्यात्मिक गरिमा ईश्वर के न होने पर निर्भर है। यदि ईश्वर है, तो मनुष्य ऊंट ही बना रहेगा, मृत मूर्तियों की पूजा करता हुआ, किसी ऐसे की पूजा करता हुआ जिसे उसने जाना नहीं है, कोई ऐसा जिसे कभी भी किसी ने नहीं जाना है — बस एक शुद्ध परिकल्पना। तुम एक परिकल्पना की पूजा कर

रहे हो। तुम्हारे सारे मंदिर और गिरजाघर और सिनागॉग और कुछ नहीं बस एक ऐसी परिकल्पना के सम्मान में उठाए गये स्मारक हैं जो नितात असिद्ध है, बिना किसी प्रमाण की है।

संसार को निर्मित करने वाले एक व्यक्ति के रूप में ईश्वर के लिए कोई तर्क नहीं है।

जरथुस्त्र बड़ी कठोर भाषा का उपयोग करते हैं। वह कठोर भाषा वाले व्यक्ति हैं। समस्त सच्चे सदा ही कठोर भाषा वाले लोग रहे हैं। ईश्वर को जरथुस्त्र "महा दैत्य (ग्रेट ड्रैगन) " कहते हैं।

यह महा दैत्य क्या है जिसे प्राण अब और आगे मालिक तथा ईश्वर नहीं कहना चाहता? यह महा दैत्य 'तुम्हें चाहिए' कहलाता है समस्त धार्मिक ग्रंथ इन दो शब्दों में समाए हुए हैं. 'तुम्हें चाहिए। ' तुम्हें यह करना चाहिए और यह नहीं करना चाहिए। तुम यह चुनने के लिए स्वतंत्र नहीं हो कि सही क्या है। यह आनेवाले समस्त भविष्य के लिए उन लोगों द्वारा तय किया जा चुका है जो हजारों वर्षों से मृत हैं कि सही क्या है और गलत क्या है।

व्यक्ति जिसके पास विद्रोही प्राण है — और विद्रोही प्राण के बिना कायापलट नहीं घट सकता — उसे कहना ही है : नहीं, मैं करूंगा! मैं वही करूंगा जो मेरी चेतना समझती है कि ठीक है, और मैं वह न करूंगा जो मेरी चेतना को लगता है कि गलत है। मेरी अपनी अंतरात्मा के अलावा मेरे लिए अन्य कोई पथप्रदर्शक नहीं है। अपनी ही आखों के अलावा मैं किसी अन्य की आखों में विश्वास करने वाला नहीं हूं। मैं अंधा नहीं हूं और मैं मूर्ख भी नहीं हूं। मैं देख सकता है। मैं सोच सकता हूं। मैं ध्यान कर सकता हूं और मैं यह पता लगा सकता हूं कि क्या सही है और क्या गलत है। मेरी नैतिकता बस मेरे चैतन्य की छाया होगी।

सारे मूल्य पहले ही निर्मित किये जा चुके है: और समस्त निर्मित मूल्य — मुझमें हैं। सच में, आगे और 'मैं करूंगा' नहीं होना चाहिए। इस प्रकार महा दैत्य बोलता है।

समस्त धर्म, समस्त धर्म—प्रमुख महा दैत्य में सम्मिलित हैं। वे सब के सब कहते हैं, समस्त मूल्य निर्मित हो चुके हैं, अब तुम्हें और तय करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हर चीज तुम्हारे लिए तुमसे अधिक बुद्धिमान लोगों द्वारा तय की जा चुकी है। 'मैं करूंगा' की कोई आवश्यकता नहीं है।

लेकिन 'मैं करूंगा' के बगैर स्वतंत्रता नहीं है। तुम एक ऊंट ही रह जाते हो, और वही सारे निहित स्वार्थ — धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक — चाहते है कि तुम होओ; बस ऊंट; कुरूप गरिमारहित, महिमारहित, आत्मारहित, बस सेवा करने को तैयार, गुलाम होने को बहुत तत्पर। स्वतंत्रता का खयाल मात्र उनमें पैदा नहीं हुआ है। और ये दार्शनिक वक्तव्य नहीं हैं। ये सत्य हैं।

क्या स्वतंत्रता का खयाल कभी भी हिंदुओं को, ईसाइयों को, अथवा बौद्धों को, अथवा मुसलमानों को हुआ है? नहीं। वे सब के सब एक स्वर से कहते हैं : 'सब कुछ पहले से ही तय किया जा चुका है। हमें तो बस उसका अनुसरण करना है। और जो अनुसरण करते हैं वे पुण्यात्मा हैं, जो अनुसरण नहीं करते वे अनंत काल के लिए नरकाग्नि में पड़ेंगे। '

मेरे बंधुओ शेर की जरूरत क्या है प्राण में? क्यों लद्दू जानवर पर्याप्त नहीं है जो त्याग करता है और श्रद्धालु है?

जरथुस्त्र कह रहे हैं कि तुम्हारे तथाकथित संत कुछ भी नहीं हैं सिवाय एक पूर्ण ऊंट के। वे मृत परंपराओं को, मृत धारणाओं को, मृत धर्मग्रंथों को, मृत ईश्वरों को हौ कह चुके हैं, और क्योंकि वे पूर्ण ऊंट हैं, अपूर्ण ऊंट उनकी पूजा करते हैं।

स्वभावत:।

नये मूल्य निर्मित करने के लिए — शेर भी असमर्थ है उसके लिए; लेकिन नये निर्माण हेतु अपने लिए स्वतंत्रता निर्मित करने के लिए — वह शेर की शक्ति कर सकती है। शेर स्वयं नये मूल्य निर्मित नहीं कर सकता लेकिन वह स्वतंत्रता निर्मित कर सकता है, अवसर, जिसमें नये मूल्य निर्मित किये जा सकते है।

और, क्या हैं नये मूल्य?

उदाहरण के लिए नया मनुष्य मनुष्य—मनुष्य के बीच किसी भेदभाव में विश्वास नहीं रख सकता। वह एक नया मूल्य होगा : समस्त मनुष्य एक हैं, अपने रंग के बावजूद, अपनी जाति के बावजूद, अपने भूगोल के बावजूद, अपने इतिहास के बावजूद। बस मनुष्य होना भर पर्याप्त है।

नया मूल्य होना चाहिए : राष्ट्रों की कतई जरूरत नहीं है क्योंकि वे ही सब युद्धों के कारण रहे हैं।

संगठित धर्म नहीं होने चाहिए व्योंकि वे निजी खोज से वंचित करते रहे हैं। वे लोगों को तैयार का सत्य दिये ही चले जाते हैं — और सत्य खिलौना नहीं है, तुम उसे बना—बनाया नहीं प्राप्त कर सकते। कोई कारखाना नहीं है जहा उसका उत्पादन किया जाता हो और कोई बाजार नहीं है जहां वह उपलब्ध हो। तुम्हें उसको अपने ही हृदय की गहनतम गहराइयों में खोजना पड़ेगा। और तुम्हारे अलावा अन्य कोई वहा जा नहीं सकता।

धर्म निजी घटना है — यह एक नया मूल्य है।

राष्ट्र कुरूपताएं हैं, धार्मिक संगठन अधार्मिक हैं, गिरजाघर और मंदिर और सिनागॉग और गुरुद्वारे हास्यास्पद बातें हैं। सारा अस्तित्व पवित्र है। सारा अस्तित्व ही मंदिर है। और जहां कहीं भी तुम मौनपूर्वक, ध्यानपूर्वक, प्रेमपूर्वक बैठते हो वहीं तुम अपने आसपास चेतना का एक मंदिर निर्मित करते हो। पूजा करने के लिए तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि तुम्हारे चैतन्य से ऊंचा कोई नहीं है जिसके प्रति तुम किसी पूजा के आभारी हो।

अपने लिए स्वतंत्रता और कर्तव्य के प्रति भी एक पवित्र नहीं निर्मित करने : उसके लिए शेर की जरूरत है मेरे बंधुओ

तुम्हें लगातार कहा गया है कि कर्तव्य एक महान मूल्य है। दरअसल, यह एक चार अक्षरों वाला (अश्लील) गंदा शब्द है। यदि तुम अपनी पत्नी को प्रेम करते हो क्योंकि यह तुम्हारा कर्तव्य है, तो तुम अपनी पत्नी को प्रेम नहीं करते।

यदि तुम अपनी मा को प्रेम नहीं करते। कर्तव्य उस सबको नष्ट कर देता है जो भी मनुष्य में सुंदर है — प्रेम करुणा, उल्लास। लोग हंसते तक इसलिए हैं क्योंकि यह उनका कर्तव्य है।

जरथुस्त्र सही हैं:

अपने लिए स्वतंत्रता और कर्तव्य के प्रति भी एक पवित्र नहीं निर्मित करने : उसके लिए शेर की जरूरत है मेरे बंधुओ। नये मूल्यों का अधिकार झपट लेना — वही भारवाही और श्रद्धालु प्राण के लिए सर्वाधिक भयानक कार्रवाई है।

कभी उसने इस 'तुम्हें चाहिए' को अपनी पवित्रतम वस्तु की तरह प्रेम किया था : अब उसे पवित्रतम में भी भ्रम और सनक खोजना है ताकि वह अपने प्रेम में से स्वतंत्रता चुरा ले : इस चोरी के लिए शेर की जरूरत है।

लेकिन मुझे बताओ मेरे बंधुओ शिशु क्या कर सकता है जिसे शेर भी नहीं कर सकता? शिकारी शेर को अभी भी शिशु बनना क्यों आवश्यक है?

शिशु निदाषिता है और भुलक्कड़पन एक नया प्रारंभ एक खेल एक आत्म— चालित चक्र प्रथम गति एक पवित्र हां।

हां: एक पवित्र हां की जरूरत है मेरे बंधुओ निर्माण के खेल के लिए : प्राण अब अपने ही सं कल्प का संकल्प करता है दुनिया से पृथक हो चला प्राण अब अपनी ही दुनिया की विजय करता है।

मैने तुमसे प्राण के तीन कायापलट कहे : कैसे प्राण ऊंट बना और ऊंट शेर बना और शेर अंतत: एक शिशु।

जहां तक चेतना का संबंध है, शिशु विकास का सर्वोच्च शिखर है। लेकिन शिशु केवल एक प्रतीक है; इसका यह अर्थ नहीं है कि बच्चे अस्तित्व की सर्वोच्च दशा हैं। शिशु का उपयोग प्रतीकात्मक रूप में किया गया है क्योंकि वह ज्ञानी नहीं होता। वह निर्दोष है, और क्योंकि वह निर्दोष है इसलिए विस्मयबोध से भरा हुआ है, और क्योंकि उसकी आखें विस्मयबोध से भरी हुई हैं उसकी आत्मा रहस्यमय की अभीप्सा करती है। शिशु एक प्रारंभ है? एक खेल; और जीवन सदा एक प्रारंभ ही होना चाहिए और सदा ही एक खिलवाड़; सदा ही एक हास्य और गंभीरता कभी भी नहीं।

... प्रथम गति एक पवित्र हां। खं एक पवित्र हां की जरूरत है.. लेकिन पवित्र हा केवल पवित्र ना के बाद ही आ सकती है। ऊंट भी ही कहता है लेकिन वह एक गुलाम की हौ है। वह ना कह नहीं सकता। उसकी हा निरर्थक है।

शेर ना कहता है, लेकिन वह हा नहीं कह सकता। वह उसके स्वभाव के ही विपरीत है। वह उसे ऊंट की याद दिलाता है। किसी भाति उसने स्वयं को ऊंट से मुक्त किया है और हौ कहना स्वभावत: उसे फिर यह याद दिलाता है — ऊंट के हा और उसकी गुलामी की। नहीं, ऊंट में छिपा जानवर ना कहने में असमर्थ है, शेर में वह ना: कहने में समर्थ है लेकिन हां कहने में असमर्थ।

शिशु को न कुछ ऊंट का पता, न कुछ शेर का पता। यही कारण है कि जरथुस्त्र कहते हैं : "शिशु निदाषिता और भुलक्कड़पन है... " उसकी ही शुद्ध है और ना कहने की भी उसकी पूरी सामर्थ्य है। यदि वह कहता नहीं, तो कारण इतना ही है कि वह भरोसा करता है, नहीं कि वह भयभीत है; भयवश नहीं बल्कि भरोसावश। और जब ही भरोसे से निकलती है, तो वह महानतम कायापलट है, महानतम रूपातरण है जिसकी कोई उम्मीद कर सकता है।

ये तीनों प्रतीक सुंदर हैं स्मरण के लिए। स्मरण रखो कि तुम वहीं हो जहा ऊंट है, और स्मरण रखो कि तुम्हें शेर होने की दिशा में गति करना है, और स्मरण रखो कि तुम्हें शेर पर रुक नहीं जाना है। तुम्हें और भी आगे चलना है, एक नये प्रारंभ तक, निदाषिता तक और पवित्र हा तक; एक शिशु तक।

सच्चा संत फिर से शिशु हो जाता है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा

शरीर का तिरस्कार करने वालों की बातें

प्यारे ओशो,

तुम कहते हो मैं तुम्हें गर्व है इस शब्द पर। लेकिन उससे भी बढ़कर महान — यद्यपि तुम इस बात पर यकीन नहीं करोगे —तुम्हारा शरीर है और उसकी महत बुद्धिमत्ता जो 'मैं कहता नहीं बल्कि 'मैं' का कृत्य करता है।

इंद्रिय जो महसूस करती है मन को जो बोध होता है वह कभी भी अपने आप में लक्ष्य नहीं है। लेकिन इंद्रिय और मन तुम्हें फुसलाना चाहेंगे कि वे ही सब बातों के लक्ष्य हैं : वे इतने ही निरर्थक हैं। इंद्रिय और मन उपकरण और खिलौने हैं : उनके भी पीछे प्रशांत पड़ी आत्मा है। आत्मा इंद्रिय की आखों से खोज करती है वह मन के कानों से सुनती भी है।

आत्मा सदा ही सुन रही व खोज रही होती है : वह तुलना करती है वश में करती है विजय करती है नष्ट करती है। वह शासन करती है और अहंकार की भी शासक है।

तुम्हारे विचारों और भावों के पीछे मेरे बंधुओ एक महान शक्तिशाली नियंता है? एक अज्ञात संत — वह आत्मा कहलाता है। वह तुम्हारे शरीर 'में रहता है वह तुम्हारा शरीर है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

दुनिया के महान शिक्षकों के बीच जरथुस्त्र अकेले हैं जो शरीर के खिलाफ नहीं हैं, बुद्धि' शरीर के पक्ष में '। सारे अन्य शिक्षक शरीर के खिलाफ हैं और उनका तर्क यह है कि शरीर बाधा है आत्मा के विकास में, शरीर व्यवधान है तुम्हारे और दिव्य के बीच। यह निरी मूर्खता है।

जरथुस्त्र संभवत: मनुष्य द्वारा जाने गये सर्वाधिक स्वस्थचित्त शिक्षक हैं। किसी प्रकार की मूर्खता से उनका कुछ संबंध न बनेगा; उनकी दृष्टि व्यावहारिक व वैज्ञानिक है। और शरीर की शिक्षा देनेवाले वह प्रथम हैं, मानवता को यह शिक्षा देनेवाले कि जब तक तुम शरीर को प्रेम नहीं करते, और जब तक तुम शरीर को समझते नहीं, तुम्हारा आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता। शरीर तुम्हारी आत्मा का मंदिर है।

वह तूम्हारे सारे जीवन तुम्हारी सेवा करता है बिना बदले में कुछ मांगे। और उसकी निंदा करना घृणित बात है, क्योंकि शरीर के ये सारे निंदक शरीर से ही पैदा हुए हैं। वे शरीर की निंदा भी शरीर के जरीए ही कर रहे है। वे अपना जीवन शरीर के जरीए ही जी रहे हैं, और फिर भी मनुष्यजाति ने एक बहुत ही खतरनाक विचारधारा स्वीकृत कर ली है : शरीर और आत्मा के बीच विभाजन — न केवल विभाजन बल्कि उनकी विपरीत ध्रुवीयता, कि या तो तुम्हे शरीर चुनना है या आत्मा चुनना है। यह एक और बड़े चिंतन का हिस्सा है. पदार्थ और चेतना। शरीर पदार्थ है और आत्मा चेतना है। और ये सारे शरीर—निंदक, शरीर—तिरस्कर्ता एक ही आदर्श पर एकाग्र हो गये हैं, कि जगत दो चीजों झे मिलकर बना है : पदार्थ और चेतना।

लेकिन अब हम जानते हैं, न केवल तर्क से, न केवल अनुभव से, बल्कि वैज्ञानिक प्रमाण से भी, कि केवल एक ही सत्ता है; चाहे तुम उसे पदार्थ कहो अथवा चेतना कहो, भेद नहीं पड़ता। शरीर और आत्मा, पदार्थ और ऊर्जा सर्वथा एक ही हैं। अस्तित्व द्वैत नहीं है; वह एक सावयव इकाई (आर्गनिक होल) है।

लेकिन शरीर की निंदा करने के पीछे मूलभूत कारण था : वह उनका आत्मा की प्रशंसा करने का ढंग था। शरीर और पदार्थ की निंदा किये बगैर वह थोड़ा कठिन हुआ होता। शरीर की निंदा करो — वह तुम्हें आत्मा की प्रशंसा करने के लिए अच्छी पृष्ठभूइम प्रदान करता है। संसार की निंदा करो, और तुम ईश्वर की प्रशंसा कर सकते हो। लेकिन उन्होंने एक सुस्पष्ट तथ्य को कभी नहीं देखा, कि वे स्वयं ही उपदेश दे रहे हैं कि ईश्वर ने

संसार बनाया। यदि ईश्वर ने संसार बनाया, तब संसार ईश्वर के ही विस्तार, उसकी ही सृजनात्मकता के अलावा कुछ भी नहीं है; यह उसका शत्रु नहीं हो सकता।

शरीर तुम्हारे पूरे जीवन का स्रोत है। अब तुम इसका क्या करते हो, वह तुम पर निर्भर है। तुम एक पापी हो सकते हो, तुम एक पुण्यात्मा हो सकते हो। शरीर न तुम्हें पापी होने के लिए फुसलाता है, न पुण्यात्मा होने का प्रोत्साहन देता है। जो कोई भी तुम हो, पापी अथवा पुण्यात्मा, शरीर अपना कार्य जारी रखता है। उसका अपना ही कार्य इतना विस्तृत है, उसके पास किसी और बात के लिए समय नहीं है।

जरथुस्त्र के भीतर के लिए अपरिसीम सम्मान है, क्योंकि वह तुम्हारी आत्मा की शुरूआत है। शरीर सुक्ष्म आत्मा तक जा सकते हो।

लेकिन यदि शरीर निंदित है, त्यागा हुआ, सताया हुआ, जो कि शताब्दियों से किया जाता है। तब तुम अपनी आत्मा तक नहीं जा सकते। तुम अनावश्यक रूप से शरीर के साथ एक लड़ाई में अंतर्ग्रस्त हो जाते है। उलझ जाते हो। इस प्रतिरोध में तुम्हारी पूरी ऊर्जा जष्ट हो जाती है। शरीर प्रेमपूर्वक, धन्यवाद पूर्वक, अनुग्रहपूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए, और वह तुम्हारी आत्मा तक एक सोपान बन सकता है। वास्तव में वही प्रकृति का इरादा है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जीवन और प्रेम की बात

प्यारे ओशो,

हमारे और गुलाब कली के, बीच समान क्या है जो कंपती है क्योंकि ओस की एक बूंद उस पर पड़ी हुई है?

यह सच है : हम जीवन को प्रेम करते हैं इसलिए नहीं क्योंकि हम जीने के आदी हो गये हैं बल्कि इसलिए क्योकि हम प्रेम करने के आदी हो गये हैं प्रेम में हमेशा एक प्रकार का पागलपन है। लेकिन उस पागलपन में हमेशा एक प्रकार की पद्धति भी है और मेरे देखेभी जो जीवन को प्रेम करते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि तितलियां और पानी के बबूले और मनुष्यों में जो कुछ भी उनके जैसा है आनंद के बारे में सर्वाधिक जानते हैं। इन हल्की— फुल्की नासमझ सुकुमार भावनामय नन्हीं आत्माओं को इधर— उधर पर फड़फडाते देखना — जरथुस्त्र को इतना प्रभावित करता है कि आंसू आ जाते हैं और गीत फूट पड़ते है।

मैं केवल ऐसे ईश्वर में यकीन कर सकता हूं जिसने समझ लिया हो कि नाचना कैसे।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

वह पूछ रहे हैं, हमारे और गुलाब की कली के बीच समान क्या है जो कंपती है क्योंकि ओस की एक बूंद उस पर पड़ी हुई है?

जीवन के लिए कोई कारण नहीं है।

यही है जो गुलाब की कली के साथ समान है। गौतम बुद्ध यह नहीं कहेंगे; न ही महावीर, न जीसस, न मोजेज कतेंगे। वे सब के सब तुम्हें कारण देंगे, लक्ष्य, उद्देश्य; क्योंकि वही तुम्हारे मन को अच्छा लगता है। यह सच है : हम जीवन को प्रेम करते हैं इसलिए नहीं क्योकि हम जीने के आदी हो गये हैं — एक आदत की तरह नहीं — बल्कि इसलिए क्योकि हम प्रेम करने के आदी हो गये हैं।

जोर स्मरण रखना है : हम जीवन को प्रेम करते हैं इसलिए नहीं क्योकि हम जीने के आदी हो गये है। तुम नहीं कह सकते कि 'मैं सत्तर वर्षों से जीवित रहा हूं अब यह एक पुरानी आदत बन गयी है, यही कारण है कि मैं जीए चला जाता हूं यही कारण hऐ कि मैं जीते रहना चाहता हूं क्योंकि पुरानी आदत को छोड़ना बहुत कठिन है। '

नहीं, जीवन आदत नहीं है। तुम जीवन को प्रेम करते हो, इसलिए नहीं क्योंकि तुम जीने के अभ्यस्त हो गये हो, बल्कि इसलिए क्योंकि हम प्रेम करने के आदी हो गये हैं।

जीवन के बिना कोई प्रेम न होगा। जीवन एक अवसर है : भूमि, जिसमें प्रेम के गुलाब खिलते हैं। प्रेम स्वयं में बहुमूल्य है; उसका कोई उद्देश्य नहीं होता, उसका कोई अर्थ नहीं होता। उसकी अपरिसीम महत्ता है; उसमें महान हर्षोल्लास है; उसकी अपनी ही अलमस्ती है — लेकिन वे अर्थ नहीं हैं। प्रेम कोई व्यापार नहीं है जिसमें उद्देश्यों, लक्ष्यों का कोई महत्व हो।

प्रेम में हमेशा एक प्रकार का पागलपन है। और वह पागलपन क्या है? पागलपन यह है कि तुम सिद्ध नहीं कर सकते कि क्यों तुम प्रेम करते हो? तुम अपने प्रेम के लिए कोई तर्कपूर्ण जवाब नहीं दे सकते।

तुम कह सकते हो कि तुम अमुक व्यापार करते हो क्योंकि तुम्हें रुपये—पैसों की जरूरत है; रुपये—पैसों की जरूरत है क्योंकि तुम्हें एक मकान की जरूरत है; मकान की जरूरत है क्योंकि मकान के बिना तुम रहोगे कहौ? तुम्हारे सामान्य जीवन में, हर चीज का कोई उद्देश्य है; लेकिन प्रेम — तुम कोई कारण नहीं दे सकते

उसके लिए। तुम बस इतना ही कह सकते हो, 'मुझे कुछ पता नहीं। इतना ही मैं जानता हूं कि प्रेम करना अपने भीतर सर्वाधिक सुंदर मनोभूमि की अनुभूति करना है। ' लेकिन यह कोई ' उद्देश्य न हुआ। वह मनोभूमि मस्तिष्कगत नहीं है। वह मनोभूमि किसी उपयोगी वस्तु में नहीं परिवर्तित की जा सकती। वह मनोभूमि फिर एक बार गुलाब की कली है, जिसके ऊपर मोती की तरह चमकता उपकण है। और प्रातकालीन मंद समीर में और सूरज के प्रकाश में गुलाब की कली नाच रही है।

प्रेम तुम्हारे जीवन का नृत्य है।

इसलिए जो लोग नहीं जानते कि प्रेम क्या है वे जीवन के नृत्य से ही चूक गये हैं; वे गुलाब उगाने के अवसर से ही चूक गये हैं। यही कारण है कि सांसारिक मन को, हिसाबी—किताबी मन को, संगणकीय मन को, गणितज्ञ को, अर्थशास्त्री को, राजनीतिक को प्रेम एक प्रकार का पागलपन प्रतीत होता है।

प्रेम में हमेशा एक प्रकार का पागलपन है। लेकिन उस पागलपन में हमेशा एक प्रकार की पद्धति भी है।

यह वक्तव्य इतना सुंदर है, इतना विलक्षण। जिन्होंने कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया है उन्हें प्रेम पागलपन जैसा प्रतीत होता है। लेकिन उनके लिए जो प्रेम को जानते हैं, प्रेम ही एकमात्र स्वस्थचित्तता है। प्रेम के बिना, कोई व्यक्ति अमीर हो सकता है, स्वस्थ हो सकता है, सुप्रसिद्ध हो सकता है, लेकिन वह स्वस्थचित्त नहीं हो सकता क्योंकि उसे अंतरस्थ मूल्यों का कोई पता नहीं है। स्वस्थचित्तता कुछ भी नहीं केवल तुम्हारे हृदय में खिल रहे गुलाबों की सुवास है। जरथुस्त्र के पास महान अंतर्दृष्टि है जब वह कहते हैं, 'लेकिन यह पागलपन, प्रेम के रूप में जाना जानेवाला पागलपन, सदा ही एक प्रकार की पद्धति लिए हुए है; यह सामान्य पागलपन नहीं है। '

प्रेमियों को मनस्विकित्सकीय उपचार की जरूरत नहीं होती। प्रेम का अपना ही ढंग है। दरअसल, प्रेम जीवन में महानतम स्वस्थकारी शक्ति है। जो इससे चूक गये हैं वे रिक्त रह गये हैं, अ—कृतकृत्य। सामान्य पागलपन में कोई पद्धति नहीं होती, लेकिन प्रेम कहलानेवाले पागलपन में एक प्रकार की पद्धति होती है। और वह पद्धति क्या है? वह तुम्हें हर्षोल्लसित करता है, वह तुम्हारे जीवन को एक गीत बना देता है, वह तुममें एक महा भद्रता लाता है।

क्या तुमने लोगों को देखा है? जब कोई व्यक्ति प्रेम में पड़ता है तो उसे इसकी घोषणा करने की जरूरत नहीं होती। तुम देख सकते हो कि उसकी आखों में एक नयी गहराई उतर आयी है। तुम उसके चेहरे में एक नया प्रसाद, एक नया सौंदर्य देख सकते हो। तुम उसकी चाल में एक सूक्ष्म नृत्य देख सकते हो। वह वही व्यक्ति है, लेकिन फिर भी वह वही व्यक्ति नहीं है। प्रेम ने उसके जीवन में प्रवेश किया है, उसके प्राणों में बसंत आ गया है, उसकी आत्मा में फूल खिल गये हैं।

केवल ये ही तीन चीजें हैं जो तुम्हारे जीवन की प्रमुख घटनाएं हो सकती हैं : जन्म, प्रेम और मृत्यु। जन्म पर तुम्हारा नियंत्रण नहीं है — तुम्हारा अपना ही जन्म; कोई तुमसे पूछता नहीं, बस एक दिन तुम अपने आपको पैदा हो गया पाते हो। और मृत्यु के साथ भी वही घटता है — वह भी तुमसे पूछती नहीं : 'क्या तुम तैयार हो? कल मैं आ रही हूं। ' कोई पूर्व सूचना नहीं; बस अचानक वह आती है और तुम मृत हो।

केवल प्रेम ही इन दोनों के बीच खड़ी स्वतंत्रता है। उसे भी समाज ने तुमसे छीन लेने की कोशिश कि है, ताकि तुम्हारा समूचा जीवन बस एक यात्रिक चर्या भर बन जाए।

इन हल्की— फुल्की नासमझ सुकुमार भावनामय नन्हीं आत्माओं को इधर—उधर पर फड़ूफडाते देखना — जरथुस्त्र को इतना प्रभावित करता है कि आसू आ जाते हैं और गीत फूट पड़ते हैं।

वह कह रहे हैं, कि पानी के बबूलों को देखना, तितलियों को देखना, गुलाब की कलियों को हवा में तैचते देखना — ऐसी हल्की—फुल्की, गैर—गंभीर.. तुम उन्हें नासमझ, सुकुमार, भावनामय भी कह सकते हो.. नन्हीं आत्माओं को इधर—उधर पर फ्लूच्छाते देखना, यही वह बात है जो जरथुस्त्र को आसुओ और गीतों तक द्रवित करती है। उनके आसू आनंद के हैं, कि जीवन इतना जीवंत है कि वह स्थायी नहीं हो सकता — केवल मृत चीजें ही स्थायी हो सकती हैं। जितनी ज्यादा जीवंत कोई वस्तु होती है उतनी ही ज्यादा परिवर्तनशील वह होती है। यह हर तरफ फैला परिवर्तनशील जीवन आनंद के आसू लाता है जरथुस्त्र को, गाने के लिए गीत लाता है।

और वह अपना केंद्रीय वक्तव्य देते हैं : मैं केवल ऐसे ईश्वर में यकीन कर सकता हूं जिसने समझ लिया हो कि नाचना कैसे। उन्हें किसी अन्य तर्क की आवश्यकता नहीं है; उन्हें किसी अन्य प्रमाण, किसी अन्य सुबूत की जरूरत नहीं है; सारा कुछ जो वह जानना चाहते हैं, वह इतना कि : क्या तुम्हारा ईश्वर नाच सकता है? क्या तुम्हारा ईश्वर प्रेम कर सकता है? क्या तुम्हारा ईश्वर गीत गा सकता है? क्या तुम्हारा ईश्वर तितलियों के पीछे दौड़ सकता है? क्या तुम्हारा ईश्वर जंगली फूल इकट्ठे कर सकता और आनंद ले सकता है, आसुओ से और गीतों से? तब वह तैयार हैं ऐसे ईश्वर को स्वीकार करने के लिए, क्योंकि ऐसा ईश्वर सच्चे अर्थों में जीवन का प्रतिनिधि होगा, ऐसा ईश्वर अन्य कुछ नहीं बल्कि स्वयं जीवन होगा।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

मित्र की बात

प्यारे ओशो,

हमारा दूसरों में भरोसा विश्वासघात करता है जहां पर कि हम स्वयं में इतने प्रियरूप से भरोसा रखना चाहेंगे। मित्र के लिए हमारी अभीप्सा ही हमारी विश्वासघातक है।

और प्राय: अपने प्रेम से हम केवल अपनी ईर्ष्या पर छलांग लगाना चाहते हैं। और प्राय: हम आक्रमण करते हैं और शह बना लेते हैं यह छिपाने के लिए कि हम स्वयं पर आक्रमण के लिए असुरक्षित हैं।

'कम से कम मेरे शत्रु होओ!' — ऐसा सच्चा सम्मान बोलता है जो मित्रता मांगने का जोखिम नहीं उठा पाता।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

मित्रता उन विषयों में से एक है जो लगभग सभी दार्शनिकों द्वारा सर्वाधिक उपेक्षित रहे हैं। शायद हम इसे मंजूरशुदा ले लेते है क हहम समण्ते ही है कह इसका मतलब होता है, इसलिए हम इसकी गहराइयों के संबंध में, विकास की इसकी संभावनाओं के संबंध में, भिन्न—भिन्न अर्थवत्ताओं सहित इसके भिन्न—भिन्न रंगों के संबंध में अज्ञानी ही रहे आए हैं।

जरथुस्त्र इस विषय पर महान अंतर्दृष्टि सहित बोले हैं। याद रखने की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है : ऋक्ति को मित्रों की जरूरत होती है क्योंकि व्यक्ति अकेले होने में अक्षम है। और जब तक व्यक्ति को मित्रों की जरूरत है, व्यक्ति कोई बहुत मित्र हो भी नहीं सकता — क्योंकि जरूरत दूसरे को वस्तु में बदली देती है। जो व्यक्ति अकेले होने में सक्षम है केवल वही मित्र होने में भी सक्षम है। लेकिन वह उसकी जरूरत नहीं है, वह उसका आनंद है; वह उसकी भूख नहीं है, उसकी प्यास नहीं है, बल्कि उसके प्रेम की प्रचुरता है जिसे वह बांटना चाहता है।

जब ऐसी मित्रता होती है, उसे मित्रता नहीं कहा जाना चाहिए क्योंकि उसने एक सर्वथा नया आयाम ले लिया है : मैं उसे 'मैत्रीभाव' कहता हूं। वह संबंध के पार जा चुकी है, क्योंकि सब संबंध किसी न किसी रूप में बंधन हैं, वे तुम्हें गुलाम बनाते हैं और दूसरे को गुलाम करते हैं।

मैत्रीभाव बस बेशर्त बांटने का आनंद है, बिना किन्हीं अपेक्षाओं के, बिना किसी कामना के कि बदले में कुछ मिले — धन्यवाद तक नहीं।

मैत्रीभाव विशुद्धतम प्रकार का प्रेम है।

वह एक जरूरत नहीं है, वह एक आवश्यकता नहीं है, वह शुद्ध बहुलता है, छलकती मस्ती है।

जरथुस्त्र कहते हैं, हमारा दूसरों में भरोसा विश्वासघात करता है जहां हम स्वयं में इतने प्रियरूप से भरोसा रखना चाहेंगे।

जो दूसरों में भरोसा रखता है वह ऐसा व्यक्ति है जो स्वयं में भरोसा करने में भयभीत है। ईसाई, हिंदू मुसलमान, बौद्ध, साम्यवादी — कोई भी पर्याप्त साहसी नहीं है अपनी ही अंतरात्मा में भरोसा रखने के लिए। वह दूसरों में विश्वास करता है, और वह उनमें विश्वास करता है जो उसमें विश्वास करते हैं।

यह सचमुच हास्यास्पद है : तुम्हारे मित्र को तुम्हारी जरूरत है, वह अपने अकेलेपन से भयभीत है; तुम्हें उसकी जरूरत है, क्योंकि तुम अपने अकेलेपन से भयभीत हो। दोनों अकेलेपन से भयभीत हैं। क्या तुम सोचते हो तुम्हारे एक—साथ होने का अर्थ होता है कि तुम्हारे अकेलेपन विदा हो जाएंगे? वे केवल दोहरे हो जाएंगे,

या संभवत: आपस में गुणित हो जाएंगे। इसीलिए सारे संबंध और दुर्गति में ले जाते हैं, और विषाद में ले जाते हैं।

यही बात आस्था के संबंध में सच है। क्यों तुम जीसस में विश्वास करते हो? — क्या तुम स्वयं में विश्वास नहीं कर सकते? क्यों तुम गौतम बुद्ध में विश्वास करते हो ओं — क्या तुम स्वयं में विश्वास नहीं कर सकते? और क्या कभी तुमने इसके गूढार्थ के संबंध में सोचा है? — यदि तुम स्वयं में विश्वास नहीं कर सकते, तो कैसे तुम गौतम बुद्ध में अपने विश्वास में विश्वास कर सकते हो? मूलरूप से, यह तुम्हारा विश्वास है। गौतम बुद्ध का उससे कोई लेना—देना नहीं।

यदि तुम स्वयं में विश्वास नहीं कर सकते तो तुम किसी में विश्वास नहीं कर सकते, केवल तुम धोखा पाल सकते हो। धोखा पालना आसान है यदि आस्था का पात्र कोई दूसरा हो, लेकिन यह तुम्हारी आस्था है — एक ऐसे व्यक्ति की आस्था जो पोला है, एक ऐसे व्यक्ति की आस्था जो नितांत अंधेरे व मूर्च्छा में जीता है, क्योंकि हर व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति में विश्वास रखता है।

जीसस तक ईश्वर में विश्वास करते हैं — वह भी स्वयं में विश्वास करने के लिए पर्याप्त साहसी नहीं हैं। तुम जीसस में विश्वास करते हो, जो खुद में ही विश्वास नहीं कर सकते; वह ईश्वर में विश्वास करते हैं। अवश्य हमें यह पता नहीं है कि ईश्वर किसमें विश्वास करता है, लेकिन वह भी अवश्य किसी में विश्वास करता होगा। यह अविश्वासी लोगों की, आस्थारहित लोगों की अनंत शृंखला प्रतीत होती है, जो आशा कर रहे हैं कि संभवत: दूसरा मेरे खालीपन को तृप्त कर सकता है।

तुम्हें अपने खालीपन का साक्षात्कार करना होगा।

तुम्हें उसे जीना पडेगा, तुम्हें उसे स्वीकारना होगा।

और तुम्हारे स्वीकार में छिपी है एक महान क्राति, एक महान रहस्योद्घाटन। जिस क्षण तुम अपने अकेलेपन को, अपने खालीपन को स्वीकार करते. हो, उसकी गुणवत्ता ही बदल जाती है। वह अपना ठीक उलटा बन जाता है — वह एक बहुलता बन जाता है, एक परितृप्ति, ऊर्जा और हर्षोल्लास के अतिरेक का छलकाव। इस छलकाव से यदि तुम्हारी आस्था उठती है तो उसका अर्थ है, यदि तुम्हारा प्रेम उठता है तो वह केवल शब्द नहीं है, वह तुम्हारा हृदय ही है।

और प्राय: हम आक्रमण करते हैं और शनु बना लेते हैं यह छिपाने के लिए कि हम स्वयं पर आक्रमण के लिए असुरक्षित हैं।

'कम से कम मेरे शत्रु होओ!' — ऐसा सच्चा सम्मान बोलता है जो मित्रता मांगने का जोखिम नहीं उठा पाता। क्या तुमने कभी किसी को कहा है, 'कम से कम मेरे शत्रु होओ'? मैं नहीं सोचता कि कोई भी किसी को अपना शत्रु बनने के लिए कहता है। तुम निश्चित ही लोगों से कहते हो कि 'मेरे मित्र होओ। ' लेकिन ये शत्रु कहां से आते हैं? कोई उन्हें चाहता नहीं, कोई उनकी मांग नहीं करता, फिर भी मित्रों की अपेक्षा शत्रु ज्यादा हैं।

शायद जब तुम किसी से कहते हो, 'मेरे मित्र होओ, ' तो यह भयवश है, कि यदि तुम उसे मित्र होने को न कहो तो वह तुम्हारा शत्रु हो सकता है। लेकिन यह किस प्रकार की मित्रता होगी? और मित्र हर रोज शत्रुओं में बदलते जाते हैं। वास्तव में तो मित्र बनाना शत्रु बनाने की शुरुआत है।

नीत्शे कह रहा है यह कहीं अधिक सम्मानपूर्ण, कहीं अधिक श्रद्धापूर्ण होगा, यदि तुम महसूस करते हो कि कोई व्यक्ति तुम्हारा शत्रु हो सकता है तो बेहतर है उससे कहना, 'कम से कम मेरे शत्रु होओ, सच्चे बनो। वह मजबूत बनाएगा।

सत्य हमेशा व्यक्ति को मजबूत बनाता है — सत्य के पास इतनी प्रचुर शक्ति है। लेकिन हम झूठों पर निर्भर करते हैं। हम लगातार मित्रताए बना रहे हैं, समाजों में, क्लबों में घूमते हुए परिचय बना रहे हैं। बुझे सामाजिकता, मिलना—जुलना कहा जाता है, लेकिन वास्तव में यह प्रतिरक्षा का उपाय है। तुम समाज के उच्च वर्गों में, शक्तिशाली लोगों को मित्र बना रहे हो, ताकि तुम राहत महसूस कर सकी, ताकि वे तुम्हारे प्रति विरोधात्मक न होंगे। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; यह बस तुम्हें कमजोर करता है। और यह तुम्हारी मित्रता को एक नकली बात, एक सामाजिक औपचारिकता बनाता है।

हां, मैं कहता हूं कि नीत्शे सही है : यदि तुम्हें अनुमान होता है कि कोई व्यक्ति तुम्हारा दुश्मन होनेवाला है, तो बेहतर है उसे आमंत्रित करना, 'कृपया,. मेरे शत्रु बनो!' एक अच्छा धक्का उसे पहुंचाओ! घंटों वह इसका मतलब न निकाल पाएगा — इसका अर्थ क्या हुआ? — क्योंकि ऐसा कभी कहा नहीं जाता। लेकिन तुमने एक ईमानदार वक्तव्य दिया है, और यह तुम्हें मजबूत करेगा, पोषित करेगा। हर निष्ठावान कृत्य, हर ईमानदार शब्द तुम्हें और—और मजबूत करनेवाला है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

नये बुतों की बात

प्यारे ओशो,

अभी भी कहीं लोग और सामान्यजन हैं लेकिन हमारे पास नहीं मेरे बंधुओ : यहां तो राज्य है.....

राज्य समस्त क्रूर दानवों में क्रूरतम है।

क्रूरतापूर्वक वह झूठ भी बोलता है; और यह झूठ उसके मुंह से रेंगता हुआ बाहर आता है : 'मै — राज्य — ही लोग हूं।

यह एक झूठ है। ये सर्जक थे जिन्होंने लोगों का सर्जन किया और उनके ऊपर एक भरोसा और एक प्रेम टांगा : इस प्रकार उन्होंने जीवन की सेवा की।

ये विध्वंसक हैं जो बहुतों के लिए जाल बिछाते हैं और उसे राज्य कहते हैं : ये उनके ऊपर तलवार और सैकड़ों इच्छाएं टलते हैं।

.....ऐसा जरूथुस्त्र ने कहा।

लोगों की भीड़, यद्यपि उनकी संख्या बहुत है, एक अकेले प्रामाणिक व्यक्ति से बहुत ज्यादा कमजोर है। भीड़ों ने अपने आप को बस एक भेड़ मान रखा है, मनुष्य नहीं।

निजतावान व्यक्ति अपनी गरिमा और अपने गौरव की घोषणा करता है, और वह पेमनुष्यजाति का एक यात्रिक पुर्जा भर नहीं होना चाहता। वह जगत को कुछ सौंदर्य, कुछ उल्लास, कुछ देना चाहता है। वह भिखारी नहीं है; और भिखारी न होने का एकमात्र उपाय है अपने प्रेम को बांटना, अपनी छलकती करुणा को, अपनी समझ को, अपनी प्रज्ञा को, अपनी संबोधि को बांटना।

लेकिन भीड़, जैसा कि हमेशा होता है, ऐसे निजतावान लोगों के खिलाफ चालबाज तरीकों से मजबूत होने का प्रयास करती है।

कमजोर आदमी हमेशा चालबाज होता है — चालबाजी उसकी प्रतिरक्षा है। और सबसे बड़ी चालबाजी जो भीड़ ने प्रतिपादित की है वह है राज्य की रचना।

तब राज्य भीड़ की रक्षा करता है — कुंदबुद्धि, मृत, कमजोर, व्यर्थ की।

कोई भी जिसके पास मानवीय मामलों में कोई अंतर्दृष्टि है वह राज्य के खिलाफ होगा, क्योंकि राज्य मनुष्य की गुलामी का प्रतीक है। यद्यपि राज्य कहे चला जाता है, 'मैं लोगों का सेवक हूं ' वास्तविकता ठीक उलटी है। ये सेवक मालिक बन जाते हैं क्योंकि उनके पास सत्ता है, उनके पास नौकरशाही है, हथियार हैं। और यह सारी शक्ति उन कुछ निजतावान लोगों के खिलाफ उपयोग की जा रही है जो विद्रोहात्मक हैं — विद्रोहात्मक असत्य के खिलाफ, विद्रोहात्मक मृत परंपराओं के खिलाफ, विद्रोहात्मक सब तरह के अंधविश्वासों के खिलाफ।

लेकिन राज्य एक शक्ति बन गया है, और तुम किसी मूढ़ को किसी बड़े पद पर बिठा सकते हो और वह सम्माननीय बन जाता है, वह शक्तिशाली बन जाता है। जहा तक उसका खुद का सवाल है, वह कुछ भी नहीं है। जिस क्षण उसका पद चला जाता है, लोग उसके बारे में सर्वथा भूल जाते हैं। क्या तुम निक्सन के संबंध में कुछ सुनते हो? एक वक्त था जब वह दुनिया का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति था, और आज वही व्यक्ति गुमनाम बन गया है। अपने आप में उस व्यक्ति की कोई सत्यनिष्ठा नहीं है, लेकिन राज्य उसे शक्ति प्रदान करता है। लोगों का सेवक बनाने के बजाय वह इन लोगों को देश का मालिक बना देता है।

जरथुस्त्र राज्य के नितांत खिलाफ हैं। उसका अर्थ यह नहीं कि कोई कामचलाऊ संगठन नहीं होना चाहिए। कामचलाऊ संगठन से मेरा मतलब है रेलवे की तरह; उनके भी प्रेसीडेंट होते हैं लेकिन कोई उन्हें जानता तक नहीं कि वह कौन हैं। और जानने की कोई जरूरत नहीं है। अथवा पोस्ट आफिस की तरह। एक पोस्टमास्टर जनरल (महा डाकपाल) होता है, लेकिन कोई नहीं जानता कि वह महानुभाव कौन हैं — और कोई जरूरत भी नहीं है।

प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति इसी कोटि में होने चाहिए। उन्हें वेतन मिलना चाहिए, क्योंकि वे देश की सेवा कर रहे हैं, लेकिन उन्हें ऐसा नहीं बन जाना चाहिए जैसे कि वे महा विजेता हैं, जैसे कि देश उनका है

… ऐसा जरथुस्त्र ने कहा.

न्याय की बात

प्यारे ओशो

जब तुम्हारा कोई शत्रु हो उसे बुराई के बदले भलाई मत दो : क्योकि वह उसे शर्मिंदा करेगा। लेकिन सिद्ध करो कि उसने तुम्हारे प्रति कुछ भला किया है।

क्रोधित होना बेहतर है शर्मिंदा करने के बजाय! और जब तुम्हें शाप दिया गया हो मैं इसे नही पसंद करता कि तब तुम आशीर्वाद देना चाहते हो? बल्कि वापस थोड्यू शाप दो।

और यदि तुम्हारे साथ महो अन्याय किया जाए तो जल्दी से उसके बगल में ही पांच छोटे अन्याय करो। जो अन्याय को अकेले सहन करता है वह देखने में भयावह है।

तुम्हारा भावशून्य न्याय मुझे पसंद नहीं है; और तुम्हारे न्यायाधीशों की ऑख से सदा जल्लाद और उसकी सर्द तलवार ही झांकते हैं।

बताओ मुझे वह न्याय कहां पाया जाने वाला है जो देखती आखों से युक्त प्रेम है?....

कैसे मैं हृदय ही से न्यायपूर्ण हो सकता हूं? कैसे मैं प्रत्येक को वह दे सकता हूं जो उसका है मेरे लिए तो यही पर्याप्त रहने दो : मैं प्रत्येक को वह देता हूं जो मेरा है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जीसस के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कथनों में एक है : यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।

जरथुस्त्र इससे राजी न होंगे। और जिस कारण से वह राजी न होंगे वह अतिशय महत्वपूर्ण है : यदि कोई व्यक्ति तुम्हें थप्पड़ मारता है और तुम थप्पड़ मारे जाने के लिए अपना दूसरा गाल भी उसके स्म्मुख कर देते हो, तो तुम उसकी मानवता को खाक में मिला रहे हो। तुम एक संत बन रहे हो और उसे क् पापी करार दे रहे हो; तुम उसे शर्मिंदा कर रहे हो; तुम 'तुमसे ज्यादा पवित्र' बन रहे हो। यह एक अपमान है; यह मानवता का सम्मान नहीं है।

जरथुस्त्र वापस चोट करना और मनुष्य बने रहना चाहेंगे — पवित्र बनना नहीं चाहेंगे। उस प्रकार तुम दूसरे का अपमान नहीं कर रहे हो। उस प्रकार तुम समानता दिखा रहे हो, 'मैं तुम्हारी कोटि का हूं तुम मेरी कोटि के हो। मैं किन्हीं अर्थों में तुमसे उच्चतर नहीं हूं तुम किन्हीं अर्थों में मुझसे निम्नतर नहीं हो। ' यह चीजों को देखने का एक अजीब ढंग है। लेकिन निश्चित ही जरथुस्त्र के पास एक सारगर्भित बात है जो याद रखे जाने योग्य है। बात मूलतः यह है कि समस्त तथाकथित साधु—संत—महात्मा लोग अहंकारी हैं, अपनी विनम्रता में भी, अपनी विनयशीलता में भी। उनके पास मनुष्यों के लिए तिरस्कार के अलावा अन्य कुछ भी नहीं। गहरे में वे जानते हैं कि तुम सब पापी हो, तुम उनके क्रोध के लिए भी पात्र नहीं हो, वे तुम्हें किसी भी रूप में अपने बराबर नहीं आकते।

जरथुस्त्र बहुत मानवीय हैं और वे तुम्हारी तथाकथित आध्यात्मिक अहकारवादिता को तृप्ति नहीं देना चाहते।

तुम्हारे नित्यानबे प्रतिशत संत इसलिए संत है ताकि तुम्हें पापी कह सकें; उनका सारा आनंद संत होने में नहीं बल्कि तुम सब कोपीपी कहने की सामर्थ्य पाने में है; हर व्यक्ति की गरिमा को नष्ट करना, खाक में मिलाना उनके अंतरतम का आनंद है।

तुम्हारा भावशून्य न्याय मुझे पसंद नहीं है; और तुम्हारे न्यायाधीशों की आंख से सदा जल्लाद और उसकी सर्द तलवार ही झांकते हैं।

बताओ मुझे वह न्याय कहां पाया जाने वाला है जो देखती आखों से युक्त प्रेम है?....

जब तक न्याय प्रेम में आधारित और अवस्थित नहीं है वह पहले से ही अन्याय है। हमारे समस्त न्यायालय इतने भावशून्य हैं — वहा कोई प्रेम नहीं, करुणा नहीं, समझ नहीं। वहा बस शब्द हैं, मृत; कानून हैं, मृत; न्यायाधीश हैं, मृत; और हर मृत चीज मिलकर जीवित के बारे में तय कर रही है। और सब कुछ अतीत के बारे में तय किया जा रहा है।

हो सकता है किसी व्यक्ति ने चोरी की हो, लेकिन यह एक बीत गया कृत्य है, उसका यह मतलब नहीं

होता कि चोर आगे चलकर संत नहीं हो सकता।

'आदमी इसी क्षण में बदल सकता है।

उसका आनेवाला कल खुला है, उस पर उसके बीते कल का अनधिकृत प्रवेश नहीं है। हमारे समूचे,, न्याय ने शताब्दियों से यह तयशुदा ले लिया है कि आनेवाला कल नहीं है; बीते हुए कल ही पर्याप्त हैं किसी व्यक्ति के संबंध में तय करने के लिए। और सारे बीते कल मृत हैं।

तुम अपने न्यायाधीशों की आखों में देख सकते हो और वहा सदा जल्लाद और उसकी सर्द तलवारे ही झांकते हैं।

बताओ मुझे वह न्याय कहां पाया जाने वाला है जो देखती आखों से युक्त प्रेम है?

बिना प्रेम के, बिना हृदय के तुम किसी व्यक्ति के जीवन की जटिलताओं को नहीं देख सकते। एक छोटा सा कृत्य एक लंबे जीवन के संबंध में निर्णायक होने जा रहा है। तुम भविष्य के सारे दरवाजे बंद कर रहे हो; तुम उसे बदलने का अवसर नहीं दे रहे हो — तुम उसे एक मौका और नहीं दे रहे हो। प्रेम हमेशा एक मौका, एक अवसर देने को तैयार है।

लेकिन ये भावशून्य आखें तुम्हारे न्यायाधीशों की केवल मृत कानूनों को जानती हैं और वे इस बात की चिंता किये बगैर अपने कानूनों का पालन करते हैं कि कानून इसलिए नहीं बनाया गया था ताकि उसके लिए व्यक्ति की बलि दी जाए। कानून मनुष्य की सेवा में बनाया गया था; न कि मनुष्य कानून की सेवा में। कानून बदला जा सकता है — कानून मनुष्य—निर्मित है।

यह केवल प्रेम है जो शक्ति के दुरुपयोग को टाल सकता है। प्रेम महानतम मूल्य है, कानून निम्नतम।

लेकिन यह एक दुर्दशा है और एक नितात दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि कानून सर्वोच्च बात बन गया है, और प्रेम पूर्णत: उपेक्षित है। जहा तक कानून का संबंध है, या कहें जहां तक न्याय के मंदिरों अथवा न्यायालयों का संबंध है, प्रेम के लिए कोई स्थान नहीं है।

एक महान क्राति की जरूरत है जो हर कानून को प्रेम के नियमों के अनुसार बदल दे। न्याय को प्रेम की छाया भर होना चाहिए प्रतिशोधमय नहीं बल्कि सम्मानमय। यह संभव है; यह व्यक्तियों के जीवन में संभव हुआ है; यह एक दिन समूचे समाज के जीवन में संभव है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

सर्जक के ढंग की बात

प्यारे ओशो

तुम्हें स्वयं को अपनी ही लपटों में जला देने को तैयार रहना जरूरी है : कैसे तुम नये हो सकते थे यदि प्रथमत: तुम राख न हो गये होते?....

अलग हट जाओ और मेरे आसुओ के साथ अकेले होओ मेरे बंधु। मैं उसे प्रेम करता हूं जो स्वयं के पार सृजन करना चाहता है और इस प्रकार मिट जाता है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

सृजनात्मकता संभवत: एकमात्र अस्तित्वगत धर्म है। सृजन के क्षण वे क्षण हैं जब तुम सृटि के साथ एक हो। एक प्रकार से तुम खो जाते हो, तुम अपना पुराना अहंकार अब और नहीं हो; एक दूसरे प्रकार से तुमने पहली बार अपने आप को पाया है।

केवल सर्जक ही जीवन की गहराइयों और प्रेम की ऊंचाइयों को जानता है। वे लोग जो सृजनात्मकता का आयाम नहीं जानते वे बेखबर रह जाते हैं कि सच्चा धर्म क्या है।

सच्चा धर्म पूजा नहीं है। सच्चा धर्म ?एउधर्मग्रंथों में बंद नहीं है। सच्चे धर्म में एक ही बात होती है : तुम्हारा सृष्टिकर्ता के साथ भाग लेना। तुम्हारा यह भाग लेना चाहे फिर कितना ही छोटा क्यों न हो उसकी एक महत्ता है, क्योंकि केवल तुम्हीं उसको कर सकते हो, दूसरा कोई उसे नहीं कर सकता।

ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है कहीं — ईश्वर सृष्टि की समूची सृजनात्मक ऊर्जा का सामूहिक नाम है। जैसे ही तुम सृजनात्मक होते हो तुम उसके हिस्से हो, और जो लोग सृजनात्मक नहीं हैं वे अस्तित्व के प्रवाह से अलग— थलग बने रहते हैं। और वे लोग जो विध्वंसात्मक हैं, न केवल वे अस्तित्व से अलग— थलग हैं बल्कि वे अस्तित्व के विपरीत हैं। वे ही असली पापी हैं।

पुण्य कहलाने योग्य एकमात्र पुण्य सृजनात्मकता है। इससे भेद नहीं पड़ता कि तुम क्या सृजन करते हो, लेकिन उसे जीवन—उन्नायक होना चाहिए अस्तित्व को सौंदर्य प्रदान करना चाहिए जीने को और उल्लासमय बनाना चाहिए गीतों को थोडा और रसपूर्ण, प्रेम को थोड़ा और महिमावान बनाना चाहिए — और सर्जक का जीवन शाश्वतता और अमर्त्यता का अंग होने लगता है।

जरथुस्त्र सर्जक के ढंग के संबंध में बात कर रहे हैं। करोडों लोग जीते हैं जो कुछ भी सृजन नहीं करते। और यह जीवन का एक मूलभूत तत्व है कि जब तक तुम सृजन नहीं करते — चाहे वह एक चित्र हो, कि एक गीत, कि नृत्य — तुम आनदपूर्ण नहीं हो सकते, तुम दुख में ही बने रहोगे। केवल सृजनात्मकता तुम्हें तुम्हारी गरिमा प्रदान करती है। वह तुम्हें अपनी सम्पूर्णता में खिलने में सहयोग देती है।

तुम्हें स्वयं को अपनी ही लपटों में जला देने को तैयार रहना जरूरी है : कैसे तुम नये हो सकते थे, यदि प्रथमत: तुम राख न हो गये होते? अलग हट जाओ और मेरे आसुओ के साथ अकेले होओ मेरे बंधु। मैं उसे प्रेम करता हूं जो स्वयं के पार सृजन करना चाहता है और इस प्रकार मिट जाता है।

स्वयं के पार कुछ सृजन करने का अर्थ है कि तुम्हें विदा होना होगा। केवल जब तुम अनुपस्थित होते हो तभी तुमसे महानतर कुछ तुममें उपस्थिति हो सकता है। जब तुम्हारा सारा नकली व्यक्तित्व गिर जाता है, तभी तुम्हारी असली निजता उत्पन्न होती है।

वह तुम्हे बस तीन चीजो के प्रति सजग कर रहे हैं: एक, सर्जक हुए बिना तुम धार्मिक नहीं हो सर्जक हुए बिना तुम वास्तव में जिंदा नहीं हो; सर्जक हुए बिना तुम स्वतंत्र नहीं हो। तुम्हारी सृजनात्मकता स्वतंत्रता लाती है। शक्ति, प्रज्ञा, चेतना लाती है। किंतु वह खतरे भी लाती है। जिसके प्रति वह तुम्हें सजग कर रहे हैं।

यह साहसियों का मार्ग है, उनके लिए जो खतरनाक ढंग से जीना चाहते हैं, क्योंकि जीने का अन्य कोई ढंग नहीं है। कायर सिर्फ बने रहते हैं; केवल बहादुर जीते हैं।

महानतम बहादुरी और शक्ति की जरूरत होती है जब तुम स्वयं का अतिक्रमण करते हो। तुम्हें एक लपट बनना होगा जिसमें तुम जलकेर राख हो जाओ, और एक नयी सत्ता, एक नया मनुष्य — जिसे जरथुस्त्र परममानव कहते हैं — तुममें से उत्पन्न हो।

सृजनात्मकता स्वयं तक और स्वयं के परममानव तक जाने की राह है। जब तक व्यक्ति अपना परममानव न खोज ले, वह व्यर्थ ही जीआ।

……..ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

सद्‌गुण संप्रदान करने की बात

प्यारे ओशो,

बताओ मुझे : कैसे स्वर्ण को सर्वोच्च मूल्य उपलब्ध हुआ? क्योकि वह दुर्लभ और निरुपयोगी और चमकदार तथा आभा में स्निग्ध है; वह सदा अपने आपको संप्रदान करता है।

कैवल सर्वोच्च सद्‌गुण के प्रतीक के रूप में स्वर्ण को सर्वोच्च मूल्य उपलब्ध हुआ देनेवाले की निगाह स्वर्ण सी झलकती है।....

सर्वोच्च सद्‌गुण दुर्लभ और निरुपयोगी है वह चमकदार और आभा में स्निग्ध है : सर्वोच्च ' सद्‌गुण संप्रदान किया जाने वाला सद्‌गुण है।

सच में मैं तुम्हारा ठीक अनुमान लगाता हूं मेरे शिष्यो तुम संप्रदान किये जानेवाले सद्‌गुण की अभीप्सा करते हो जैसे कि मैं करता हूं।....

तुम स्वयं बलिदान एवम् उपहार बन जाने की प्यास पालते हो; और वही कारण है कि तुम

अपनी आत्मा में समस्त समृद्धियों का ढेर लगा लेने की प्यास से भरते हो।

तुम्हारी आत्मा अतोषणीय रूप से खजानों और रत्नों की अभीप्सा करती है क्योकि देने की चाहत में तुम्हारा सद्‌गुण अतोषणीय है। तुम सब चीजों को तुम तक और तुम में आने को विवश करो ताकि वे तुम्हारे झरने से तुम्हारे प्रेम के उपहार के रूप में वापस बह सकें।

सच में ऐसे संप्रदानकारी प्रेम को समस्त मूल्यों का चोर बन जाना जरूरी है; लेकिन मैं इस स्वार्थपरायणता को स्वस्थ व पवित्र कहता हूं।....

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

मनुष्य ने हमेशा सद्‌गुण के अर्थ के संबंध में सोचा है, लेकिन सद्‌गुणों के जगत को जो आयाम जरथुस्त्र प्रदान करते हैं वह किसी मनुष्य ने कभी नहीं प्रदान किया है। सद्‌गुण की, शिक्षा सदा ही धर्मों द्वारा पुरस्कार के साधन के रूप में दी गयी है, स्वर्ग के साधन के रूप में, ईश्वर का, अस्तित्व का कृपापात्र बनने के साधन के रूप में।

लेकिन इन समस्त धर्मों ने सद्‌गुण को एक बहिर्गत अर्थ दिया है, अर्थ जो बाहर से आता है, ऐसा अर्थ नहीं जो भीतर से विकसित। जरथुस्त्र सद्‌गुण शब्द को अंतर्निहित आयाम का अर्थ प्रदान करते हैं, ऐसे जैसे फूल खिलते हैं, और बहुत गहरे में जडों से जुड़े हैं, जमीन की गहराई में। वे अलग नहीं हैं; हो सकता है जमीन में रंग और सुगंध न दिखायी देते हों, सौंदर्य न दिखायी देता हो, लेकिन वे सब के सब उसमें छिपे हैं और फूल में अभिव्यक्त हो जाते हैं। सद्‌गुण का बीज तुम्हारे भीतर ही है, उसका किसी पुरस्कार से कोई लेना—देना नहीं। वह अपना पुरस्कार आप है। वह किसी भी चीज का साधन नहीं है, वह अपने आप में सिद्धि है।

जरथुस्त्र को बहुत गहराई से समझना है, क्योंकि यह समझ धार्मिक जीवन की, आध्यात्मिक क्राति की तुम्हारी पूरी अवधारणा को बदल देगी; नये मनुष्य की आध्यात्मिक क्राति की अवधारणा को जो धार्मिक तो होगा लेकिन बिना धर्मों का होगा, जो धार्मिक तो होगा लेकिन बिना किसी लक्ष्य के, जिसकी धार्मिकता उसके अंतरतम प्राणों की सुगंध मात्र होगी। और उसका सद्‌गुण होगा उसे बांटने का, पूरे अस्तित्व पर उसे अर्पित करने का। जरथुस्त्र अपने शिष्यों से पूछते हैं, बताओ मुझे : कैसे स्वर्ण को सर्वोच्च मूल्य उपलब्ध हुआ? क्योकि वह दुर्लभ और निरुपयोगी और चमकदार तथा आभा में स्निग्ध है; वहै सदा अपने आपको संप्रदान करता है। जो बातें वह स्वर्ण के संबंध में कह रहे हैं वे सत्य के, सौंदर्य के, भगवत्ता के, प्रेम के सर्वोच्च सद्‌गुणों के संबंध में सच हैं।

प्रेम किसी भी बात का साधन नहीं बन सकता। जैसे ही तुम अपने प्रेम को किसी भी बात के लिए साधन बनाते हो, वह प्रेम नहीं रह जाता। प्रेम को अपना सौंदर्य, अपनी प्रफुल्लता, अपनी सुगंध कायम रखने के लिए निरुपयोगी बने रहना होता है। जैसे ही वह साधन बनता है, कहीं पहुंचने के लिए कोई लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सीढ़ी बनता है, कि लक्ष्य महत्वपूर्ण बन जाता है; प्रेम लक्ष्य की तुलना में अ—महत्वपूर्ण बन जाता है।

सच में मैं तुम्हारा ठीक अनुमान लगाता हूं मेरे शिष्यो तुम संप्रदान किये जाने वाले सद्‌गुण की

अभीप्सा करते हो जैसे कि मैं करता हूं।.... तुम स्वयं बलिदान एवम् उपहार बन जाने की प्यास पालते हो; और वही कारण है कि तुम अपनी आत्मा में समस्त समृद्धियो का ढेर लगा लेने की प्यास से भरते हो। शायद किसी ने इस ढंग से इशारा नहीं किया है जिस ढंग से जरथुस्त्र कर रहे हैं — क्यों लोग सत्य की खोज पर अथवा आत्मखोज पर निकलते हैं। मानवजाति के समस्त महान शिक्षक लोगों का आह्वान करते रहे हैं खोजने के लिए. तुम कौन हो? स्वयं को जानो!

लेकिन किसलिए?

जवाब जरथुस्त्र के पास है। अपनी समृद्धियों को जानो, अपने खजानों को जानो, ताकि तुम बांट सको, ताकि तुम उन्हें दूसरों को संप्रदान कर सको। अपने को पाओ केवल बांटने के लिए क्योंकि जैसे ही तुम स्वयं को बांटते हो तुम सामान्य मानवता का अतिक्रमण कर जाते हो, तुम परममानव बन जाते हो।

सामान्य मनुष्य लोभी है, वह एक भिखारी है। वह इकट्ठा किये ही चला जाता है, वह कभी देता नहीं; वह देने की भाषा ही अथवा देने का आनंद ही नहीं जानता। वह बहुत गरीब है — वह केवल पाने का बहुत तुच्छ आनंद जानता है। पाने में, अगर तुम पूरी दुनिया भी पा जाओ तो भी तुम्हारा आनंद तुच्छ ही होगा; और देने में, चाहे तुम गुलाब का एक फूल ही दो तो भी तुम्हारा आनंद एक सम्राट का होगा।

देना, संभवत: जगत में सर्वाधिक आनदपूर्ण अनुभव है। और जब तुम स्वयं को देते हो, जब तुम कुछ अपने अंतरतम प्राणों का देते हो, तब तुम सच में देते हो।

तुम्हारी आत्मा अतोषणीय रूप से खजानों और रत्नों की अभीप्सा करती है क्योकि देने की चाहत में तुम्हारा सद्‌गुण अतोषणीय है।

सारा धार्मिक प्रयास, सारी आध्यात्मिक यात्रा, स्वयं की पूरी खोज एक छोटे से कारण से है : कि जब तक तुम स्वयं को जान न लो, तुम दे नहीं सकते। कैसे तुम वह दे सकते हो जो तुम्हें ही अज्ञात है? और चमत्कार यह है कि जैसे ही तुम स्वयं को जानते हो तुम देने के प्रलोभन से बच नहीं सकते। वह प्राप्ति के साथ ही आता है, फौरन तुम सारे जगत से चिल्लाकर कहना चाहते हो, 'मैंने जीवन का स्रोत पा लिया है, आओ और मुझसे बांट लो'!

जब कभी भी तुम पार का कुछ अनुभव करते हो, तुम उसे अपने भीतर नहीं समा सकते। वह बस असंभव है, वैसा जीवन का स्वभाव नहीं है। जितनी बड़ी तुम्हारी आतरिक उपलब्धि होगी, उतनी ही बड़ी देने की इच्छा होगी। प्रारंभ में तुम अचंभित हो जाओगे — जीवन का स्रोत पा लेने की तुम्हारी प्यास बड़ी थी, लकिन अब तुम जानते हो कि उसे बांटने की तुम्हारी चाह उससे भी बड़ी है।

और जिस रहस्य का तुम्हें सामना होगा वह यह है कि, जितना ज्यादा तुम उसे बाटते हो उतना ही ज्यादा वह तुम्हारे पास होता जाता है; जितना कम देते हो उतना ही कम होता जाता है। यदि तुम दो ही न, तो तुम उसे पूरी तरह गंवा दोगे। केवल बांटने में, बिना कुछ पीछे बचाए हुए बांटने में, स्वयं को खाली करते जाने में ही उसे तुम अपने पास रख सकते हो। और अस्तित्व खयाल रखता है, जैसे तुम अपने आपको खाली कर रहे होते हो, तुम्हारे जीवन के अज्ञात स्रोतों से अस्तित्व तुम्हें और—और ताजे रसों से, और—और नये खजानों से भर

रहा होता है — तुम कभी खाली नहीं होने पाते। तुम्हारा भराव अनंत बन जाता है; लेकिन अनंत वह बनता है अनंत रूप से देने से।

तुम सब चीजों को तुम तक और तुम में आने को विवश करो ताकि वे तुम्हाए झरने से तुम्हारे प्रेम के' उपहार के रूप में वापस बह सकें।

संसार में अन्य कोई धर्म नहीं है। सारे दूसरे धर्म नकली हैं, सारे दूसरे धर्म केवल बहाने हैं लोगों को धोखा देने के लिए।

……ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

प्रसिद्ध दार्शनिकों की बात

प्यारे ओशो,

तुमने लोगों की और लोगों के अंधविश्वासों की सेवा की है तुम सारे प्रसिद्ध दार्शनिको! — तुमने सत्य की सेवा च्छीं की है! और ठीक उसी कारण से उन्होने तुम्हें सम्मान दिया।....

तुम गरुड़ नहीं हो : तो न ही तुम आतंक में पड़े प्राण का आनंद जानते हो। और जो एक पक्षी न हो उसे अपना घर अतल गर्तों के ऊपर नहीं बनाना चाहिए।

तुम कुनकुने हो : लेकिन समस्त गहन ज्ञान का प्रवाह शीतल है! प्राण के अंतरतम कुएं बर्फ जैसे शीतल हैं : गर्म हाथों और हाथ में लेनेवालों के लिए एक ताजगी! '

तुम सम्माननीय बने और अकड़े और रीड ताने खड़े रहते हो तुम प्रसिद्ध दार्शनिको! — कोई भी प्रबल हवा या संकल्प तुम्हें आगे की तरफ धक्का नहीं देते।

क्या तुमने कभी भी सागर पर तैरते पाल नहीं देखे हैं गोल हुए और फूलते जा रहे और हवा की तीव्रता के आगे थरथराते?

एक पाल की तरह प्राण की तीव्रता के आगे थरथराती मेरी प्रज्ञा सागर के वक्ष पर यात्रा करती है — मेरी पालतू न बनायी गयी प्रज्ञा।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा!

जरथुस्त्र दार्शनिक नहीं हैं। दर्शनशास्त्र उनके लिए मात्र समय की बरबादी है — न केवल तुम्हारे बल्कि दूसरों के भी — क्योंकि दर्शनशास्त्र मस्तिष्क के खेल के अलावा अन्य कुछ भी नहीं है। वह सत्य को पाने का मार्ग नहीं है, वह प्रेम को पाने का मार्ग नहीं है, वह सौंदर्य को पाने का मार्ग नहीं है; वह मात्र रिक्त शब्दों का वाद बनाता चला जाता है।

लेकिन उन्होंने करोड़ों को धोखा दिया है। और उन्होंने करोड़ों को जीवन—रहस्यों की कुंजी उपलब्ध करने की खोज में निकलने से वंचित किया है। दर्शनशास्त्र ने कभी किसी को रूपांतरित नहीं किया है। वह लोगों के सिरों को गुब्बारे की तरह फुला देतो है, लेकिन वह उनके जीवन में क्राति नहीं लाता; उसके माध्यम से कोई कायापलट नहीं घटता। वह सबसे बड़ी प्रवंचना है जो मनुष्य स्वयं को और दूसरों को देता रहा है। उसने खेलने के लिए लोगों को सुंदर—सुंदर शब्द दिये हैं। उसने लोगों को बच्चों जैसा समझा है; और जो लोग उन शब्दों से खेलते रह गये हैं वे बच्चे रह गये हैं, अवमंदित—बुद्धि।

उदाहरण के लिए दर्शनशास्त्र के जगत ने तुम्हें अपना सर्वाधिक प्रसिद्ध शब्द दिया है, ईश्वर जो मनुष्य की भाषा में संभवत: सर्वाधिक अर्थहीन शब्द है। वह तुम्हारे लिए अपना ही अन्वेषण नहीं रहा है; वह तुम्हारा अपना ही सृजन नहीं रहा है; उलटे, दार्शनिकों, धर्मवेत्ताओं, पंडित—पुरोहितों ने तुम्हें भरोसा दिला दिया है कि तुम ईश्वर का सृजन हो।

यह सर्वाधिक सार्थक बिंदु है जरथुस्त्र के साथ तीर्थयात्रा प्रारंभ करने के लिए। अतीत में ईश्वर सब कुछ के स्रष्टा के रूप में स्वीकृत किया गया है, लेकिन वह अवधारणा ही मनुष्य को एक वस्तु बना देती है। केवल वस्तुएं निर्मित की जा सकती हैं। यदि मनुष्य ईश्वर द्वारा निर्मित किया गया है, तो मनुष्य के पास अपना कोई गौरव, अपनी कोई गरिमा नहीं है — वह' बस एक कठपुतली है। किसी भी क्षण ईश्वर अपना मन बदल सकता है और मानवता को समाप्त कर सकता है, और हम नितात असहाय खड़े रह जाते हैं। न अपने निर्माण में ही हमारा कोई हाथ है, न अपने विनाश में ही हमारा कोई हाथ होगा।

यदि यह सच है, तो जीवन का सारा अर्थ ही खो जाता है। वह एक त्रासदी बन जाता है, एक कैद, एक लंबे समय तक चलने वाली गुलामी। और जरथुस्त्र अकेले नहीं हैं इस तथ्य की ओर इशारा करने में कि ईश्वर की अवधारणा मनुष्य की उत्काति (एवेलूशन) के खिलाफ है. महावीर उनसे राजी हैं; गौतम बुद्ध उनसे राजी हैं।

ये तीनों ही महाप्रतिभाएं एक बात पर सर्वथा एकमत हैं : मनुष्य और उसकी चेतना के स्रष्टा के रूप में ईश्वर की इजाजत: नहीं दी जा सकती। उसकी इजाजत देना समस्त अर्थ, महत्ता, स्वतंत्रता, प्रेम, सृजनात्मकता को नष्ट करना है — उस सब कुछ को नष्ट करना है जो मनुष्य को आनंद और मस्ती प्रदान करता है। ईश्वर के बिना मनुष्य स्वतंत्र है। उसका सृजन नहीं किया गया' है, वह उत्काति करता रहा है। तुम्हें इस बात को समझ लेना है, कि सृजन की अवधारणा और उत्काति (एवेलूशन) की अवधारणा विरोधाभासी हैं। तुम दोनों को नहीं रख सकते। सृजन का मतलब होता है : कोई उत्काति नहीं।

उत्काति का मतलब होता है कि अस्तित्व सदा से रहा आया है — सतत परिवर्तनशील, गतिमान, उत्काति करता, नये रूप, बेहतर रूप लेता। यह उत्काति है जिसके द्वारा मनुष्य और उसकी चेतना आए हैं। जरथुस्त्र के लिए निर्माण नहीं उत्काति धर्म है। और उत्काति में ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है, कम से कम निर्माणकर्ता के रूप में तो नहीं। केवल संभव स्थान ईश्वर के लिए यदि तुम्हें बहुत ही प्यार हो उस शब्द से, यदि तुम चाहते हो कि कैसे भी उसे कहीं न कहीं बिठाया जाएं तो एकमात्र शक्यता है कि मनुष्य की चेतना अपनी परम संभावना तक उद्विकसित होती है — वही होगा ईश्वर का जन्म।

जरथुस्त्र स्रष्टा के रूप में ईश्वर का इनकार करते हैं, लेकिन मनुष्य चेतना के परम सृजन के रूप में वह ईश्वर को स्वीकार करने के लिए राजी हैं। गलतफहमी से बचने के लिए चेतना की इस परम उत्काति को वह 'परममानवं कहते हैं। परममानव उनका ईश्वर है। लेकिन वह प्रारंभ में नहीं आता, वह सर्वोच्च आरोह पर ही आता है, अंत में। वह तुम्हारा मालिक और तुम्हारा प्रभु नहीं है, वह तुम्हारा उद्विकसित रूप है, परिष्कृत रूप। इसलिए एक और बात याद रखने की है : जरथुस्त्र की मान्यता एक ईश्वर में नहीं हो सकती। करोड़ों प्राणी हैं, वे सब के सब उत्काति से गुजर रहे हैं, और करोड़ों ईश्वर होंगे — क्योंकि प्रत्येक जीवन में बीजू है, क्षमता, एक ईश्वर बन जाने की।

जरथुस्त्र ईश्वर और धर्म की अवधारणा में एक समग्र क्राति ले आते हैं। अब धर्म एक पूजा—पाठ या एक मान्यता नहीं रहा, अब धर्म मनुष्य का महानतम सृजनात्मक कृत्य बन जाता है। अब धर्म वह नहीं रहा जो मनुष्य को गुलाम बनाता है, उसके प्राणों को कैद करता है। जरथुस्त्र के हाथों में धर्म समस्त जंजीरों को छिन्न—भिन्न कर देने की, समस्त बाधाओं को विनष्ट कर देने की कला बन जाता है — ताकि मानव चेतना दिव्य चेतना बन सके, ताकि मानव विदा हो और परममानव को जन्म दे।

पच्चीस शताब्दियों पूर्व इस व्यक्ति के पास एक अत्यधिक सक्षम अवधारणा थी : ईश्वर को प्रारंभ में रखने से कोई फर्क नहीं पैदा होता। ज्यादा से ज्यादा तुम विश्वास करने वाले बन जाते हो — और विश्वास सब अंधे होते हैं, विश्वास सब झूठे होते हैं। वे तुम्हें विकसित होने में मदद नहीं करते, वे केवल तुम्हें एक गुलाम की तरह मृत स्तुतइrयों के समक्ष, सड़े धर्मग्रंथों के समक्ष, आदिम दार्शनिकताओ के समक्ष घुटने टेकने में मदद करते हैं।

जरथुस्त्र पूरी पृथ्वी को उस सबसे स्वच्छ कर देना चाहते हैं जो सड़ गया है, जो पुराना हान्येह चाहते हैं कि तुम्हारी आखें एक सुदूर सितारे पर लगी हों — सितारा जो तुम्हारा भविष्य है, सितारा जो तुम बन सकते हो, सितारा जो तुम्हें बनना ही है, क्योंकि जब तक तुम वह सुदूरवर्ती सितारा न बन जाओ तुम्हारा जीवन एक नृत्य न होगा, तुम्हारा जीवन एक गीत न होगा, तुम्हारा जीवन एक महोत्सव न होगा।

जरथुस्त्र का ईश्वर शब्द को छोड़ देना ठीक बात है। यह एक कल्पना थी और हम कल्पना के साथ किसी भी प्रकार से संबंधित नहीं हो सकते। लेकिन परममानव कल्पना नहीं है; वह तुम्हारी संभावना है, यह हर व्यक्ति की संभावना है। परममानव की अवधारणा मात्र तुम्हें समृद्ध बनाती है, तुम भर गया महसूस करते हो, तुम अब एक भिखारी और एक पुजारी नहीं महसूस करते। तुम्हें किसी गिरजाघर या मंदिर या मस्जिद जाने की जरूरत नहीं रह जाती क्योंकि अब किसी प्रार्थना की जरूरत नहीं ३। तुम्हें एक स्रष्टा बनना है, तुम्हें स्वयं को रूपातरित करना है।

धर्म रूपातरण की कीमिया बन जाता है — एक गुलाम से एक मालिक में।

जरथुस्त्र बहुत से शब्दों को बदलते हैं जो मनुष्य पर बहुत विनाशकारी रूप से हावी रहे हैं। वह घटना शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहते, वह प्रक्रिया शब्द का प्रयोग करना चाहते हैं। वह होनाशब्द का उपयोग नहीं करना चाहते, वह बननाशब्द का उपयोग करना चाहते हैं — ताकि सदा कुछ और उपलब्ध करने को है, सदा तुम्हारी आत्मा द्वारा ऊंची उड़ान भरने के लिए विस्तृत आकाश है। तुम सृष्टि की सीमाओं पर नहीं पहुंच सकते, क्योंकि कोई सीमाएं हैं नहीं।

तुमने लोगों की और लोगों के अंधविश्वासों की सेवा की है? तुम सारे प्रसिद्ध दार्शनिको! — तुमने सत्य की सेवा नहीं की है। और ठीक उसी कारण से उन्होंने तुम्हें सम्मान दिया।....

यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन तथ्यपूर्ण, कि लोग तुम्हारा सम्मान करेंगे यदि तुम उनके अंधविश्वासों को सहारा दो, यद्यपि कि उनके अंधविश्वासों को सहारा देने में तुम उन्हें विषाक्त कर रहे हो। वे तुम्हारे प्रति बहुत सम्मानपूर्ण होंगे — वे तुम्हें संत बना देंगे, वे तुम्हें पैगंबर बना देंगे, वे तुम्हें उद्धारक बना देंगे। लेकिन उनके अंधविश्वासों में बाधा मत पहुंचाओ। उनके अंधविश्वास उनके साथ इतने लंबे काल से रहे आए हैं, और उन्होंने उनको सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया है और उनके साथ बड़ा आराम महसूस करते हैं — क्योंकि सत्य को खोजने की जरूरत नहीं है, उनके पास वह है ही। जैसे ही तुम उनके अंधविश्वासों की आलोचना करते हो, मानवता की सारी भीड़ तुम्हारे विरोध में हो जाती है; वे सब के सब तुम्हारे दुश्मन बन जाते हैं।

यह अजीब है कि नाम जो तुम्हें दर्शनशास्त्र के इतिहास में मिलेंगे, ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें सूली लगायी गयी, ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें पत्थर फेंक—फेंक कर मार डाला गया। ये वे लोग हैं जिन्हें सम्मान मिला — और अभी भी उनका सम्मान किया जाता है, सदियों बाद। और अजीब बात यह है कि उन्होंने तुम्हें कुछ भी योगदान नहीं किया है। एकमात्र लोग जिन्होंने तुम्हें कोई योगदान किया है, तुमने उन्हें सूली लगा दी है।

ऐसा लगता है कि अपने मित्रों के लिए तुम अपनी सूली सदा तैयार ही रखते हो, और अपने दुश्मनों के लिए तुम सदा अपना सम्मान तैयार रखते हो।

दुनिया के सारे लोग अंधविश्वासों में जी रहे हैं, और उनके समस्त पंडित—पुरोहित और उपदेशक और दार्शनिक और धर्मवेत्ता उसमें उन्हें सहारा दे रहे हैं — उन्हें समादर मिलता है, वे महान सत्र", बन जाते हैं। लेकिन यह अति अमानवीय है। बेहतर है कि तुम्हारा सारा सम्मान खो जाए लेकिन लोगों को सत्य को कहना चाहिए।

अभी भी समय है, उनका केंसर दूर किया जा सकता है।

अभी भी समय है, परममानव आ सकता है।

दुखी मनुष्य, अपने सारे दुखों सहित, विदा किया जा सकता है। कोई जरूरत नहीं है उन्हें पक्के रखने की। तुम पकड़ रहे हो क्योंकि किसी ने तुम्हें बताया नहीं है कि और बड़ी संभावनाएं हैं : उच्चतर अनुभूतियां, अधिक आनंद; तुम्हारा जीवन एक सतत गीत और नृत्य बन सकता है। तुम खिल सकते हो। तुम्हारे जीवन में सुगंध हो

सकती है बजाय इस बीभत्स चिंता के, इस संताप के, और सारी मितलाहट के जो तुम अपने चारों तरफ लिए फिर रहे हो।

तुम गरुड़ नहीं हो — वह दार्शनिकों से कह रहे हैं — तो न ही तुम आतंक में पड़े प्राण का आनंद जानते हो।

केवल गरुड़ ही ऊंचाइयों के अकेलेपन को जानता है, ऊंचाइयों के मौन को, ऊंचाइयों के खतरों को। लेकिन खतरों को जाने बिना कोई कभी भी विकसित नहीं होता। जरथुस्त्र की मूल शिक्षा है : खतरनाक ढंग से जीओ। सुदूर आकाशों तक गरुड़ के संग जाओ, डरो मत, क्योंकि तुम्हारा आतरिक स्वरूप अमृत है। जो खतरों से भयभीत हैं, वे ही लोग हैं जिन्हें अपने अमृत स्वरूप का कुछ पता नहीं है। उनके भय से उनके अज्ञान का पता चलता है अन्य कुछ भी नहीं।

और जो एक पक्षी न हो उसे अपना घर अतल गर्तों के ऊपर नहीं बनाना चाहिए। लेकिन महा अतलगर्तों के ऊपर घर बनाने का आनंद!.. वह आनंद केवल कुछ साहसी आत्माओं का है। और जरथुस्त्र के अनुसार, धर्म सब के लिए नहीं है। वह केवल गरुड़ पक्षियों के लिए है; वह केवल उनके लिए है जिनकी खतरनाक ढंग से जीने की तैयारी है — क्योंकि केवल वे ही सत्य को पा सकते हैं, केवल वे ही जीवन के अर्थ को पा सकते हैं, केवल वे ही एक दिन परममानव बन सकते हैं।

पालने से लेकर कब्र तक तुम्हारी सारी फिक्र इस बात की है : कैसे जीवित बचे रहना, कैसे सुरक्षित बने रहना, कैसे निरापद बने रहना। और तुम जा कहां रहे हो? — कब्र को। तुम्हारी सारी सुरक्षाएं और तुम्हारे सारे बचाव तुम्हें कब्र की ओर ही ले जा रहे हैं। इसके पहले कि कब्र आए थोड़ा नाच लो, थोड़ा उत्सव मना लो, उल्लास भरे हृदय से गीत गा लो।

खतरों के साथ जीओ!

कब्र तो आएगी ही, चाहे तुम खतरनाक ढंग से जीओ अथवा कुनकुने—कुनकुने। केवल फर्क यह होगा कि : जो व्यक्ति खतरनाक ढंग से जीआ है, जो पूरी तरह जीआ है, त्वरापूर्वक, उसे अपने भीतर के अमर्त्य का पता चल जाएगा। तब कब्र तो आएगी, लेकिन मृत्यु नहीं आएगी। जो व्यक्ति कभी भी समग्रता से नहीं जीआ है, कभी भी अपने भीतर पर्याप्त गहरे में नहीं गया है, क्योंकि वहा बर्फ जैसी ठंढक है, वह भी कब्र तक पहुंचेगा, लेकिन वह जीवन के शाश्वत सिद्धात को नहीं जान पाएगा। वह तो बस आखों में आसू लिए मरेगा क्योंकि वह अपना जीवन नहीं जी पाया है। वह जीआ नहीं है, और मृत्यु आ पहुंची।

जो व्यक्ति समग्रता से जीआ है, वह मृत्यु का भी उत्सव मनाता है — क्योंकि मृत्यु उसके पास अज्ञात की परम चुनौती के रूप में आती है। और वही उसका पूरा जीवन रहा है : अज्ञात की चुनौतियों को स्वीकार करना। वह मृत्यु का स्वागत करेगा और गीत के साथ और नृत्य के साथ मृत्यु में प्रवेश करेगा, क्योंकि वह जानता है कि उसके भीतर कुछ है जो नष्ट नहीं किया जा सकता, जिसकी मृत्यु नहीं होती।

तुम सम्माननीय बने और अकड़े और रीढ़ ताने खड़े रहते हो तुम प्रसिद्ध दार्शनिको! — कोई भी प्रबल हवा या संकल्प तुम्हें आगे की तरफ धक्का नहीं देते।

क्या तुमने कभी भी सागर पर तैरते पाल नहीं देखे हैं गोल हुए और फूलते जा रहे और हवा की तीव्रता के आगे थरथराते?

एक पाल की तरह प्राण की तीव्रता के आगे थरथराती मेरी प्रज्ञा सागर के वक्ष पर यात्रा करती है — मेरी पालतू न बनायी गयी प्रज्ञा!

प्रज्ञा सदा ही गैर—पालतू है।

प्रज्ञा सदा ही अनियंत्रित है। प्रज्ञा सदा ही सहजस्फूर्त है।

ज्ञान एक गुलाम है, पालतू ज्ञान बहुत दरिद्र है। संगणक (कम्प्यूटर) के पास प्रज्ञा नहीं हो सकती; वह तो केवल मनुष्य का, मनुष्य चेतना का विशेषाधिकार है — प्रज्ञा का होना। लेकिन तब तुम्हें अनियंत्रित के लिए गैर—पालतू के लिए, सहजस्फूर्त के लिए तैयार रहना होगा।

लोग स्वतंत्रता की बातें करते हैं लेकिन लोग स्वतंत्रता चाहते नहीं, क्योंकि स्वतंत्रता खतरे लाती है। गुलामी सुविधाजनक है — कोई अन्य तुम्हारे जीवन का उत्तरदायित्व लेता है। लेकिन प्रज्ञा स्वतंत्रता है। तुम्हें कभी भी पता नहीं होता कि अगले क्षण तुम क्या जानने जा रहे हो; तुम उसका पूर्वाभ्यास नहीं कर सकते। वह अचानक आती है। लेकिन वह एक ऐसा आनंद है, एक ऐसी धन्यता, कि जिन्होंने गैर— पालतू प्रज्ञा को नहीं जाना है उन्होंने कतई कुछ भी नहीं जाना है।

… ऐसा जरयुस्त्र ने कहा।

आत्म—विजय की बात

प्यारे ओशो,

(इस हेतु) कि तुम सद् और असद् (अच्छाई और बुराई) के संबंध में मेरी शिक्षाओं को समझ सको मुझे तुम्हें जीवन के संबंध में और समस्त जीवित प्राणियों के स्वभाव के संबंध में मेरी शिक्षाएं कहनी होगी

मैं जीवित प्राणी के पीछे चला हूं मैं महानतम और क्षुद्रतम मार्गों पर चला हूं ताकि मैं उसके स्वभाव को समझ सकूं।

मैने उसकी निगाह सौ गुना करनेवाले दर्पण में पकड़ी जब उसका मुंह बंद शु ताकि उसकी आंख मुझसे बोल सके। और उसकी आंख बोली मुझसे।

लेकिन जहां कहीं भी मुझे जीवित प्राणी मिले वहीं मैने आज्ञाकारिता की भाषा भी सुनी।

समस्त जीवित प्राणी आज्ञाकारी प्राणी हैं।

और यह है दूसरी बात : जो स्वयं की आज्ञा का पालन नहीं कर सकता उसे आशा दी जाएगी वह जीवित प्राणियों का स्वभाव है।

लेकिन यह तीसरी बात है जो मैने सुनी : कि आज्ञा देना अधिक कठिन है आज्ञापालन की

अपेक्षा और केवल इसलिए नहीं क्योकि आज्ञा देनेवाला उन सब का बोझ वहन करता है जो आज्ञा पालन करते हैं और 'कि यह बोझ उसे आसानी से कुचल सकता है।

समस्त आज्ञा देने में एक प्रयोग और एक जोखिम का होना मुझे प्रतीत हुआ : और जीवित प्राणी जब आज्ञा देता है तो वह हमेशा स्वयं को जोखिम में डालता है.....

यह घटना घटी कैसे? — ऐसा मैने स्वयं से पूछा। कौनसी बात फूसलाती है जीवित प्राणी को आज्ञा पालन करने के लिए और आज्ञा देने के लिए और आज्ञा देने में भी आज्ञाकारिता बरतने के लिए?

अब मेरी शिक्षा को सुनो, तुम सर्वाधिक बुद्धिमान मनुष्यो! गंभीरता से परख करो कि क्या मैं जीवन के हृदय में ही और उसके हृदय की जड़ों तक प्रवेश कर गया हूं।

जहां भी मुझे जीवित प्राणी मिला वहीं मुझे शक्ति की आकांक्षा मिली; और मुझे नौकर की आकांक्षा तक में मालिक होने की आकांक्षा मिली।

और जिसे अच्छाई में और बुराई में सर्जक होना है सच में पहले उसे एक विध्वंसक होना होगा और मूल्यों को तोड़ना होगा

इस प्रकार बड़ी से बड़ी बुराई का स्थान भी बड़ी से बड़ी अच्छाई के साथ है : यह हालांकि सृजनात्मक अच्छाई है।

चलो हम इसकीबात करें, तुम सर्वाधिक बुद्धिमान मनुष्यो भले वह एक बुरी बात है। मौन रह जाना और भी बुरा है; सभी दमित सत्य विषाक्त बन जाते हैं।

और हर चीज जो हमारे सत्यों पर टूट पड़ सकती हो — टूट पड़ने दो। अभी भी बहुत से घर

बनाए जाने हैं।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र ने शक्ति की आकाक्षा के मनोविज्ञान के मूल तत्व दे दिये हैं। वह कोई नई बात नहीं है अल्फ्रेड एडलर ने उसका केवल फिर से आविष्कार किया है; और वह उसमें कुछ नयी बात भी नहीं जोड़ी है।

जरथुस्त्र ने हर पहलू से देखा है, विस्तार में, और महत अंतर्दृष्टि से। उनका मनोविज्ञान मनोविज्ञान भर नहीं है — क्योंकि वह मन तक ही सीमित नहीं है — वह एक जीवनदर्शन भी है। उसका क्षेत्र, उसकी सीमा अल्फ्रेड एडलर की अवधारणा की अपेक्षा बहुत विस्तृत है। जरथुस्त्र की तुलना में अल्टेड भर बहुत बचकाने दिखते हैं।

मैं चाहूंगा कि तुम सर्वाधिक मूलभूत बात सबसे पहले समझो, फिर हम जरथुस्त्र को क्या कहना है उसके विस्तार में जा सकते हैं।

पहली बात है : जीवन एक सतत विजय है। हर चीज अपने से पार निकल जाने का प्रयास कर रही है। हर चीज प्रयास कर रही है अपने से बेहतर बनने का, और अधिक सुंदर होने का, और अधिक शक्तिशाली होने का, और अधिक प्रामाणिक होने का। यह विजय कोई ऐसी बात नहीं है जो कभी भी पूरी होती हो।

तुम एक लक्ष्य तक पहुंचते हो, और अचानक तुम पाते हो : वह लक्ष्य तो एक भविष्यत् लक्ष्य तक छलाग लगाने का टीला मात्र था। और तुम्हारे सामने का क्षितिज तुम्हें सदा बुलाता ही रह जाता है, तुम्हें चुनौती देता हुआ, तुम्हें अज्ञात आकाशों की ओर खींचता हुआ।

विजय का यह सिद्धात ही उत्क्राति की नींव है; अन्यथा कहीं कोई उत्क्राति (एवेलूशन) न होती। सब चीजें बस स्थिर रह गयी होतीं, चीजें बस चीजें मात्र होतीं — मृत, पूर्ण, अविकासमान अ—ऊर्ध्वगामी, स्वयं का अतिक्रमण करने का प्रयास न करती हुई।

जरथुस्त्र कहते हैं, (इस हेतु) कि तुम अच्छाई और बुराई (सद् और असद्) के संबंध में मेरी शिक्षाओं को समझ सको मुझे तुम्हें जीवन के संबंध में और समस्त जीवित प्राणियों के स्वभाव के संबंध में मेरी शिक्षाएं कहनी होगी।

मैं जीवित प्राणी के पीछे चला हूं मैं महानतम और छुद्रतम मार्गों पर चला हूं ताकि मैं उसके स्वभाव को समझ सकूं।

मैने उसकी निगाह सौ गुना करनेवाले दर्पण में पकड़ी जब उसका मुंह बंद था ताकि उसकी आंख मुझसे बोल सके। और उसकी आंख बोली मुझसे।

लेकिन जहां कहीं भी मुझे जीवित प्राणी मिले वहीं मैने आज्ञाकारिता की भाषा भी सुनी समस्त जीवित प्राणी आज्ञाकारी प्राणी हैं।

लेकिन जरथुस्त्र के दर्शन में आज्ञाकारिता की अवधारणा आज्ञाकारिता की सामान्य अवधारणा नहीं है जो धर्म हमें सिखाते रहे हैं। धर्म भी आज्ञाकारिता सिखाते हैं। लेकिन आज्ञाकारिता किसके प्रति? उनकी आज्ञाकारिता सदैव किसी ऐसे के प्रति है जो तुमसे बाहर है — किसी ईश्वर के प्रति, किसी पैगंबर के प्रति, किसी मसीहा के प्रति, किसी धर्मग्रंथ के प्रति।

जरथुस्त्र की आज्ञाकारिता जीवन के प्रति आज्ञाकारिता है; वह तुमसे बाहर किसी चीज के प्रति नहीं है। वह स्वभाव है, जीवन का ही स्वभाव, आज्ञापालन करना। जीवन स्वाज्ञापालन करता है।

सारे धर्म तुम्हें उस आज्ञाकारिता से विकर्षित करने का प्रयास करते रहे हैं। वे तुम्हें कह रहे हैं, 'जीवन की मत सुनो, ईश्वर की सुनो। अपने हृदय की मत सुनो, पवित्र ग्रंथ की सुनो। अपने शरीर और उसकी प्रज्ञा की मत सुनो, बल्कि किसी मृत संत की सुनो, किसी काल्पनिक, पौराणिक व्यक्ति की। '

तो याद रहे, जरथुस्त्र और उनकी आज्ञाकारिता ठीक विपरीत हैं उसके जिसे धर्म आज्ञाकारिता कहते हैं। जरथुस्त्र कहते हैं, 'अपनी ही नैसर्गिक प्रवृत्ति की आशा मानो। जहां तक तुम्हारे हृदय का संबंध है अपनी ही भावनाओं की आज्ञा मानो। अपनी बुद्धिमत्ता की आज्ञा मानो जहा तक तुम्हारे मन का संबंध है, और अपने ही

अंतर्बोध की आज्ञा मानो जहां तक तुम्हारी अंतरात्मा का संबंध है। तुम ही पवित्र धर्मग्रंथ हो। तुम्हारे शरीर के पास वह समस्त ज्ञान है जिसकी उसे जरूरत है। तुम्हारे हृदय को प्रेम के समस्त रंग—ढंगों का भलीभांति पता है, और तुम्हारी प्रतिभा अस्तित्व के गुह्यतम रहस्यों को समझने में सक्षम है। तुम्हारा अंतर्बोध तुम्हारी आंतरिकता का अन्वेषण तुम्हारे प्राणों के केंद्र तक करने में सक्षम है।

ये चार सिद्धांत जरथुस्त्र ने पाया कि समस्त जीवन के मूलभूत स्तंभ हैं। लेकिन धर्म लोगों को भटकाते रहे हैं। वे एक सर्वथा अलग ही प्रकार की आज्ञाकारिता सिखा रहे हैं, जो वास्तव में स्वभाव के प्रति अनाज्ञाकारिता है।

लेकिन जहां कहीं भी मुझे जीवित प्राणी मिले वहीं मैने आज्ञाकारिता की भाषा भी सुनी। समस्त जीवित प्राणी आज्ञाकारी प्राणी हैं।

और यह है दूसरी बात : जो स्वयं की आज्ञा का पालन नहीं कर सकता उसे आज्ञा दी जाएगी

जरथुस्त्र इतने स्पष्ट और इतने सरल हैं. यदि तुम अपने ही जीवन की आज्ञा नहीं मानते, तो कोई न कोई व्यक्ति तुम्हें आज्ञा देने ही वाला है। तुम उन सब लोगों के लिए जिम्मेवार हो जो आज्ञा देनेवाले बने हैं, जो तुम्हें दस धमदिश (टेन कमांडमेंदस) दे रहे हैं। जिम्मेदारी किसी अन्य के कंधों पर मत फेंको।

तुम स्वयं की ही आज्ञा मानने में असमर्थ हो; तुम कायर हो, तुम भयभीत हो। कौन जाने? — हो सकता है तुम सही हो, हो सकता है तुम गलत हो। ध्यादा बेहतर है कि अधिक बुद्धिमानों की ही सुनी जाए ज्यादा बेहतर है कि प्राचीन ज्ञान की, धर्मशास्त्रों की, जीवन के उन सिद्धातों की सुनी जाए जो हजारों वर्षों से सिखाए गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अधिक विश्वसनीय हैं तुम्हारे अपने ही शरीर की अपेक्षा, जो लाखों—लाखों वर्ष प्राचीन है — कोई धर्मशास्त्र उतना प्राचीन नहीं है जितना तुम्हारा शरीर।

धर्म तुम से कहते हैं, 'प्राचीन द्रष्टाओं की सुनो'। लेकिन तुम्हारी अपनी ही चेतना कहीं अधिक पुरानी, कहीं अधिक प्राचीन है किसी भी द्रष्टा की अपेक्षा।

कोई भी समझवाला व्यक्ति वह व्यक्ति नहीं होगा जो आशाएं देता है। कोई भी समझवाला व्यक्ति तुम्हारे जीवन को ढालने की कोशिश नहीं करेगा, तुम्हारे जीवन को कोई शैली—विशेष, कई आचरण—विशेष, कोई नैतिकता—विशेष देने की कोशिश नहीं करेगा। समझवाला व्यक्ति केवल तुम्हारी सहायता करेगा अपना ही स्वभाव खोज लेने में।

तुम्हारे शरीर की भाषा वह तुम्हें सिखाएगा, प्रतिभा की भाषा वह तुम्हें सिखाएगा, प्रेम की भाषा वह तुम्हें सिखाएगा, अंतर्बोध की भाषा वह तुम्हें सिखाएगा, लेकिन वह तुम्हें पूरी तरह स्वतंत्र छोको अपनी ही राह पर जाने को और अपनी ही नियति की तरफ बढ़ने को। तुम्हारा प्रारंभ भिन्न हो सकता है, तुम्हारा गंतव्य भिन्न हो सकता है। और वास्तव में, कोई भी दो व्यक्ति एक ही ढंग से कृतार्थ होने को नहीं हैं — वे हो नहीं सकते।

यह घटना घटी कैसे? — ऐसा मैने स्वयं से पूछा। कौन सी बात फुसलाती है जीवित प्राणी को आज्ञा पालन करने के लिए और आज्ञा देने के लिए और आज्ञा देने में भी आज्ञाकारिता बरतने के लिए?

अब मेरी शिक्षा को सुनो तुम सर्वाधिक बुद्धिमान मनुष्यो! गंभीरता से परख करो कि क्या मैं जीवन के हृदय में ही और उसके हृदय की जड़ों तक प्रवेश कर गया हूं!

जहां भी मुझे जीवित प्राणी मिला वहीं मुझे शक्ति की आकांक्षा मिली: और मुझे नौकर की आकांक्षा तक में मालिक होने की आकांक्षा मिली।

निश्चित ही यह एक महान खोज है। यह इस शक्ति की आकाक्षा के कारण है कि वे जो मजबूत हैं, आज्ञा देनेवाले बन जाते हैं और वे जो कमजोर हैं, गुलाम बन जाते हैं। लेकिन निम्नतम गुलाम तक सपना पालता है कि

एक दिन वह भी मालिक होगा। और महानतम मालिक भी सदा भयभीत रहता है अपने ही गुलामों से, कि किसी दिन वह विश्वासघात करेगा।

अडोल्फ हिटलर ने कभी अपने कमरे में किसी को सोने की इजाजत नहीं दी। केवल इस बात से बचने के लिए कि जब वह सोया हो तब कोई कमरे में हो, वह लगभग अपने पूरे जीवन कुवारा रहा — केवल आत्महत्या करने के पूर्व के तीन घंटों को छोड्कर। क्या था भय? उसके कोई मित्र न थे — यहां तक कि जो लोग उसके बहुत निकट समझे जाते थे उनसे भी वह उतना दूर रहा जितना संभव था।

उसने मैक्यावेली की सलाह का समग्रता से अनुसरण किया : जो कोई भी तुम्हारे निकट है, एक दिन तुम्हें पलट देगा। मित्रों से सावधान! शत्रु इतना खतरनाक नहीं है, क्योंकि शत्रु काफी दूर है; असली खतरा मित्र है, क्योंकि वह इतने निकट है। किसी भी क्षण उसकी तलवार तुम्हारी गर्दन पर हो सकती है।

दुनिया में कई ढंगों से पदानुक्रम है। वह पदानुक्रम दोहरा पार्ट अदा करता है : कोई व्यक्ति तुमसे ऊपर है — वह तुम्हें आज्ञा देता है; कोई व्यक्ति तुमसे नीचे है — तुम उसे आज्ञा देते हो।

पदानुक्रम एक उद्देश्य पूरा करते है। और पदानुक्रम केवल सरकारों में ही, धर्मसंगठनों में ही, राजनैतिक दलों में ही नहीं हैं, पदानुक्रम घरों में, परिवारों में भी है। यदि तुम सूक्ष्मता से देखो, तुम पाओगे कि तुम बहुत सारे पदानुक्रमों के स्थायी सदस्य हो। बहुत सारे रास्ते तुमसे होकर गुजरते हैं... कोई तुमसे ऊंचा है, कोई तुमसे नीचा है।

यह पूरा खेल जो चलता जाता है वह शक्ति की आकाक्षा के कारण है। सब इसके अंतर्गत हैं। वह जीवन का अंतर्भूत नियम है।

जीवन ऊर्जा है, सागर की लहरों की तरह, जो बार—बार आती रहेगी और तट पर, चट्टानों पर टकरा कर चूर—चूर होती रहेगी, जिसके पीछे दूसरी लहरें आती रहेंगी। शाश्वत काल से यह ऐसा ही रहा है।

जीवन भी एक अदृश्य ऊर्जा है जो बस केवल एक ही कामना से चलती चली जाती है — स्वयँ पर विजय पाने की। वह और ऊंचे उठना चाहती है, वह और अधिक शक्तिशाली होना चाहती है, वह और अधिक सफल होना चाहती है। जो कुछ भी वह है, वह उस बिंदु से और ऊंचे पहुंचना चाहती है। जीवन के सागर की ऊर्जा ठीक वैसी ही है। लहरें चलती चली जाती हैं — उद्देश्य मत फो! वह सागर का स्वभाव ही है, और वह जीवन का स्वभाव ही है।

जरथुस्त्र कहते हैं सत्य की आकाक्षा भी अन्य कुछ नहीं बल्कि शक्ति की आकांक्षा है, क्योंकि सत्य को जानने से तुम्हारे पास अस्तित्व की महानतम शक्ति होगी। वह हर कामना को और हर अभीपसा को, यहा तक कि संबुद्धत्व की अभीप्सा को भी, शक्ति की आकाक्षा बना देते हैं — क्योंकि जैसे ही तुम संबुद्ध होते हो, तुम्हारे पास स्वयं पर विशाल शक्ति होगी, अपनी चेतना पर परम शक्ति होगी। जरथुस्त्र गलत नहीं कहे जा सकते। उन्होंने एक बहुत संकेत—शब्द खोज लिया है : "शक्ति की आकांक्षा "।

और जिसे अच्छाई में और बुराई में सर्जक होना है: सच में पहले उसे एक विध्वंसक होना होगा और मूल्यों को तोड़ना होगा

इस प्रकार बड़ी से बड़ी बुराई का स्थान भी बड़ी से बड़ी अच्छाई के साथ है : यह बहरहाल सृजनात्मक अच्छाई है।

चलो हम इसकी बात करें बुद्धिमान मनुष्यो भले वह एक बुरी बात है। मौन रह जाना और भी बुरा है; सभी दमित सत्य विषाक्त बन जाते हैं।

वह कह रहे हैं, हो सकता है मैं समझा न जाऊं। हर संभावना है कि मैं गलत समझा जाऊं। लेकिन मुझे इसे कहना ही है, क्योंकि मौन रह जाना और भी बुरा है।

.... सभी दमित सत्य विषाक्त बन जाते हैं।

और हर चीज जो हमारे सत्यों पर टूट पड़ सकती हो — टूट पड़ने दो! अभी भी बहुत से घर बनाए जाने हैं!

वह कह रहे हैं कि सृजन के मार्ग पर तुम्हें विध्वंसात्मक भी होना पडता है; और यदि तुम्हें उच्चतर मूल्य चाहिए तो तुम्हें निम्नतर मूल्यों को नष्ट करना ही होगा। यदि तुम बेहतर मकान बनाना चाहते हो तो तुम्हें पुरानों को नष्ट करना ही होगा। वास्तविक सृजनकर्ता प्राय: सदैव ही विध्वंसक है।

वह इसे कह रहे हैं क्योंकि वह पुराने मूल्यों को नष्ट कर रहे हैं, और वह एक नया मूल्य निर्मित कर रहे हैं। नया मूल्य है, शक्ति की आकांक्षा। उस नये मूल्य के लिए अन्य सब कुछ का बलिदान किया जा सकता है। जीवन तक; अच्छाई और बुराई की तुम्हारी समस्त अवधारणाएं तुम्हारी नैतिकताएं तुम्हारा धर्म, तुम्हारा दर्शन तक — किसी की कोई कीमत नहीं।

परममानव का एक ही धर्म है : शक्ति की आकांक्षा का धर्म।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

विद्वानों की बात

प्यारे ओशो,

मैं विद्वानों के घर से बाहर निकल आया हूं और अपने पीछे जोर से दरवाजा बंद कर दिया हूं। मेरी आत्मा उनकी भोजन— मेज पर बहुत काल तक भूखी बैठी रही; मैं उस तरह शिक्षित नहीं हुआ हूं जैसे वे हुए हैं ज्ञान फोड़ने के लिए जैसे कोई काष्ठफल (नट) फोड़ता है

मैं स्वतंत्रता को और ताजी मिट्टी की हवाओं को प्रेम करता है उनकी प्रतिष्ठाओं और

सम्माननीयताओं पर सोने के बजाय मैं वृषचर्मों पर सोऊंगा।

मैं अपने ही विचार से बहुत ज्यादा उत्तप्त हूं और झूलस गया हूं : वह बहुधा मुझे निःश्वास कर देने के करीब होता है। तब मुझे खुली हवा में और सब भूल— धवांस भरे कमरों से दूर निकल जाना होता है।

लेकिन वे ठंढी अव में ठंडे (भावसून्य) होकर बैठते हैं : वे हर चीज में मात्र दर्शक रहना चाहते हैं और वे खयाल रखते हैं वहां न बैठने का जहां सीढ़ियों पर सूरज तपता है।....

जब वे स्वयँ को बुद्धिमान के रूप में उपलब्ध कराते हैं उनके छुद्र कथन और सत्य मुझे कंपा देते हैं : उनकी बुद्धिमत्ता प्राय: ऐसी गंध देती है जैसे वह गंदे दलदलों से आयी हो....

हम एक दूसरे के लिए अजनबी हैं और उनके सद्गुण मेरी रुचि के और भी विपरीत हैं बजाय उनके असत्यों और छली पांसों के।

और जब मैं उनके बीच जीआ मैं उनके ऊपर जीआ। उसके लिए वे मुझसे क्रुद्ध हुए।

वे नहीं जानना चाहते थे कि कोई व्यक्ति उनके सिरों के ऊपर चल रहा था; और इसलिए उन्होंने अपने सिरों और मेरे बीच लकड़ी भूल और कूड़ा— कचरा भर लिया।

इस प्रकार उन्होने मेरे कदमों की आवाज को दबा दिया : और तब से लेकर सर्वाधिक विद्वतापूर्ण मुझे सर्वाधिक कम सुन पाया है।....

लेकिन उसके बावजूद मैं अपने विचारों सहित उनके सिरों के ऊपर से चलता हूं, और यदि मुझे अपनी गलतियों पर भी चलना पडे तो भी मैं उनके और उनके सिरों के ही होऊंगा।

क्योकि मनुष्य समान नहीं हैं : ऐसा न्याय कहता है। और मैं जिसकी अभिलाषा करता हूं हो सकता है वे उसकी अभिलाषा न करें।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण भेद जो व्यक्ति को करना चाहिए वह है ज्ञान और जानने के बीच। ज्ञान सस्ता और आसान है, जानना महंगा है, जोखिमपूर्ण, उसके लिए साहस की जरूरत है। ज्ञान बाजार में उपलब्ध है। ज्ञान के लिए विशेष बाजार हैं — विश्वविद्यालय, महाविद्यालय। जानना तुम्हारे अपने ही अंतस के अलावा कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

जो व्यक्ति जानने में उत्सुक है वह ज्ञान के त्याग से प्रारंभ करता है, क्योंकि ज्ञान बाधा है, वह एक नकली सिक्का है। और इसके पहले कि असली का बोध हो, नकली को हटाया जाना चाहिए। वह उस सब कुछ को छोडता है जो उसका स्वयं का नहीं है। पंडित होने के बजाय अज्ञानी 'होना बेहतर है क्योंकि कम से कम अज्ञान तुम्हारा तो है। इसके लिए ज्यादा साहस की जरूरत होती है बजाय धन—दौलत त्यागने के, राज्य त्यागने के, परिवार त्यागने के, समाज त्यागने के, क्योंकि वे सब के सब बाहर हैं। ज्ञान तुम्हारे मस्तिष्क के भीतर इकट्ठा होता है। जहां कहीं भी तुम जाओ... गहन हिमालय में भी वह तुम्हारे साथ होगा।

ज्ञान त्यागने का अर्थ है एक गहन आतरिक सफाई और वही मेरा आशय है ध्यान से। ध्यान कुछ भी नहीं है सिवाय उधार ज्ञान त्यागने के और अपने अज्ञान के प्रति पूरी तरह सजग होने के। इससे एक कायापलट आता है। जिस क्षण तुम अज्ञान के प्रति सजग होते हो, अज्ञान एक इतने बडे परिवर्तन से गुजरता है कि जब तक यह तुम्हें घटित ही न हो यह अविश्वसनीय ही बना रहता है। अज्ञान ही तुम्हारी निदाषिता बन जाता है। प्रज्ञावान व्यक्ति भी कहता है, 'मैं नहीं जानता। '

जरथुस्त्र के अनुसार, चेतना की सर्वोच्च दशा एक शिशु की सी है। तुम एक शिशु के रूप में पैदा होते हो लेकिन तब तुम अज्ञानी हो। तुम बहुत ज्ञान से, बहुत स्मृति से गुजरोगे और यदि तुम पर्याप्त सौभाग्यशाली हो तो एक दिन तुम देखोगे कि यह सब मिथ्या है — क्योंकि यह तुम्हारा नहीं है।

हो सकता है बुद्ध ने जाना हो, हो सकता है जीसस ने जाना हो, हो सकता है कृष्ण ने जाना हो, लेकिन उनका ज्ञान मेरा जानना नहीं बन सकता। उनका जीवन मेरा जीवन नहीं बन सकता, उनका प्रेम मेरा प्रेम नहीं बन सकता, कैसे उनका ज्ञान मेरा ज्ञान बन सकता है? मुझे स्वयं से ही खोजना और तलाशना होगा। मुझे एक अभियानकर्ता बनना होगा, अज्ञात का एक खोजी। मुझे अछूते मार्गों पर जाना होगा, अमानचित्रित महासागरों में उतरना होगा। और मुझे एक कृतसंकल्प इच्छा के साथ सब कुछ दाव पर लगाना होगा... कि यदि औरों को सत्य उपल्ब्ध हुआ है, कोई कारण नहीं है कि क्यों अस्तित्व मुझ पर गैर—मेहरबान होगा।

बहुत थोड़े से सौभाग्यशाली लोग अपना उधार ज्ञान छोड़ना प्रारंभ करते हैं। और जैसे वे अपना उधार ज्ञान छोड़ना शुरू करते हैं चक्र उनके बचपन की ओर लौटना शुरू हो जाता है। इस चक्र की पूर्णता तब आती है जब अज्ञान ज्योतिर्मय हो उठता है। जब अज्ञान का जागरण से मिलन होता है, तब मनुष्य के समूचे अनुभव का महानतम विस्फोट घटित होता है : तुम एक अहंकार के रूप में विदा हो जाते हो। अब तुम एक शुद्ध, सरल अस्तित्व भर हो — विशुद्ध "होनापन", किसी भी बात के प्रति किसी भी दावे से रहित।

ऐसे ही क्षण में सुकरात ने कहा, 'मैं कुछ भी नहीं जानता'। ऐसी ही अवस्था में बोधिधर्म ने घोषणा की, 'मैं कुछ नहीं जानता। और इसके अलावा, मेरा 'मैं' केवल एक भाषागत सुविधा है, मेरे भीतर कोई सत्ता नहीं है जो कह सके. 'मैं'। मैं केवल इसका उपयोग कर रहा हूं क्योंकि उसके बिना तुम समझ न पाओगे।

जरथुस्त्र के वक्तव्यों पर बहुतगहराईसे विचार किये जाने की जरूरत है। मैं विद्वानों के घर से बाहर निकल आया हूं। और अपने पीछे जोर से दरवाजा बंद कर दिया हूं। केवल इतनी ही बात नहीं है किं वह घर से बाहर निकल आए हैं, ध्यान रखना चाहिए कि जोर इस बात पर है कि उन्होंने अपने' पीछे जोर से दरवाजा बंद किर दिया है। विद्वता से उनका संबंध खतम हो चुका है। यह वह जगह नहीं है जहा सत्य मिलता है। यह वह जगह है जहा सत्य पर चर्चा की जाती है; यह वह जगह है जहां सत्य के संबंध में हजारों परिकल्पनाएं पैदा की जाती हैं; यह वह जगह है जहा किसी निष्कर्ष पर कभी नहीं पहुंचा गया है।

हजारों वर्षों से विद्वानगण चर्चा करते आए हैं, सूक्ष्म विस्तारों में, लेकिन कभी भी निष्कर्ष नहीं निकला है। विद्वान लोग रिक्त सीपिया हैं — आवाज तो वे बहुत करते हैं लेकिन वह आवाज अर्थहीन है। वे तर्क—वितर्क तो बहुत करते हैं लेकिन परिकल्पना जिसके संबंध में वे तर्क—वितर्क कर रहे हैं फिर भी एक परिकल्पना ही रह जाती है; कोई तर्क—वितर्क किसी परिकल्पना को वास्तविकता नहीं बना सकते। और सर्वोपरि रूप से, कैसे तुम किसी चीज के संबंध में विचार—विमर्श कर सकते हो जिसका तुमने कभी अनुभव नहीं किया है?

और वास्तविक अनुभव शब्दरहित है। वह एक स्वाद है, वह एक पोषण है, वह तुम्हें परितृप्त करता है। प्रेम शब्द प्रेम नहीं है। प्रेम तुम्हारे हृदय का एक गहन नृत्य है, तुम्हारी आत्मा का हर्षोल्लास है, तुम्हारे

जीवनरसों का छलकाव है, उनके साथ एक सहभागिता है जो ग्रहणशील व उपलब्ध हैं। लेकिन प्रेम शब्द का इससे कोई वास्ता नहीं है।

जब वे स्वयं को बुद्धिमान के रूप में उपलब्ध कराते हैं उनके छुद्र कथन और सत्य मुझे कंपा देते हैं : उनकी बुद्धिमत्ता प्राय: ऐसी गंध देती है जैसे वह गंदे दलदलों से आयी हो।

उसमें से बास आती है, वह दुर्गंध देती है, वह वास्तव में बीभत्स है। यदि तुमने स्वयं कुछ जाना है तो तुम देख सकते हो कि समस्त तथाकथित विद्वान लाशें ढो रहे हैं। और वे डींगें मार रहे हैं कि किसकी लाश सर्वाधिक प्राचीन है। जितना ज्यादा सडी हुई कोई लाश है, जितना ज्यादा प्राचीन कोई धर्मग्रंथ है, उतना ही महान विद्वान है।

निश्चित ही विद्वाने लोग दूर्गंध देते है। लेकिन सीधा सरल व्यक्ति—जो धूल भरी पुस्तको के बोझ से अब और अधिक लदा हुआ नहीं है, जो विद्वता के धूल—धवांस भरे कमरों में अब और अधिक नहीं रह रहा है, जो खुले में आ गया, आकाश तले — उसके आसपास एक सुवास होती है। निर्दोषिता की एक सुगंध होती है, ठीक जैसे कि ज्ञान की एक बीभत्स गंध होती है, क्योंकि ज्ञान लाशों से आता है और जानना जीवित जीवनस्रोत से आता है।

हम एक दूसरे के लिए अजनबी है: और उनके सद्‌गुण मेरी रुचि के और भी विपरीत हैं बजाय उनके असत्यों और छली पांसों के।

ये सब बातें वह विद्वानों के बारे में कह रहे हैं, उन लोगों के बारे में जो दुनिया में महान लोगों के रूप में मान्य हैं। समस्त रहस्यदर्शी विद्वानों के लिए अजनबी हैं, इस सरल से कारणवश कि रहस्यदर्शी विश्वास नहीं करता, रहस्यदर्शी सोच—विचार नहीं करता, रहस्यदर्शी अनुभव करता हैं। पानी के बारे में सोचना एक बात है ... तुम पानी के संबंध में ग्रंथ लिख सकते हो, और तुम एक महान विद्वान के रूप में जाने जाओगे, तुम्हें अपने शोध—प्रबंध पर पीएच डी. मिल सकती है, लेकिन तुम्हारी पुस्तक अथवा तुम्हारा ज्ञान प्यास नहीं बुझा सकता। और जो व्यक्ति पानी पीता है उसे यह जानना जरूरी नहीं है कि इसका रासायनिक फार्मूला एच टू ओ है — क्योंकि "एच टू ओं' तुम्हारी प्यास नहीं बुझा सकता

रहस्यदर्शी की फिक्र प्यास बुझाने की है, अपने प्राणों को पोषण देने की है, अपनी आतरिकता का अन्वेषण करने और अस्तित्व के साथ तथा उसमें शामिल सब कुछ के साथ एक तालमेल बनाने की है.। और उसमें समस्त खुशियां शामिल हैं, और समस्त सौंदर्य, और समस्त आशिष, और समस्त मंगल। विद्वान इन चीजों के संबंध में केवल सोचने भर से संतुष्ट है। वह वास्तव में प्यासा नहीं है; अन्यथा वह पानी खोजता, पानी पर ग्रंथ नहीं; वह कुएं पर जाता, पुस्तकालय में नहीं। रहस्यदर्शी कुएं पर जाता है और विद्वान पुस्तकालय जाता है। वे एक दूसरे के प्रति परम अजनबी हैं।

सोचना एक भांति है, क्योंकि तुम सोचते तभी हो जब तुम जानते नहीं। जब तुम एक सुंदर सूर्यास्त देखते हो, तो क्या तुम सोचते हो? बहुत संभवत:, पुरानी आदतवश, तुम सोचने लगते हो। तुम अपने भीतर ही भीतर कहने लगते हो, "कितना सुंदर सूर्यास्त! " लेकिन तुम्हारे शब्द बाधा बन रहे हैं। वह सूर्यास्त के साथ एक सौहार्दमय संबंध—सेतु में होने का उपाय नहीं है। समस्त सोचना रुक जाना चाहिए। तब तुम वहा होओगे — सूर्यास्त के साथ एक गहन लयबद्धता में, लगभग उसका अंग ही हो गये हुए। और तब तुम उसके सौंदर्य को जानोगे। "यह सुंदर " ऐसा दोहराने से नहीं — वे शब्द उधार है। तुमने उन्हें सुना है, और तुम उनको यह दिखलाने भर के लिए कह रहे हो कि तुम्हारे पास एक महान सौंदर्यबोध है।

लेकिन तुम वहां नहीं हो, तुम्हारा मन कहीं और भटक रहा है। यदि सौंदर्य तुम्हारे मन को ठहरा नहीं सकता तो तुम नहीं जानते कि सौंदर्य क्या है। यदि एक महान नृत्य तुम पर ध्यान नहीं उतार सकता, तो तुम नहीं जानते कि नृत्य को कैसे देखना। हम मिथ्याचारों से भरे हुए हैं।

और जब मैं उनके बीच जीआ मैं उनके ऊपर जीआ। उसके लिए वे मुझसे क्रुद्ध हुए। वे नहीं जानना चाहते थे कि कोई व्यक्ति उनके सिरों के ऊपर चल रहा था और इसलिए उन्होंने अपने सिरों और मेरे बीच लकडी धूल और कूड़ा— कचरा भर लिया।

इस प्रकार उन्होंने मेरे कदमों की आवाज को दबा दिया. और तब से लेकर सर्वाधिक विद्वतापूर्ण मुझे सर्वाधिक कम सुन पाया है।

लेकिन उसके बावजूद मैं अपने विचारों सहित उनके सिरों के ऊपर से चलता हूं; और यदि मुझे अपनी गलतियों पर भी चलना पड़े तो भी मैं उनके और उनके सिरों के ऊपर ही होऊंगा।

क्योकि मनुष्य समाननही हैं....

यह ऐसा महान वक्तव्य है। खासकर आज, क्योंकि साम्यवाद ने इसे लगभग सार्वभौम रूप से स्वीकृत बना दिया है कि सब मनुष्य समान हैं। और यह सही बिलकुल नहीं है : दो मनुष्य भी समान नहीं हैं। समानता एक झूठा विचार है।

हर मनुष्य अद्वितीय है। वह अपने आप में एक कोटि है।

मैं समझता हूं कि हर व्यक्ति को अपनी अद्वितीयता में विकसित होने के लिए समान अवसर दिया जाना चाहिए लेकिन कोई भी मनुष्य समान नहीं हैं। समानता हमारा समकालीन अंधविश्वास है — नवीनतम और सर्वाधिक व्यापक रूप से स्वीकृत, उन लोगों द्वारा भी जो साम्यवादी नहीं हैं; उन्होंने भी इसे स्वीकृत किया है, क्योंकि उन्होंने इसका अस्वीकार नहीं किया है।

गैर—साम्यवादियों के पास भी साहस नहीं है यह कहने का कि मनुष्य समान नहीं है, क्योंकि वे भयभीत हैं कि लोगों की भीड़ें नाराज हो जाएंगी। भीड़ें बहुत खुश होती हैं यह जानकर कि मनुष्य समान हैं, कि तुम अलबर्ट आइंस्टीन के बराबर हो, कि तुम बर्ट्रंड रसल के बराबर हो, कि तुम मार्टिन बूबर के बराबर हो, कि तुम ज्या पाल सार्त्र के बराबर हो। जनसमूह इस विचार से बहुत खुश हैं। यह इतना तृप्तिदायी है ' अहंकार के लिए कि जो क्षे साम्यवादी नहीं हैं वे तक भयभीत हैं कहने में कि मनुष्य समान नहीं हैं। लेकिन मैं जरथुस्त्र के साथ समग्रत: राजी हूं : मनुष्य समान नहीं हैं।

जरथुस्त्र सही हैं : ऐसा न्याय कहता है बेहतर समाज की मेरी अपनी ही अवधारणा है : वह सब को समान अवसर उपलब्ध कराएगा, लेकिन समान अवसर उन लोगों को असमान होने के लिए होगा, अपनी अद्वितीयता में विकसित होने के लिए।

मेरे लिए, साम्यवाद का अर्थ है सब के लिए समान अवसर, मनुष्य की समानता नहीं। जरथुस्त्र के पास पच्चीस सदियों पूर्व यह अंतर्दृष्टि थी। यह नितांत न्यायोचित व ईमानदार बात है कि फिर से मनुष्य को बलिदान नहीं किया जाना चाहिए समानता के नाम पर। वह बहुत बार बलिदान किया जा चुका है अलग—अलग नामें से, अलग— अलग मंदिरों में, अलग—अलग ईश्वरों के समक्ष। अब वह साम्यवाद के मंदिर में बलिदान किया जा रहा है — एक पवित्र किताब, दास केपिटल, के सामने, ईश्वर की एक त्रयी के सामने. मार्क्स, एंजिल्स और लेनिन।

यह इतनी सीधी सूाई बात है, हर व्यक्ति जानता है कि कोई समान नहीं है। लेकिन मनुष्य की ईर्ष्या... महानों के खिलाफ छुद्र मनुष्य की ईर्ष्या, महामानवों कै खिलाफ छुद्र मनुष्य की ईर्ष्या कारण बनती है उनके

जोर से चीखने की — और निश्चित ही वे बहुसंख्यक हैं — कि मनुष्य समान हैं, और समानता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। और उन्हें पता नहीं है कि वे कुछ ऐसी बात कह रहे हैं जो आत्महत्या करने के बराबर है। विकसित होने के लिए समान अवसर बिलकुल ठीक है। और व्यक्तियों की अद्वितीयता का स्वीकार समाज को समृद्ध करता है, उसे हर प्रकार के फूलों की विविधता प्रदान करता है — भिन्न—भिन्न रंगों के, भिन्न—भिन्न सुगंधों के।

जरथुस्त्र विरले हैं, इस अर्थ में कि उन्होंने बहुत दूर की चीजें देख ली थीं; क्योंकि उनके दिनों में कोई भी मनुष्य की समानता की बात नहीं कर रहा था। मार्क्स अभी आने को थे — पच्चीस सदियों बाद। लेकिन जितने ज्यादा ध्यानपूर्ण तुम हो, जितने ज्यादा मौन, उतनी ही ज्यादा स्पष्ट तुम्हारी दृष्टि हो जाती है, और वह सुदूर भविष्य में देख सकती है। यह वक्तव्य कार्ल मार्क्स के खिलाफ है; यद्यपि जरथुस्त्र को किसी कार्ल मार्क्स विशेष का कोई पता नहीं है।

……..ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

कवियों की बात

प्यारे ओशो,

'जब से मैने शब्रैं को बेहतर रूप से जाना है ' जरथुस्त्र ने अपने एक शिष्य से कहा 'आत्मा मेरे लिए केवल अलंकारिक रूप से आत्मा रही है; और वह सब कुछ जो "नित्यं" है — वह भी केवल एक "बिंब" भर रहा है। '

'मैने एक बार पहले भी आपको यह कहते सुना है ' शिष्य ने जवाब दिया; 'और तब आपने आगे कहा था : "लेकिन कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं"। आपने क्यों ऐसा कहा कि कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं?'

'तथापि जरथुस्त्र ने एक बार तुमसे क्या कहा? कि कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं? — लेकिन जरथुस्त्र भी एक कवि है।

'क्या तुम अब विश्वास करते हो कि वह सत्य बोला? क्यों तुम यह विश्वास करते हो?' शिष्य ने जवाब दिया : 'मैं जरयुस्त्र में विश्वास करता हूं। ' लेकिन जरथुस्त्र ने अपना सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया।

विश्वास मुझे धन्यभागी नहीं बनाता (उन्होंने कहा), और स्वयं मुझमें विश्वास तो सबसे कम।

लेकिन मंजूर किया कि किसीने पूरी गंभीरता में कहा है कि कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं : वह (व्यक्ति) सही है — निश्चित हम बहुत ज्यादा झूंठ बोलते है।

कवियों से मैं थक गया हूं पुराने और नये : वे सब के सब मुझे सतही और उथले समुद्र प्रतीत उन्होने पर्याप्त गहराई से विचार नहीं किया है : इसलिए उनका भाव___गहराइयों की थाह नही ले पाया है।

कवि के प्राण दर्शक चाहते हैं भले ही वे केवल भैसें हों!

लेकिन मैं ऐसे प्राण से थक गया हूं : और मैं उस दिन को आता हुआ देखता हूं जब यह स्वयं से थक जाएगा।

पहले ही मैं कवियों को रूपांतरित हुआ देख चुका है मैने उनको अपनी निगाह अपने आप पर करते देखा है।

मैं प्राणों के पश्चात्तापी प्रगट होते देख चुका हूं : वे कवियों के भीतर से ही जन्मे।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र इतने ईमानदार व सत्यनिष्ठ हैं कि वह स्वयं को भी माफ नहीं करेंगे, यदि उनके द्वारा कही गयी कोई ऐसी बात है जो नितांत सच नहीं है। और सत्य के संबंध में समस्या यह है, तुम उसे उसकी संपूर्णता में नहीं कह सकते।

ज्यादा से ज्यादा तुम किसी पहलू की तरफ इशारा कर सकते हो, कुछ झलकों की तरफ संकेत कर सकते हो। लेकिन उस व्यक्ति के लिए जिससे तुम बात कर रहे हो, ये टुकड़े नितांत उलझनकारी बने रहेंगे, क्योंकि वह अंतरालों को नहीं भर सकता। उन अंतरालों को भरने का, और अपने वक्तव्यों को उतना समग्र, उतना सुव्यवस्थित करने का रहस्यदर्शी का कर्तव्य है जितना संभव हो। वहीं है स्रोत झूठों का। रहस्यदर्शी को झूठ बोलना ही पड़ता है, वह अपरिहार्य है।

उसकी जिम्मेदारी रहस्यदर्शी की नहीं है, यह सत्य का स्वभाव ही है कि वह ज्ञान को, भाषा को, अभिव्यक्ति को पूर्णत: उपलब्ध नहीं है। बहुधा, रहस्यदर्शियों ने काव्य को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चुना है, इस सरल से कारणवश कि पद्य में झूठ बोलना ज्यादा आसान है गद्य में झूठ बोलने की अपेक्षा।

इसलिए रहस्यदर्शियों ने काव्य को एक उपाय के रूप में चुना है। काव्य का एक बड़ा गुण यह है कि उसे नितांत सच होने की जरूरत नहीं है; उसे केवल नितांत सुंदर होने की जरूरत है। और झूठ सुंदर हो सकते हैं, उसमें कोई समस्या नहीं है। कभी— कभी तो वे सत्य से भी बढ़कर सुंदर हो सकते हैं। काव्य कवि को मौका देता है अंतरालों को सुंदर फूलों से सजा देने के लिए और तुम्हें ऐसा बोध देने के लिए कि तुम्हें विचारों की एक पूरी व्यवस्था दी जा रही है, अपनी सम्पूर्णता में।

जरथुस्त्र ऐसे ईमानदार व्यक्ति हैं कि जो वह कवियों के बारे में कहते हैं, कि वे बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं ... वह अपने शिष्य को याद दिलाना नहीं भूलते कि "जरथुस्त्र भी एक कवि है"।

यह प्रामाणिकता उन्हें महानतम व्यक्तियों में एक बना देती है जिन्होंने कभी भी अंतराकाश में और मनुष्य के रहस्यों में यात्रा की है। और यदि कभी वे झूठ भी बोलते हैं, उनके झूठ अन्य कुछ नहीं बस कदम रखने के पत्थर हैं; वे सत्य के मंदिर तक ले जाते हैं। वे मंदिर नहीं हैं, सच, लेकिन वे मंदिर तक ले जाते हैं। वे झूठ हो सकते हैं, लेकिन वे तीरों की तरह हैं, सुदूर सत्य की तरफ इशारा करते हुए। और झूठ जो तुम्हें सत्य को समझने में मदद कर सके वह झूठ मात्र नहीं है — उसकी निंदा मत करना। वह सच नहीं है लेकिन वह सत्य को पाने में महान रूप से सहायक रहा है।

जरथुस्त्र कह रहे हैं.... और इस शाम का प्रारंभिक वक्तव्य सुदूरगामी प्रभावों वाला है :

'जब से मैने शरीर को बेहतर रूप से जाना है: जरथुस्त्र ने अपने एक शिष्य से कहा 'आत्मा मेरे लिए केवल अलंकारिक रूप से आत्मा रही है; और वह सब कुछ जो "नित्य" है — वह भी केवल एक "बिंब " भर रहा है।'

वह कह रहे हैं, जब से मैंने शरीर को उसकी समग्रता में जाना है, प्राण, आत्मा, स्व मेरे द्वारा केवल अलंकारिक रूप से इस्तेमाल किये गये हैं — क्योंकि जिसे हम आत्मा कहते हैं वह शरीर से अलग नहीं है।

यह आसानी से समझा जा सकता है यदि मैं कहूं कि शरीर तुम्हारी बाहरी आत्मा है और आत्मा तुम्हारा भीतरी शरीर है। लेकिन है वह एक घटना—क्रिया (फेनामिना), है वह एक ऊर्जा। तुम्हारे घर के बाहर का अवकाश (स्पेस) और तुम्हारे घर के भीतर का अवकाश (स्पेस) दो अवकाश नहीं हैं — बाहर का अवकाश और भीतर का अवकाश एक और नितांत इकहरा तथ्य (फेनामिना) हैं।

जरथुस्त्र कह रहे हैं, शरीर को उसकी समग्रता में समझने के प्रयास में मुझे पता चला है कि आत्मा अन्य कुछ नहीं बल्कि उसी ऊर्जा की अभिव्यक्ति है जिसका शरीर है। एक ही ऊर्जा के दो पहलू हैं. बाहर वह दृश्य है, भीतर वह अदृश्य है। वह उस द्वैत को समाप्त करने की कोशिश कर रहे हैं जिसे सारे धर्मों ने मनुष्य के मन में निर्मित किया है। वह भौतिकवादियों और अध्यात्मवादियों के बीच फूट को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं।

उनका प्रयत्न एक विशाल संश्लेषण के लिए है — कि आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने के लिए तुम्हें शरीर को सताने की जरूरत नहीं है। उलटे, शरीर को इतना स्वस्थ, इतना दुरुस्त होना है जितना संभव हो, क्योंकि वह तुम्हारे लिए सहायक होगा तुम्हारे अंतरतम अदृश्य जगत में प्रवेश के लिए। उनमें कोई संघर्ष नहीं है, उनमें एक गहन सामंजस्य है।

जरथुस्त्र सामंजस्य सिखाते हैं। जरथुस्त्र के अलावा हर व्यक्ति संघर्ष सिखाता रहा है। जैसे ही कोई व्यक्ति शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष में यकीन कर लेता है, वह अपने खिलाफ ही बंटा हुआ व्यक्ति बन जाता है। उसकी पूरी ऊर्जा स्वयं से ही लड़ने में लग जाती है। यह दयनीय स्थिति जिसमें मनुष्यता पड़ी हुई है वह मनुष्य के भीतर के इस द्वंद्व की चरम परिणति है।

जरथुस्त्र कह रहे हैं कि जीव, आत्मा और ये सारे शब्द सुंदर शब्द हैं, लेकिन वे केवल बिंबात्मक हैं — वे केवल अलंकार हैं, वे केवल काव्यात्मक हैं। किसी संघर्ष में मत फंसो। तुम एक अखंड इकाई हो, तुम एक सजीव

इकाई हो; इसलिए किसी अंतर्कलह की जरूरत नहीं है। और जैसे ही तुम किसी अंतर्कलह में नहीं रह जाते, तुम्हारी पूरी ऊर्जा परममानव की दिशा में ऊर्ध्वगमन के लिए उपलब्ध है। स्वयं से लडते हुए तुम विजय नहीं कर सकते।

जरथुस्त्र कह रहे हैं कि वह शरीर और आत्मा को इकाई के रूप में चाहते हैं, ईश्वर और संसार को इकाई के रूप में चाहते हैं। केवल एक की सत्ता है। क्या नाम तुम उसे देते हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

यदि तुम्हें उसे ईश्वर कहने से बड़ा प्रेम है — कहो। यदि तुम पदार्थ शब्द से मनोग्रस्त हो और उसे पदार्थ कहना चाहते हो — कहो। तुम्हारे पदार्थ में कुछ आध्यात्मिक गुण होगा, तुम्हारे पदार्थ में होगी। लिए जो कहना चाहते, उन्हें भी स्मरण रखना है कि, तुम्हारे ईश्वर में पदार्थ का विस्तृत जगत समाया होगा।

वह ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो शब्दों के लिए झगड़ा करेंगे, लेकिन वह इशारा करना चाहते हैं कि यदि हम दृश्य और अदृश्य के बीच, परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील के बीच, चल और अचल के बीच की सजीव इकाई को समझें तो हम एक बेहतर मनुष्य के आगमन के लिए नींव तैयार कर सकते हैं। हम अग्रदूत हो सकते हैं और घोषणा कर सकते हैं कि परममानव हमारे उत्तराधिकारी के रूप में आने वाला है। अब तक हम इसे करने में असमर्थ रहे हैं, क्योंकि हमारी सारी ऊर्जा स्वयं से लड़ने में जाती है।

'मैने एक बार पहले भी आपको यह कहते सुना है; शिष्य ने जवाब दिया; "और तब आपने आगे कहा था : "लेकिन कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं"। आपने क्यों ऐसा कहा कि कवि लोग बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं?'

कवि लोग निश्चित ही बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं। जरथुस्त्र ने अवश्य इसे कहा होगा। कवियों को सत्य के कुछ छोटे से टुक्के कहने के लिए बहुत ज्यादा झूठ बोलना होता है। वे सत्य की प्रतिध्वनियों को, सुदूर प्रतिध्वनियों को कहने के लिए झूठ का उपयोग युक्ति के रूप में करते हैं। वे मानवता की महती सेवा करते हैं।

यह अच्छी बात है कि कवि हुए हैं। और यह अच्छी बात है कि सत्य की सेवा में झूठ बोलने के लिए पर्याप्त साहसी कवि हुए हैं; अन्यथा दुनिया उससे कहीं अधिक अज्ञानी होती जितनी कि वह है, उससे कहीं अधिक अंधकार में होती जितनी कि वह है।

सद्गुरुओं को झूठ बोलना पड़ता है, क्योंकि कभी—कभी सत्य तुम्हारे लिए बहुत कठोर हो सकता है स्वीकार करने में। उन्हें उसे थोड़ा हल्का बनाना पडता है, उन्हें उसमें कुछ झूठ डालना पड़ता है। कभी—कभी सत्य बहुत क्लुवा हो सकता है, और झूठ रूपी चीनी की कुछ डलियां फ्लूवी से भी कड्वी दवा पी जाने में तुम्हारी मदद कर सकती हैं। झूठ का निश्चित ही तुम्हें सत्य के निकटतर लाने में उपयोग किया जा सकता है; वे आवश्यक रूप से सत्य के खिलाफ नहीं हैं। वे सच नहीं हैं — यह सच है — लेकिन वे सत्य के दुश्मन नहीं हैं; कम से कम अनिवार्य रूप से नहीं।

'क्या तुम विश्वास करते हो कि वह सत्य बोला?... जरथुस्त्र कह रहे हैं, मैंने कहा कि कवि लोग बहुत जगदा झूठ बोलते हैं, और अब मैं कहता हूं मैं भी एक कवि हूं। 'क्या अब तुम विश्वास करते हो कि वह सत्य बोला? क्यों तुम यह विश्वास करते हो? ' क्यों तुम मेरा विश्वास करते हो?

शिष्य ने जवाब दिया 'मैं जरथुस्त्र में विश्वास करता हूं'। उसका जवाब भी निरतिशय सुंदर है। वह कह रहा है, मैं फिक्र नहीं करता कि आप क्या कहते हैं, मैं फिक्र नहीं करता कि आप क्या इनकार करते हैं। आप में मेरा भरोसा आपके वक्तव्यों पर निर्भर नहीं है — मेरा भरोसा आपकी उपस्थिति पर निर्भर है, आपके होने मात्र पर।

'मैं जरथुस्त्र में विश्वास करता हूं। ' इससे भेद नहीं पड़ता कि वह क्या कहते हैं, मैं उनकी निजता में विश्वास करता हूं मैं उनकी स्फटिक—स्वच्छ आखों में विश्वास करता हूं उनकी अधिकारपूर्ण आवाज में; उनके शब्दों में नहीं बल्कि उनके मौनों में।

लेकिन जरथुस्त्र ने अपना सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया।

विश्वास मुझे धन्यभागी नहीं बनाता....

सद्गुरु हमेशा और की मांग करता है। वही एकमात्र ढंग है कि वह तुम्हें और ऊंचे, और ऊंचे खींचता जा सकता है। वह कहते हैं, विश्वास मुझे धन्यभागी नहीं बनाता. मुझे कुछ और प्रमाण की जरूरत है; केवल विश्वास पर्याप्त नहीं है।

तुम्हें कुछ उसका होना होगा जिसके जरथुस्त्र अन्य कुछ नहीं बस एक सपना हैं, जिसके जरथुस्त्र अन्य कुछ नहीं बस एक अभीप्सा हैं, जिसके जरथुस्त्र अन्य कुछ नहीं बस एक संदेशा हैं।

तुम्हें परममानव होना होगा; सिर्फ जरथुस्त्र में विश्वास करने से काम नहीं चलेगा। इतने सारे विश्वास करनेवाले हैं दुनिया में — हर व्यक्ति ही विश्वास करनेवाला है — विश्वास करनेवालों ने मानव चेतना का एक कतरा भी नहीं बदला है। मुझे थोडे और प्रमाण की जरूरत है, स्वयं मुझमें विश्वास की तो सर्वाधिक कम। तुम मुझे फुसला नहीं सकते क्योंकि मेरा कोई अहंकार नहीं है जिसे तुम्हारे विश्वास के जरीए तृप्त होना है। मैं मांग करता हूं कि तुम सिद्ध करो — सिद्ध करो कि जरथुस्त्र सही है। और सुबूत बौद्धिक कसरत भर न हो, वह तुम्हारी संभावनाओं का साकार हो चुका रूप हो।

लेकिन मंजूर किया कि किसीने पूरी गंभीरता में कहा है कि कवि लोग बहुत झूठ बोलते हैं : वह (व्यक्ति) सही है — निश्चित हम बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं।

इसके लिए साहस की जरूरत है, महान साहस की, कहने के लिए कि निश्चित हम बहुत ज्यादा झूठ बोलते हैं। लेकिन वह जरूरतवश है। तुम अ—प्रदूषित, शुद्ध सत्य बोल ही नहीं सकते। वह अत्यधिक अमूर्त है — तुम उसे पक्क ही नहीं सकते। झूठ इस दुनिया के, तुम्हारी दुनिया के, तुम्हारी भाषा के हैं; लेकिन युक्ति निर्मित करने के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है, और शायद सत्य की एक झलक मिल सके।

एक बार तुम भी उसी स्थान पर आ जाओ, तो तुम समझोगे कि क्यों वह झूठ बोल रहा था। तुम उसके झूठों के लिए कृतश महसूस करोगे। तुम समझोगे कि अस्तित्व इतना विस्तीर्ण है, कोई उसे उसकी पूर्णता में नहीं जान सकता। अस्तित्व के रहस्य के छोटे से हिस्से को जानना भी पर्याप्त है। बस जरा सी लौ काफी है और तुम हजारों मील की यात्रा कर सकते हो अंधेरे में। वह छोटी सी ली तुम्हारे आसपास बस चार फीट तक प्रकाश फेंकेगी, लेकिन उतना काफी है; जैसे तुम आगे बढ़ोगे, प्रकाश का दायरा भी तुम्हारे साथ आगे बढ़ता जाएगा।

लेकिन जब कोई जरथुस्त्र जैसा व्यक्ति झूठ बोलता है, यह उसकी अपेक्षा बहुत बेहतर है जब कोई मूच्छिरत व्यक्ति सत्य बोलता है। उसका सत्य सामान्य है, वह मानव चेतना का उत्थान नहीं करने जा रहा। लेकिन जरथुस्त्र का झूठ मानव चेतना को उस बिंदु तक ऊपर उठाने जा रहा है जहां झूठ सच बन जाता है, जहां सपना यथार्थ के रूप में साकार हो उठता है।

कवियों से मैं थक गया हूं पुराने और नये : वे सब के सब मुझे सतही और उथले समुद्र प्रतीत होते है उन्होंने पर्याप्त गहराई से विचार नहीं किया है : इसलिए उनका भाव — गहराइयों की थाह नहीं ले पाया है।

कवि के प्राण दर्शक चाहते हैं भले ही वे केवल भैसें हों।

वह कवि और रहस्यदर्शी के बीच एक अंतर कर रहे हैं। रहस्यदर्शी एक कवि हो सकता है; कवि एक रहस्यदर्शी हो सकता है, लेकिन आवश्यक रूप से ऐसा नहीं है।

कवि निरंतर किसी की खोज में रहते हैं जो उनकी प्रशंसा करे। उनका एकमात्र आनंद है अहंकार की सूक्ष्म परितृप्ति। जरथुस्त्र ठीक हैं, कि वह ऊब गये हैं, थक गये हैं कवियों से। लेकिन जब एक रहस्यदर्शी काव्य के माध्यम से बोलता है, तो वह एक सर्वथा भिन्न बात है।

लेकिन मैं ऐसे प्राण से थक गया हूं : और मैं उस दिन को आता हुआ देखता हूं जब यह स्वयं से थक जाएगा।

पहले ही मैं कवियों को रूपांतरित हुआ देख चुका हूं मैने उनको अपनी निगाह अपने आप पर करते देखा है।

मैं प्राणों के पश्चात्तापी प्रगट होते देख चुका हूं : वे कवियों के भीतर से ही जन्मे

वह कह रहे हैं कि यदि कोई कवि अपनी ही कविता से थक जाए और बजाय किसी अन्य की तरफ देखने के कि वह उनकी प्रशंसा करे वह स्वयं पर ही दृष्टि मोड़ना शुरू कर दे, तो वह रहस्यदर्शी बनने के रूपांतरण के बहुत करीब है।

कवि को कवि होने पर ही नहीं रुक जाना चाहिए; उसकी नियति तभी परिपूर्ण हो सकती है जब वह एक रहस्यदर्शी बन जाए। कवि दूसरों में उत्सुक है, रहस्यदर्शी अपनी ही अंतरात्मा का अन्वेषण कर रहा है। कवि ऐसी बातें कहता है जिनकी तुम प्रशंसा करोगे, रहस्यदर्शी ऐसी बातें कहता है जिन्हें उसने अपनी ही आत्मा की गहराइयों में पाया है। और वह उन्हें इसलिए कहता है कि संभवत: वे तुम में खोज व अन्वेषण की एक ललक पैदा करेंगी।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा!

उद्धार की बात

प्यारे ओशो,

सच में मेरे मिखैड़े मैं मनुष्यों के बीच चलता हूं जैसे मनुष्यों के टुल्लों और अंगों के बीच! मेरी आंख के लिए भयावह बात है मनुष्यों को टुकड़ों में छिन्न— भिन्न और बिखरा हुआ पाना जैसे किसी कल्लेआम के युद्ध— मैदान पर।

और जब मेरी आंख वर्तमान से अतीत में भागती है सदा उसे वही बात मिलती है : टुक्ये और अंग और डरावने अवसर — लोइकन मनुष्य नहीं!

पृथ्वी का वर्तमान और अतीत — अफसोस! मेरे मित्रो — वही मेरा सर्वाधिक असह्य बोझ है; और मैं नहीं जानता कि जीना कैसे यदि मैं उसका द्रष्टा न होता जिसे आना ही है।

एक द्रष्टा एक आकांक्षी एक सर्जक स्वयं एक भविष्य ही और भविष्य तक एक सेतु — और अफसोस इस सेतु के ऊपर एक अपंग की भांति भी : जरथुस्त्र यह सब कुछ है।

.....यही मेरी समूची कला और लक्ष्य है एक में पिरोना और उस सब को एक साथ लाना जो टुकड़ा है और पहेली है और डरावना अवसर है....

आकांक्षा — यही है जो उद्धारक और हर्षोल्लास की लानेवाली कहलाती है : ऐसा मैने तुम्हें सिखाया है मेरे मित्रो! लेकिन अब इसे भी सीखो : आकांक्षा स्वयं अभी भी एक कैदी है।

'इसके अलावा कि आकांक्षा अंतत: स्वयं का उद्धार करे अकांक्षा करना आकांक्षा— न करना बन जाए — '. लेकिन तुम मेरे बंधुओ पागलपन का यह कथुग्मिह जानते हो।

मैं तुम्हें इन कथागीतों से दूर हटा ले गया जब मैने तुम्हें सिखाया अक्रांक्षा एक सर्जक है....

क्या आकांक्षा अपनी ही उद्धारक और हर्षोल्लास की लानेवाली बन चुकी है? क्या वह प्रतिशोध की भावना को अनसीखा कर चुकी है.... ?

... ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र सर्वथा स्पष्ट हैं कि धर्मों ने मनुष्य की अखंडता नष्ट की है। उन्होंने उसे तोड़ा है —न केवल टुकड़ों में, बल्कि विपरीत टुक्खों में। मनुष्यता? खिलाफ महानतम अपराध धर्मों द्वारा किया गया है। उन्होंने मनुष्यता को खंडमना बना दिया है; उन्होंने हर व्यक्ति को विभाजित व्यक्तित्व दे दिया है। यह बहुत ही चालाक और चालबाज तरीके से किया गया है।

पहले, मनुष्य को कहा गया है, तुम शरीर नहीं हो; और दूसरे, शरीर तुम्हारा दुश्मन है।

और यह था तर्कपूर्ण निष्कर्ष — कि तुम दुनिया के हिस्से नहीं हो, और कि दुनिया अन्य कुछ नहीं बस तुम्हारी सजा है; तुम यहौ दंडित किये जाने के लिए हो। तुम्हारा जीवन न हर्षोल्लास है, न हो सकता है; वह केवल एक मातम भर हो सकता है, वह केवल एक त्रासदी भर हो सकता है। दुख उठाना ही पृथ्वी पर तुम्हारे हिस्से में रहनेवाला है।

उन्हें यह करना जरूरी था ईश्वर की प्रशंसा करने हेतु — जो कि एक काव्यमय कल्पना है, और स्वर्ग की प्रशंसा करने हेतु — जो कि मानवीय लोभ का विस्तार है, और लोगों को नर्क से भयभीत करने हेतु — जो कि मनुष्य की आत्मा के केंद्र में ही एक महान भय उत्पन्न करने हेतु है। इस प्रकार वे मनुष्य को ले गये और उसे टुकड़े—टुकड़े में काट दिया।

कोई धर्म इस सरल, स्वाभाविक और तथ्यपूर्ण घटना को नहीं स्वीकार करता कि मनुष्य एक इकाई है और यह दुनिया सजा नहीं है। और यह दुनिया मनुष्य से अलग नहीं है। मनुष्य की जड़ें इसी दुनिया में गड़ी हैं ठीक जैसे कि वृक्षों की। यह ग्रह — पृथ्वी — उसकी मां है।

जरथुस्त्र ने बारंबार दोहराया है, कभी पृथ्वी के साथ विश्वासघात न करना। सभी धर्मों ने पृथ्वी के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने अपनी ही मां के साथ विश्वासघात किया है, उन्होंने अपने ही जीवनस्रोत के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने पृथ्वी की निंदा की है, और उन्होंने उसका त्याग करने के लिए तर्क दिये हैं — त्याग पर उनका सतत जोर है।

लेकिन कैसे तुम अपने स्वभाव का त्याग कर सकते हो? तुम ढोंग कर सकते हो, तुम एक पांखडी बन सकते हो। यहा तक कि तुम मानना शुरू कर सकते हो कि तुम प्रकृति के हिस्से नहीं हो; लेकिन तुम्हारे महानतम संत भी प्रकृति पर निर्भर करते हैं, ठीक जैसे कि तुम्हारे महानतम पापी निर्भर करते हैं। उन्हें भोजन की जरूरत होती है, उन्हें पानी की जरूरत होती है, उन्हें हवा की जरूरत होती है; उनकी जरूरतें नहीं बदलतीं। उनका त्याग क्या है?

यह उनके भीतर खंडित मन पैदा करता है। वे टुक्खों—टुकड़ों में टूट जाते हैं, और ये टुकडे लगातार एक —दूसरे से लडने में लगे हैं। यही मनुष्य की दुर्दशा का मूल कारण है, और यह लगभग स्वीकृत बात बन गयी है क्योंकि हजारों साल से लोग इस दुर्दशा में रहे हैं। अब वे इसे मंजूरशुदा लेने लगे हैं : यही हमारे हिस्से में है, यही हमारा भाग्य है, यही हमारी नियति है। इसके बारे में कुछ किया नहीं जा सकता। वास्तविकता यह है कि न तो यह हमारा भाग्य है न ही हमारी नियति; यह हमारी मूर्खता है, यह हमारी अ—बुद्धिमत्ता है कि हम पडित—पुरोहितो की सुनते रहे है, उनकी कल्पनाओं में विश्वास करते रहे है।

जितना ही ज्यादा आदमी पीड़ा में हो, उतनी ही आसानी से वह प्रार्थना करने के लिए धार्मिक क्रियाकांड करने के लिए राजी किया जा सकता है, क्योंकि वह पीड़ा से छुटकारा पाना चाहता है। उसे उद्धारकों के बारे में, ईश्वर के दूतों के बारे में, पैगंबरों के बारे में यकीन दिलाया जा सकता है। लेकिन एक व्यक्ति जो आनंदपूर्वक जी रहा है, हर्षोल्लास का जीवन जी रहा है, उसे किसी ईश्वर की जरूरत नहीं है। एक व्यक्ति जो जीवन को जी रहा है उसे किसी प्रार्थना की जरूरत नहीं है। यह मनुष्य के मन की रुग्णता है जिसकी पंडित—पुरोहितों और उनके व्यवसाय के लिए नितांत आवश्यकता है।

जरथुस्त्र कोई पंडित—पुरोहित नहीं हैं। मनुष्य के मन की विखंडित दशा को खोज निकालने वाले वह संभवत: सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिकों में से एक हैं।

धर्म बहुत चालबाज रहे हैं, पंडित—पुरोहित बहुत अमानवीय रहे हैं। उन्होंने मनुष्य को स्वयं के ही खिलाफ विभाजित कर दिया है; और स्वयं से ही लड़ता हुआ वह तड़पता है।

जरथुस्त्र सही हैं : सच में मेरे मित्रो मैं मनुष्यों के बीच चलता हूं जैसे मनुष्यों के टुकड़ों और अंगों के बीच!

बहुत कठिन बात है एक संपूर्ण मनुष्य खोज पाना। संपूर्ण मनुष्य परममानव होगा, संपूर्ण मनुष्य सर्वाधिक आनंदित व्यक्ति होगा, संपूर्ण मनुष्य के पास वे समस्त वरदान होंगे जो यह पृथ्वी उस पर बरसा सकती है। लेकिन केवल संपूर्ण मनुष्य ही उन्हें पा सकता है।

क्यों संपूर्ण मनुष्य आनदपूर्ण हो सकता है? — क्योंकि संपूर्ण मनुष्य संपूर्णता से जीता है, तीव्रता से जीता है; हर क्षण वह जीवन का रस निचोड़ लेता है। उसका जीवन एक नृत्य है, उसका जीवन एक उत्सव और अचानक, जब तुम्हारा जीवन एक उत्सव होता है तुम विश्वास नहीं कर सकते कि यह एक सजा है। तब तुम पंडित—पुरोहितों के झूठों के आरपार देख सकते हो, और तब तुम्हें किसी स्वर्ग की जरूरत नहीं रह जाती

क्योंकि वह तुम्हारे पास है ही — अभी और यहीं। तुम्हें उसे अपने मृत्योपरात में, सुदूर में स्थगित करने जी जरूरत नहीं है।

मेरी आंख के लिए भयावह बात है मनुष्यों को टुकड़ों में छिन्न— भिन्न और बिखरा हुआ पाना जैसे किसी कल्लेआम के युद्ध— मैदान पर जरथुस्त्र चीजों को बहुत स्पष्टता से देखते हैं, ऐसी स्पष्टता से जो विरल है। जिसे हम मानवता कहते हैं, वह उसे कल्लेआम के युद्ध—मैदान के रूप में देखते हैं।

प्रकृति के अलावा अन्य कोई धर्म नहीं है।

और तुम्हें सीखना नहीं है कि प्रकृति क्या है। जब तुम्हें प्यास महसूस होती है, तुम जानते हो कि तुम्हें पानी की जरूरत है। जब तुम्हें भूख महसूस होती है, तुम जानते हो कि तुम्हें भोजन की जरूरत है। तुम्हारी प्रकृति लगातार तुम्हारा मार्गदर्शन करती है। प्रकृति के अलावा अन्य कोई मार्गदर्शक नहीं है। अन्य समस्त मार्गदर्शक अमार्गदर्शक हैं। वे तुम्हें नैसर्गिक राह से दूर ले जाते हैं। और एक बार तुम अपनी नैसर्गिक राह से हट गये कि विपत्ति प्रारंभ होती है। और तुम्हारा दुख ही उनकी खुशी है, क्योंकि केवल दुखी ही गिरजाघर जाते हैं, केवल दुखी ही मंदिरों में जाते हैं।

जब तुम आनंदित और हर्षित महसूस कर रहे हो, युवा व स्वस्थ, कौन मंदिर—मस्जिदों की फिक्र करता है! जीवन इतना समृद्ध है, और जीवन ऐसा उल्लास है, कौन उन कब्रगाहों में प्रवेश करना चाहता है जहा उदासी गंभीरता मानी जाती है! जहा लंबा चेहरा धार्मिक माना जाता है! जहा हंसी का फूट पड़ना... तुम्हारी एक पागल व्यक्ति के रूप में निंदा की जाएगी! जहा नृत्य वर्जित है! जहा प्रेम का निषेध है! जहा तुम्हें मुर्दा शब्दों को सुनते हुए बैठना है, इतने पुराने और इतने धूल भरे कि वे तुम्हारे हृदय को नहीं छूते, वे तुम्हारे प्राणों में कोई रोमांच नहीं पैदा करते। लेकिन ये गिरजाघर और मंदिर और मस्जिद ही मनुष्य पर हावी रहे हैं।

जरथुस्त्र आशा करते हैं, हर रहस्यदर्शी की भांति ही, कि यह सदा—सदा के लिए नहीं चल सकता। किसी दिन मनुष्य की बुद्धिमत्ता विद्रोह करने वाली है।

विद्रोह ही एकमात्र आशा है। किसी दिन मनुष्य इन तथाकथित ईश्वर के घरों को नष्ट करनेवाला है, क्योंकि यह पुथ्वी, यह तारों भरा आकाश ही एकमात्र मंदिर है; शेष सारे मंदिर मनुष्य—निर्मित हैं।

यदि प्रतिभा विकसित होती है, मंदिर खाली हो जाएंगे, लेकिन जीवन निरतिशय सुंदर हो जाएगा। यही एकमात्र आशा है, जरथुस्त्र कहते हैं।

एक द्रष्टा एक आकांक्षी एक सर्जक स्वयं एक भविष्य ही और भविष्य तक एक सेतु — और अफसोस इस सेतु के ऊपर एक अपंग की भांति भी : जरथुस्त्र यह सब कुछ है। वह कह रहे हैं, मैं इस आशा के कारण जी रहा हूं कि रात, कितनी ही लंबी क्यों न हो, समाप्त होने वाली है; कि अरुणोदय आएगा — कि हर रात का अरुणोदय आता है। यह रात जिसमें मनुष्यता जी रही है सदा—सदा के लिए नहीं हो सकती।

लेकिन अभी तो वह अपनी स्थिति का वर्णन करते हैं : एक द्रष्टा वह दूर—दूर तक देख सकते हैं;' एक आकांक्षी और वह परममानव की आकाक्षा कर सकते हैं; एक सर्जक और वह सब कुछ कर रहे हैं उस मनुष्य के सृजन के लिए जो इस मनुष्यता का स्थान लेगा, स्वयं एक भविष्य ही और भविष्य तक एक सेतु — और अफसोस इस सेतु के ऊपर एक अपंग की भांति भी।

वह कह रहे हैं, मैं भविष्य हूं क्योंकि मैं उसे देख सकता हूं। मेरे लिए वह करीब— करीब वर्तमान है। मैं देख सकता हूं कि अरुणोदय दूर नहीं है, और मैं उसे और— और निकट लाने का हर प्रयास कर रहा हूं। मैं इस मनुष्यता और आनेवाले परममानव के बीच सेतु हूं लेकिन मैं अपंग भी हूं। मैं परममानव नहीं हो सकता, मैं

केवल सेतु हो सकता हूं। मुझ पर से मनुष्यता गुजरेगी, एक नये युग में, एक नये आयाम में, एक अधिक सुंदर और अधिक आनंदमय अस्तित्व में।

और यही मेरी समूची कला और समूचा लक्ष्य है। मैं उन समस्त टुकड़ों को जो छिन्न—भिन्न कर दिये गये हैं जोड़ना चाहता हूं, और मनुष्य को संपूर्ण बनाना चाहता हूं। मैं समस्त विभाजनों के, द्वैतों के खिलाफ हूं और मैं चाहता हूं कि मनुष्य बस एक शिशु के समान हो, बिना किसी भय के और पूरे मन से जीवन का आनंद लेता हुआ।

आकांक्षा — यही है जो उद्धारक और हर्षोल्लास की लानेवाली कहलाती है : ऐसा मैने तुम्हें सिखाया है मेरे मित्रो! लेकिन अब इसे भी सीखो : आकांक्षा स्वयं अभी भी एक कैदी है। जरथुस्त्र अब तक शक्ति की आकाक्षा सिखाते रहे हैं। अब वह थोड़ा और आगे जाते हैं। वह कहते हैं, शक्ति की आकाक्षा भी कैद बन जाती है। व्यक्ति उसमें ही कैद हो जाता है। व्यक्ति को उसका भी अतिक्रमण करना है। पहले, शक्ति की आकाक्षा, और फिर विश्रात हो जाओ। आकाक्षा के संबंध में भूल जाओ और शक्ति के संबंध में भूल जाओ, और बस समुद्रतट पर खेलते हुए एक छोटे बच्चे हो जाओ — सरल, निर्दोष, विस्मयबोध से भरे हुए किसी भी बात से निर्भय, अस्तित्व पर समग्र भरोसा रखे हुए। वही तुम्हारी मुक्ति होगी।

उन्होंने चेतना को तीन स्तरों में बाटा है : ऊंट, जो कि एक गुलाम की चेतना है, जो लादा जाना चाहता है, जो सदा घुटने टेकने और लदने के लिए तैयार है; शेर, वह शक्ति की आकाक्षा है; और तीसरा, शिशु। सर्वोच्च है शिशु की सरलता। शिशु की सरलता ही एकमात्र चीज है जो तुम्हें धार्मिक बनाती है।

बहुतों ने अचरज किया है कि कैसे शेर शिश बन सकता है; वे विपरीत ध्रुव मालूम पड़ते हैं। लेकिन ऐसे प्रश्न उनके द्वारा ही उठाए जाते हैं जो जीवन के द्वंद्वात्मक तर्क को नहीं समझते। केवल शेर ही शिशु बन सकता है क्योंकि इस चालबाज दुनिया में सरल होने के लिए महान साहस की जरूरत है — एक शेर के साहस की। इस ठग दुनिया में भरोसा करनेवाला होना कायर के लिए संभव नहीं है, यह केवल शेर के लिए ही संभव है; और शिशु सरल है, भरोसा करनेवाला।

यह जीवन के रहस्यों में से एक है कि यदि तुम सरल और भरोसा करने वाला हो सको, तो तुम्हें धोखा देना बहुत कठिन है। तुम्हारी सरलता ही, तुम्हारा भरोसा ही धोखा देने वाले को रोकता है।

भरोसा तुम्हारे इर्दगिर्द एक प्रकार की ऊर्जा निर्मित करता है जिसका अपना ही सुरक्षात्मक आभामंडल है। सरलता लोगों को तुम्हें धोखा देने से रोकती है। आसान है एक ऐसे व्यक्ति को धोखा देना जो स्वयं ही धोखेबाज है; आसान है एक ऐसे व्यक्ति को छलना जो स्वयं ही छली है। लेकिन कोई व्यक्ति जो भरोसा करता है, कोई व्यक्ति जो अपनी सरलता में शोषित किये जाने और छले जाने के लिए तैयार है उसे कभी भी शोषण और छल नहीं मिलते।

सरलता की ऊर्जा ही महान संरक्षण है। भरोसा करीब—करीब कवच का काम करता है। लेकिन दुनिया तुम्हें पागल कहेगी।

मैं तुम्हें इन कथागीतों से दूर हटा ले गया जब मैने तुम्हें सिखाया : 'आकांक्षा एक सर्जक है'।

क्या आकांक्षा अपनी ही उद्धारक और हर्षोल्लास की लानेवाली बन चुकी है? क्या वह प्रतिशोध की भावना को अनसीखा कर चुकी है....?

जब तक आकाक्षा स्वयं से भी आगे नहीं निकल जाती वह अतीत को नहीं भूल सकती। और यदि तुम अतीत को नहीं भूल सकते, तुम उसके साथ बंधे हो। आकाक्षा का अंतिम कामु है स्वयं का अतिक्रमण कर जाना, स्वयं के पार निकल जाना।

इस बात पर जरथुस्त्र गौतम बुद्ध से राजी हैं। उन दोनों ने भिन्न मार्गों का अनुसरण किया है — बुद्ध इस अवस्था को "इच्छारहितता" (डिजायरलेसनेस) कहते हैं, और जरथुस्त्र इसे "आकांक्षारहितता (विललेसनेस) कहते हैं

तुम घर आ गये हो। कुछ भी इच्छा करने को शेष नहीं है, कुछ भी आकाक्षा करने को शेष नहीं है। तुम कृतार्थता को, अपनी संभावना की साकारता को उपलब्ध हो गये हो। तुम्हारी अंतरात्मा के फूल खिल चुके हैं।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

मानवोचित होशियादी की बात

प्यारे ओशो,

यह ऊंचाई नहीं, अतल गहराई है जो डरावनी है!

अतल गहराई जहां' निगाह नीचे की तरफ गोता लगाती है और हाथ ऊपर की तरफ कसकर पकड़ते हैं। वहां हृदय अपनी दोहरी आकांक्षा के जरीए मुझे से आक्रांत हो उठता है। आह मित्रो क्या तुमने भी मेरे हृदय की दोहरी आकांक्षा का पूर्वाभास पाया है?

मेरी आकांक्षा मनुष्यजाति के साथ चिपकी रहती है मैं स्वयं को मनुष्यजाति के साथ बंधनों सें बांधता हूं क्योकि मैं परममानव (सुपरमैन) में आकृष्ट हो गया हूं : क्योकि मेरी दूसरी आकांक्षा मुझे परममानव तक खीच लेना चाहती है।

कि मेरा हाथ सुदृढ़ता में अपना विश्वास बिलकुल खो ही न दे : यही कारण है कि मैं मनुष्यों के बीच अंधेपन से जीता हूं जैसे कि मैने उन्हें पहचाना ही नहीं.....

जरथुस्त्र विचारक नहीं बल्कि एक द्रष्टा हैं। समस्त विचार अंधेरे में टटोलना है। देखना सर्वथा अलग बात है।

अंधा आदमी प्रकाश के संबंध में सोच सकता है, लेकिन कितने भी जोरों से वह सोचे यह उसे प्रकाश का अनुभव नहीं देनेवाला है। उसका सोच—विचार हमेशा रिक्त ही रहनेवाला है। एक बड़ा खतरा यह है कि वह अपने सोच—विचार में यकीन करने लग सकता है। और यदि एक अंधा आदमी प्रकाश के संबंध में अपने सोच —विचार में यकीन करने लग जाए तो वह अपनी आखें पाने के संबंध में, अथवा कोई चिकित्सक खोजने के संबंध में जो उसकी आखें ठीक कर सके, बिलकुल भूल ही जाता है।

जब मैं कहता हूं कि जरथुस्त्र एक विचारक नहीं बल्कि एक द्रष्टा हैं, तो मैं इस बात पर जोर डालना चाहता हूं कि ठीक जैसे कि तुम आखों से बाहर की तरफ देख सकते हो, वैसे ही एक बोध है, एक संवेदनशीलता है जो कि भीतर की तरफ देखने में सक्षम है। और जब तक कि व्यक्ति के पास वह क्षमता न हो, समस्त तर्क—वितर्क अर्थहीन हैं।

यही कारण है कि जरथुस्त्र कभी भी कोई तर्क—वितर्क नहीं देते, वह बस अपने अनुभवों को बताते हैं। लेकिन यदि तुम उनके वक्तव्यों को समझ सको, वह स्वयं को देखने की एक अंतर्यात्रा का प्रारंभ बन सकता है। अन्यथा तो लोग बस बाहर भर ही देखते रह जाते हैं; उन्हें कभी इस बात का पता ही नहीं चलता कि अपनी अंतरात्मा में ही, अपने होनेपन में ही देखने की संभावना भी है।

प्रामाणिक धर्म की केवल एक ही फिक्र होती है, और वह है तुम्हारे अंतर्जगत का अन्वेषण, अंतरोन्यूख आंख का खुलना। पूरब में हमने इसे तृतीय नेत्र कहा है; वह केवल एक प्रतीक है, एक अलंकार, लेकिन व्यक्ति भीतर की तरफ देख सकता है।

मौन में, गहन मौन में, जब मन अपनी सतत बकवास बंद कर देता है, अचानक तुम्हें एक महान आयाम का पता चलता है जो इतना सुंदर है जिसकी तुम सपने में भी कभी कल्पना न कर सकते। तुम्हें अपना ही पता चलता है, और तुम्हारा पूरा जीवन रूपांतरित हो जाता है।

स्वयं को देख लेना मात्र तुम्हारे भीतर एक परममानव का प्रारंभ बन जाता है। तब तुम किसी के पुराने, सड़े—गले, पूर्वाग्रहयुक्त, अंधे अनुयायी नहीं रह जाते, जो कि हो सकता है स्वयं उसी नाव में सवार हो जिसमें तुम हो।

जो व्यक्ति स्वयं को देख सकता है वह समस्त बंधनों से मुक्त हो जाता है — धार्मिक, सैद्धातिक, धर्मवैज्ञानिक, दार्शनिक। क्योंकि अब उसके पास अपनी दृष्टि है, उसे किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है, उसे किन्हीं उद्धारकों की जरूरत नहीं है उसका उद्धार हो ही चुका है।

यह एक सबसे बड़ी समस्या है — उन लोगों से प्रकाश के संबंध में बात करना जिनके पास आखें नहीं हैं। लेकिन हर व्यक्ति की अंतर्निहित संभावना है रोगमुक्त हो जाने की, स्वस्थ हो जाने की। सारी जो उसे जरूरत है वह है समस्त पूर्वाग्रहों को और समस्त मान्यताओं को किनारे रख देने की और उतना सरल, अज्ञानी और पूर्वाग्रहरहित हो जाने की जैसे एक शिशु। सरलता एक द्रष्टा की भाषा समझ सकती है, क्योंकि द्रष्टा भी एक शिशु है — एक उच्चतर तल पर, लेकिन दोनों में कुछ समान है।

शिशु कुछ भी नहीं जानता, और द्रष्टा ने सब कुछ जान लिया है और उसे छोड़ दिया है क्योंकि वह कचरा था। दोनों बहुत निकट आ गये हैं, और उनके बीच एक प्रकार का संवाद संभव है। यही है जिसकी जरूरत है जब तुम जरथुस्त्र जैसे व्यक्ति को समझने का प्रयास कर रहे हो। यह तुम्हारी बौद्धिक कुशाग्रता का सवाल नहीं है, यह तुम्हारे सरल हृदय का सवाल है।

जरथुस्त्र के अनुसार, मनुष्य एक अतल गर्त के ऊपर ताना गया रस्सा है। एक तरफ मनुष्य पशुओं के जगत से जुड़ा है, और दूसरी तरफ स्वयं मनुष्य से भी पार जाने की अभीप्सा लिए हुए है — क्योंकि मनुष्य अपने आप में एक सत्ता नहीं है, वह केवल एक सेतु है; वह कुछ है जिस से गुजर जाना है; एक सीढ़ी।

आह, मित्रो क्या तुमने भी मेरे हृदय की दोहरी आकांक्षा का पूर्वाभास पाया है? कोई भी व्यक्ति जो ऊर्ध्वविकास करना चाहता है वह विभाजित है; उसका जैविक, शारीरिक गुरुत्वाकर्षण उसको नीचे की ओर खींचता है, और उसकी आध्यात्मिक अभीप्सा उसको उच्चतर स्थानों से, प्रकाशित शिखरों से पुकारती है। वह विभाजित है, वह दोहरा बन जाता है।

वे जो कभी ऊपर उठना नहीं चाहते, निश्चित ही वे कभी गिरते नहीं; वे कभी गलत कदम नहीं लेते, वे कभी चलते नहीं। वे बस वहीं बने रहते हैं जहा वे हैं। लेकिन उनका जीवन लगभग मृत है, क्योंकि जीवन का कुछ अर्थ तभी होता है जब वह एक निरंतर गति हो ऊंचाइयों की तरफ, एक स्वागत हो उस चुनौती का जो ऊंचाइयों से आ रही है, और एक दुस्साहसी आत्मा हो अतल गहराइयों को स्वीकार करने के लिए। लेकिन सजग और सतर्क बने रही ताकि एक भी कदम गलत न पड़े!

यह करीब—करीब तने हुए रस्से पर चलने जैसा है — उत्तेजना विशाल है। वे जो शिखर पर पहुंच जाते हैं उनकी मस्ती अपरिमित है। केवल उन्होंने ही अपना जीवन जीआ है; औरों ने तो केवल अपना समय काटा है।

जो वह कह रहे हैं वह हर मनुष्य की स्थिति है।

क्यों तुम एक भीड़ के हिस्से रहे आए जाते हो? क्यों तुम अपनी निजता का उद्घोष नहीं करते? क्यों तुम दूसरों द्वारा आरोपित मिथ्या पात्रों का अभिनय किये चले जाते हो, और उनके खिलाफ विद्रोह नहीं करते? क्यों तुम इतने सारे संगठनों — धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक — के हिस्से बने रहते हो यह जानते हुए कि यह किसी ढंग से तुम्हारे काम नहीं आनेवाला; यह तुम्हारे विकास की नींव नहीं बननेवाला? यह तुम्हें केवल तुम्हारी कब्र तक ले जाएगा... तुम्हारे सारे रोटरी क्लब और तुम्हारे सारे लायंस क्लब और तुम्हारे सारे राजनैतिक दल और तुम्हारे सारे धर्म।

यदि तुम अकेले छोड़ दिये जाओ, तो तुम्हें अपने स्वयं के भीतर झांकना ही होगा। बाहर किसी भी चीज से अव्यस्त, अपने अकेलेपन में ऊंचाइयों की अभीप्सा, एक गरुड़ पक्षी की भाति सूरज के आरपार उड़ान भरने की कामना उठने को बाध्य है, क्योंकि यह हर व्यक्ति के भीतर है।

जीवन स्वयं पर विजय पाना चाहता है।

वह जरथुस्त्र की मूलभूत शिक्षाओं में से एक है : जीवन स्वयं पर विजय पाना चाहता है। लेकिन विजय करने में, खतरा है — तुम नये केवल तभी हो सकते हो जब पुराना मरे। लेकिन खतरा साफ है। कौन जाने... यदि पुराना मरे और नया कभी आए ही न!

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

परिव्राजक

प्यारे ओशो,

जरथुस्त्र स्वयं से कहते हैं :

मैं एक परिव्राजक हूं और एक पर्वतारोही.... मुझे मैदान अच्छे नहीं लगते और ऐसा लगता है मै देर तक शांत नहीं बैठ सकता।

और भाग्य और अनुभव के रूप में चाहे जो कुछ भी अभी मुझ तक आने को हो — परिव्रज्या और पर्वतारोहण उसमें रहेगा ही : अंतिम विश्लेषण में व्यक्ति केवल स्वयं को ही अनुभव करता है।

'तुम महानता का अपना मार्ग तय कर रहे हो : अब पहले जो तुम्हारा परम खतरा था वही तुम्हारी परम शरण बन चुका है!

'तुम महानता का अपना मार्ग तय कर रहे हाो : तुम्हारे पीछे कोई भी यहां चोरी— छिपे नहीं आ पाएगा! स्वयं तुम्हारे पांव ने ही तुम्हारे पीछे का मार्ग लुप्त कर दिया है और उस मार्ग के ऊपर लिखी पड़ी है : असंभावना।

'और जब समस्त पादाधार विदा हो जाएं तो तुम्हें पता होना जरूरी है कि अपने ही सिर के बल कैसे आरोहण (चढ़ाई) करना : इससे अन्यथा कैसे तुम ऊपर की ओर आरोहण कर सकोगे?

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

एक सर्वाधिक मूलभूत बात उन सब द्वारा समझे जाने की जो खोज में हैं — मार्ग की खोजे में, दिशा की खोज में, अर्थ की खोज में, स्वयं की खोज में — यह है कि उन्हें परिव्राजक (वांडरर) नहीं बने रह सकते। उन्हें एक घटना होने के बजाय एक प्रक्रिया होना सीखना है।

वस्तुओं और मनुष्य के बीच, पशुअpएंअउाऐर मनुष्य के बीच, सबसे बड़ा विभेदक चिह्न यह है कि वस्तुएं वैसी हीं बनी रहती हैं; वे परिव्राजक नहीं बन सकतीं। पशु भी पूर्ण ही पैदा होतै हैं — वे ऊर्ध्व—विकास नहीं करते, वे केवल आयु—विकास करते हैं। एक हिरन हिरन होकर पैदा होता है और एक हिरन होकर ही मरेगा। उसके जन्म और मृत्यु के मध्य कोई प्रक्रिया नहीं है, कुछ बनना नहीं है।

मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है पृथ्वी पर — और संभवत: पूरी सृष्टि में — जो एक प्रक्रिया बन सकता है, एक गतिशीलता, एक ऊर्ध्व—विकास। केवल आयु में ही विकसित होता हुआ नहीं, बल्कि चेतना के नये तलों तक विकसित होता हुआ, सजगता की नयी दशाओं तक, अनुभव के नये आयामों तक। और मनुष्य में यह संभावना भी है कि वह स्वयं का भी अतिक्रमण कर सकता है, वह स्वयं के पार जा सकता है। वह है प्रक्रिया को उसकी तर्कपूर्ण निष्पत्ति तक ले जाना।

दूसरे शब्दों में, मैं चाहूंगा कि तुम्हें याद आए कि मनुष्य को एक 'बीइंग' के रूप में, एक होनेपन के रूप में नहीं समझा जाना है, क्योंकि 'बीइंग' (होनापन) शब्द गलत धारणा पैदा करता है — जैसे कि मनुष्य परिपूर्ण है। मनुष्य एक बिकमिंग है, होने की प्रक्रिया है।

तुम महानता का अपना मार्ग तय कर रहे हो : तुम्हारे पीछे कोई भी यहां चोरी— छिपे नहीं आ पाएगा! स्वयं तुम्हारे पांव ने ही तुम्हारे पीछे का मार्ग लुप्त कर दिया है और उस मार्ग के ऊपर लिखी पड़ी है : असंभावना। जब तक तुम असंभव की चुनौती न स्वीकार करो, तुम्हारी महानता अपने परम शिखर तक नहीं खिल सकती। केवल असंभव ही तुम्हें तुम्हारी पूर्ण खिलावट तक लाता है; केवल असंभव ही तुम्हारा बसंत लाता है, तुम्हारा घर लाता है।

यदि तुम मुझसे पूछते हो, मैं कहूंगा ईश्वर कुछ नहीं है सिवाय असंभव का ही एक दूसरा नाम। लेकिन इसने अपनी गुणवत्ता खो दी है क्योंकि तुम इससे इतने परिचित हो चुके हो — तुम कभी सोचते ही नहीं कि यह कोई ऐसी बात है जो असंभव है। तुमने ईश्वर को संभव के रूप में सोचना शुरू कर दिया है। इसने अपना उद्देश्य ही खो दिया है।

बेहतर है अब इसे जरथुस्त्र के शब्द ' असंभावना' के साथ बदल लेना। वही उनका घर है, वही उनकी शरण है, और वही उनकी परिव्रज्या (वाडरिंग) है। और यह उनकी प्रतिभा को, उनकी महानता को, उनकी सत्यनिष्ठा को, उनकी निजता को परम भव्यता पर लाना है। तुम्हारी अपनी ही अंतरात्मा की महिमा के सिवाय अन्य कोई उपलब्धि नहीं है।

और जब समस्त पादाधार विदा हो जाए तो तुम्हें पता होना जरूरी है कि अपने ही सिर के बल कैसे आरोहण (चढ़ाई) करना : इससे अन्यथा कैसे तुम ऊपर की ओर आरोहण कर सकोगे 7

व्यक्ति को स्वयं का अतिक्रमण करना होगा।

व्यक्ति को स्वयं को पीछे छोड़ देना होगा।

व्यक्ति को स्वयं से आगे निकल जाना होगा।

जो कुछ भी तुम हो वह सब पीछे छोड़ दिया जाना होगा — तुम्हारे विचार, तुम्हारे सपने, तुम्हारी कल्पनाएं तुम्हारे पूर्वाग्रह, तुम्हारे दर्शनशास्त्र... सब कुछ जिससे मिलकर तुम्हारा व्यक्तित्व बना है। तुम्हें उसे ऐसे ही छोड़ देना है जैसे सर्प अपनी पुरानी चमड़ी (जाली) छोड़ता है — वह उससे बाहर सरक जाता है और कभी पीछे मुड़कर देखता तक नहीं।

जब तक व्यक्ति स्वयं का ही अतिक्रमण नहीं करता, वह 'असंभव' की अनुभूति नहीं कर सकता। तब तक व्यक्ति परिव्रज्या में, खोज में परम की अनुभूति नहीं कर सकता, व्यक्ति शुद्धतम अभीप्सा की अनुभूति नहीं कर सकता। तुम बस एक तीर हो, और तुम्हारे लिए कोई लक्ष्य नहीं है। यह समझना कि तुम एक तीर हो — पूरी गति में, कहीं न जाते हुए बिना किसी लक्ष्य के — अपने ही होने के संबंध में समझने के लिए सर्वाधिक कठिन बात है।

सारे अन्य धर्म बचकाने प्रतीत होते हैं — बच्चों के खिलौने। जरथुस्त्र तुम्हें एक चुनौती दे रहे हैं जो केवल अत्यधिक साहसियों द्वारा ही स्वीकार की जा सकती है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

आनंदमय द्वीपों की बात

प्यारे ओशो,

ओ मेरे जीवन के अपराह्न।

मैने क्या नहीं दे दिया है कि मैं एक चीज पा सकूं : मेरे विचारों की यह जीवित रोपस्थली (नर्सरी) और मेरी सर्वोच्च आशाओं का यह अरुणोदय!

एक बार स्रष्टा ने साथियों की और अपनी आशा के बच्चों की तलाश की : और लो ऐसा हुआ कि वह उन्हें नहीं पा सका इसके अलावा कि पहले वह स्वयं उनका सृजन करे।

मेरे बच्चे अपने प्रथम वसंत में अभी भी हरे हैं बहुत पास— पास खड़े हुए और हवाओं द्वारा समान रूप से कंपे हुए मेरे बगीचे और मेरी सर्वोत्तम मिट्टी के ये वृक्ष।

और सच में! जहां ऐसे वृक्ष साथ— साथ खड़े हो वहीं आनंदमय द्वीप हैं!

लेकिन एक दिन मैं उन्हें उखाडूगा और प्रत्येक को अकेला स्वयं भर के साथ लगाऊंगा ताकि वह एकांत सीख सके और अवज्ञा और दूरदर्शिता

तब वह समुद्र के किनारे खड़ा होगा गठीला और ऐठंदार और लचीली मजबूती के साथ अविजेय जीवन का एक सजीव प्रकाशस्तंभ।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा

जरथुस्त्र जैसा व्यक्ति करीब—करीब एक माली है, प्रेम और फिक्र पूर्वक लोगों की देखभाल करता हुआ और उस समय की प्रतीक्षा करता हुआ जब वे फूल और फल लाने में समर्थ होंगे।

चेतना की अपनी ही खिलावट है, लेकिन अधिकाश लोग चेतना की विशाल संभावनाओं और उसके विकास के संबंध में विचार तक किये बिना यंत्रमानव (रोबोट) की तरह जीए चले जाते हैं। वह तुम्हें केवल जन्म ले लेने भर से नहीं मिलती। जन्म तुम्हें जीवन दे देता है, अब यह तुम पर निर्भर है अपनी जीवन—ऊर्जाओं को चेतना की उच्चतर घटनाओं में रूपातरित करना।

चेतना ठीक एक फूल की तरह है। और जब तक तुम्हारे अंतर्प्राण न खिलें, तुम कभी भी संतुष्ट न महसूस करोगे, कभी भी परितृप्त न महसूस करोगे, क्योंकि तुम्हारा बीज एक बीज ही बना रह जाता है। बीज हजारों फूलों की कैद है। बीज को तोड़ना ही है; बीज को मिट्टी के साथ एक होना ही है ताकि वे फूल जो उसमें संभावना के रूप में छिपे हुए हैं, यथार्थ बनने शुरू हो जाएं।

समस्त महान सद्गुरु अन्य कुछ नहीं बस मानवता के माली हैं। वैसे ही जरथुस्त्र हैं। वह स्वयं से बात कर रहे हैं.

ओ मेरे जीवन के अपराह्न! मैने क्या नहीं दे दिया है कि मैं एक चीज पा सकूं. मेरे विचारों की यह जीवित रोपस्थली (नर्सरी) और मेरी सर्वोच्च आशाओं का यह अरुणोदय!

एक बार स्रष्टा ने साथियों की और अपनी आशा के बच्चों की तलाश की : और लो ऐसा हुआ कि वह उन्हें नहीं पा सका इसके अलावा कि पहले वह स्वयं उनका सृजन करे।

वह कह रहे हैं कि एक बार वह परममानव की तलाश कर रहे थे, खोजपूर्ण निगाहों सहित उन घाटियों में घूमते हुए जहा मानवता रहती है, कि कोई कहीं हो सकता है जिसने अपनी संभावनाओं को उपलब्ध कर लिया हो, जो मानव होने का अतिक्रमण कर गया हो और परममानव हो गया हो। लेकिन वह असफल रहे; वह एक भी व्यक्ति ऐसा न खोज सके जिसने स्वयं का अतिक्रमण कर लिया हो। और अपने जीवन के अपराह्न में उन्होंने

इस बात का अनुभव कर लिया कि परममानव कहीं अन्यत्र नहीं पाया जाने वाला है, तुम्हें उसका सृजन करना होगा। परममानव एक प्राप्ति नहीं, एक सृजन है, और तुम्हें उसका सृजन करना है ठीक जैसे कि एक माली एक सुंदर बगीचे का सृजन करता है।

एक बार स्रष्टा ने साथियों की और अपनी आशा के बच्चों की तलाश की। उनकी आशा बहुत ही एकनिष्ठ है। और उनकी आशा केवल उनकी आशा नहीं है, वही पूरी मानवता की आशा है। यदि परममानव प्रगट नहीं होता, मनुष्य का सर्वनाश निश्चित है। या तो मनुष्य को अपनी चेतना में परममानव का सृजन कर लेना है अथवा मनुष्य के दिन पूरे हुए।

केवल दो ही विकल्प हैं : या तो आत्महत्या अथवा परममानव।

मनुष्य ऐसे घिसटता नहीं जा सकता जिस ढंग से वह हजारों वर्षों से रहा आया है। जहां तक मनुष्य की चेतना का संबंध है, हजारों वर्षों से कोई ऊर्ध्व—विकास नहीं हुआ है। हा, यदा—कदा कोई गौतम बुद्ध, कोई जरथुस्त्र, कोई लाओत्सु खिल उठे हैं; लेकिन वे नियम नहीं हैं, वे अपवाद हैं।

लेकिन उनका होना भी अपरिसीम मदद रही है — आशा करते जाने को कि यदि यह जरथुस्त्र को घट सकता है तो यह तुम्हें भी घट सकता है। व्यक्ति को परममानव का सृजन करना होता है; व्यक्ति को परममानव की धारणा से गर्भवान होना होता है।

.. और लो ऐसा हुआ कि वह उन्हें नहीं पा सका इसके अलावा कि पहले वह स्वयं उनका सृजन करे। उनको पाने का एकमात्र उपाय है उनका सृजन करना। यह महान दिशा—परिवर्तन है। वह उनकी तलाश में अपना समय व्यर्थ कर रहे थे — जैसे कि वे पहले से ही कहीं अस्तित्व में हैं, तुम्हें बस केवल पता कर लेना है कि कहा हैं वे। वे कहीं भी अस्तित्व में नहीं हैं।

मेरे बच्चे अपने प्रथम वसंत में अभी भी हरे हैं बहुत पास— पास खड़े हुए और हवाओं द्वारा समान रूप से कंपे हुए मेरे बगीचे और मेरी सर्वोत्तम मिट्टी के ये वृक्ष।

और सच में! जहां ऐसे वृक्ष साथ— साथ खड़े हो वहीं आनंदमय द्वीप हैं!

जरथुस्त्र व्यक्ति को प्रेम करते हैं। वह भीड़ से नफरत करते हैं, वह समूह से नफरत करते हैं। वह पूरे भीड़ —मनोविज्ञान के खिलाफ हैं, क्योंकि जहा तक मनुष्य के ऊर्ध्व—विकास का संबंध है भीड़ निम्नतम हे। भीड किसी व्यक्ति को ऊपर नहीं जाने देती; वे सब के सब उसका पांव पकड़कर उसी कीचड़ में वापस खींच लेते हैं जिसमें भीड़ जी रही है। यह उनके अहंकारों के खिलाफ है कि कोई निजतावान बने। वे उन लोगों का सम्मान करते हैं जो अपनी निजता का बलिदान करते हैं — वे उन्हें संत कहते हैं। और वे समस्त संत कुछ भी नहीं हैं केवल परछाइयां, लाशें, भीड़ की अपेक्षाएं पूरी करती हुईं।

जितना ज्यादा तुम भीड़ की अपेक्षाओं को पूरा करते हो, उतना ज्यादा सम्मान, उतना ज्यादा आदर वे तुम्हें देते हैं; वे तुम्हें एक महान संत बना देते हैं। बस केवल तुम्हें अपने ही सहारे नहीं खड़ा होना चाहिए — वही बात है जिसे भीड़ नफरत करती है। तुम्हें अपनी निजता पर जोर नहीं देना चाहिए — वही बात है जिसे भीड़ नफरत करती है। और जब तक तुम अपनी निजता पर जोर न डालो तुम परममानव को गर्भ में धारण नहीं कर सकते।

परममानव एक निजतावान व्यक्ति है।

जरथुस्त्र कह रहे हैं, और सच में! जहां ऐसे वृक्ष साथ— साथ खड़े हो वहीं आनंदमय द्वीप हैं! लेकिन उन्हें अलग करना पड़ेगा; तब वे आनंदमय द्वीप बन जाएंगे। हर माली जानता है : वह बीज बोता है, पौधे ऊगते हैं, और वे एक भीड़ होते हैं। तब वह उन्हें अलग—अलग करना शुरू करता है — उन्हें अलग जगह लगाना, उन्हें

अपना ही क्षेत्र, अपना ही स्थान प्रदान करना। वह उन्हें निजतावान बनाता..है। वह उन्हें द्वीप बनाता है। लेकिन एक दिन मैं उन्हें उखाड़ूगा और प्रत्येक को अकेला स्वयं भर के साथ लगाऊंगा ताकि वह एकांत सीख सके और अवज्ञा और दूरदर्शिता। तीन बातें वह कह रहे हैं : ताकि वह एकांत सीख सके.... भीड़ तुम्हें कभी भी एकात का सुंदर आयाम नहीं सीखने देती। वे तुम्हें हमेशा, हर कहीं चारों ओर से घेरे रहते हैं। वे तुम्हें मौन नहीं होने देते, वे तुम्हें अकेला नहीं छोड़ते। वे ऐसे लोगों से बहुत विद्वेष करते हैं जो शात व मौन हैं, अकेले रहते हैं, एकात से प्रेम करते हैं। भीड़ को लगता है वे दुश्मन हैं — वे उनमें से ही एक नहीं हैं, वे बाहरी हैं, वे उनके अपने नहीं हैं।

लेकिन किसी के भी लिए अपनी ही चेतना का अनुभव करने के लिए एकांत सर्वाधिक मूलभूत बातों में से एक है जिसकी जरूरत होती है।

पहली बात एकांत है, दूसरी बात है अवज्ञा।

व्यक्ति को विद्रोही तो होना ही पड़ता है, व्यक्ति को भीड़ को नहीं कहना तो सीखना ही पडता है।

व्यक्ति को अपना निर्णय स्वयं लेना पड़ता है।

व्यक्ति को सब को स्पष्ट कर देना होता है कि कोई भी उसके लिए निर्णय नहीं लेने जा रहा है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

धर्मत्यागियों की बात

प्यारे ओशो।

वह व्यक्ति जो मेरी किस्म का है उसे मेरी ही किस्म के अनुभवों का साक्षात भी होगा जिससे कि उसके प्रथम साथी अनिवार्य रूप से लाशें व विदूषक ही होंगे बहरहाल उसके दूसरे साथी अपने आपको उसके माननेवाले कहेगे : एक जीवंत समूह प्रेम से भरा हुआ बेवकूफियों से भरा हुआ बचकानी भक्ति से भरा हुआ

मनुष्यों में वह जो मेरी किस्म का है उसे इन माननेवालों से अपना हृदय नहीं उलझाना चाहिए) वह जो मनुष्य के ढुलमुल— कायरतापूर्ण स्वभाव को जानता है उसे इन बसंतों और इन रंगबिरंगे घास— मैदानों में यकीन नहीं करना चाहिए!

'हम फिर से पवित्रात्मा हो गये हैं— ऐसी ये धर्मत्यागी स्वीकारोक्ति करते हैं और उनमें से बहुत तो अभी भी अति कायरतापूर्ण हैं यह स्वीकारोक्ति करने के लिए....

पुराने ईश्वरों के बाबत बहुत समय हुआ उनका अंत हुए — और सच में उनका अंत बहुत उत्कृष्ट जिंदादिल दिव्य रहा था!

वे 'धुंधलके में विलीन हो गये' ऐसा नहीं — वह झूठ है! उलटे एक बार वे — तब तक हंसते रहे जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो गयी!

यह तब हुआ जब सर्वाधिक अनीश्वरीय कथन स्वयं एक ईश्वर से निकला यह कथन : 'एक ही ईश्वर है! तुम्हें मेरे समक्ष अन्य ईश्वर नहीं अपनाने चाहिए। एक बूढ़ी कुपित— दढ़ियल ईश्वर एक ईर्ष्यालु ईश्वर इस प्रकार स्वयं को भूल गया :

और तब सारे ईश्वर हंस पड़े और अपनी कुर्सियों में आगे— पीछे झूलते रहे और चीख पड़े : 'क्या ठीक यही नहीं है ईश्वरीयता कि ईश्वर हैं न कि है?'

जिस किसी के पास भी सुनने के लिए कान हो उसे सुन लेने दो।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र हर संभव पहलू से प्रयास कर रहे हैं समझने का कि मनुष्य क्यों उस प्रकार उद्विकसित (एवाल्व) नहीं हुआ है जैसा उसे होना चाहिए था — क्यों वह बचकाना रह गया है, क्यों परममानव अब तक आ नहीं सका है? क्या हैं कारण जो उसके आने में रुकावटें हैं, और कैसे वे रुकावटें दूर की जा सकती हैं और द्वार खोले जा सकते हैं, और परममानव का स्वागत किया जा सकता है? वह कोई भी पहलू बगैर अन्वेषण किये नहीं छोड़ रहे हैं। मानव के परममानव में रूपांतरण की संभावना में उनकी खोज समग्र है। किसी ने भी कभी परममानव के संबंध में इतना नहीं सोचा है।

लोग सब प्रकार की परिकल्पित बातों के संबंध में सोचते रहे हैं। शताब्दियों से उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व के ऊपर विचार किया है। कुछ ने उसका इनकार भी किया है, बहुतों ने उसे स्वीकृत किया है, कुछ ने उपेक्षा की है। कुछ थोड़े लोगों ने अज्ञेयवादी रुख लिया है — कि ईश्वर के संबंध में कुछ भी जाना जाना संभव नहीं है और हम नहीं जानते कि उसका अस्तित्व है कि उसका अस्तित्व नहीं है। लेकिन हजारों—हजारों दार्शनिक और लाखों—लाखों पुस्तकें, ग्रंथ ऐसी चीज के लिए समर्पित रहे हैं जिसके लिए एक सुबूत भी नहीं है।

परममानव का विचार करने में जरथुस्त्र अकेले हैं। परममानव परिकल्पना नहीं है, क्योंकि मानव का अस्तित्व है ही; वह परिष्कृत किया जा सकता है, जो कुछ भी उसमें कुरूप है वह सब नष्ट किया जा सकता है, जो कुछ भी उसे छुद्र बनाता है वह सब दूर किया जा सकता है, और मनुष्य की चेतना में परममानव अचूक रूप

से उत्पन्न हो जाएगा। जरथुस्त्र की फिक्र किसी कल्पना के प्रति नहीं है, वह नितांत रूप से एक यथार्थवादी हैं। यह ऐसा सपना नहीं है जो पूरा न किया जा सके, यह एक ऐसा सपना है जिसके पूरे होने की हर क्षमता है। परममानव कहीं आकाश में नहीं है, परममानव तुम्हारे भीतर है। परम मानव तुम्हारे विशुद्धतम रूप में है, तुम्हारी सर्वाधिक होशपूर्ण जागृति में है, शाश्वत जीवन की तुम्हारी अनुभूति में है, प्रेम के तुम्हारे शुद्धीकरण में है। यह बहुत ही निकट है — यह बस तुम्हारा पड़ोसी है।

तुम्हें केवल स्वयं का अतिक्रमण करना है। तुम्हें केवल अपनी अंधेरी गुफाओं से बाहर आना है।

तुम्हें जरा सी जोखिम लेनी है — परिचित के बदले अपरिचित की, ज्ञात के बदले अज्ञात की, सुविधाजनक के बदले खतरनाक की — और परममानव तुम्हारे गर्भ में होगा, तुम परममानव को जन्म दोगे।

ईश्वर अतीत था, परममानव भविष्य है। अतीत के संबंध में कुछ भी किया नहीं जा सकता; भविष्य के संबंध में सब कुछ किया जा सकता है। ईश्वर तुम्हारा स्त्रष्टा था, परममानव तुम्हारा सृजन होने जा रहा है — और यह एक फर्क पैदा करता है, इतना जोरदार, इतना विशाल, इतना अपरिमित, कि ईश्वर और परममानव के बीच कोई सेतु निर्मित करने की कोई संभावना नहीं है। ईश्वर सदा ही कहीं कब्रों में है और परममानव सदा ही कहीं तुम्हारे जीवन की, तुम्हारे प्रेम और तुम्हारे चैतन्य की भविष्यत् संभावनाओं में है।

इस शाम जरथुस्त्र एक और भिन्न दिशा से परममानव के पास पहुंच रहे हैं, जिससे वे अब तक नहीं गये थे।

वह कहते हैं, वह व्यक्ति जो मेरी किस्म का है उसे मेरी ही किस्म के अनुभवों का साक्षात भी होगा, जिससे कि उसके प्रथम साथी अनिवार्यरूप से लाशें व विदूषक ही होंगे। पहले वह कह रहे हैं, जो कोई भी मेरी किस्म का है, जिसके पास भी चेतना की स्पष्टता ठीक वैसी ही है जैसी कि मेरे पास है, उसे ठीक उसी प्रकार के अनुभव होना अनिवार्य है। उसकी भविष्यवाणी की जा सकती है, क्योंकि तुम्हारे अनुभव तुम्हारी चेतना की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं। जितनी ज्यादा ऊंची तुम्हारी चेतना है, उतने ही ज्यादा आनंदमय, उतने ही शातिमय, उतने ही ज्यादा हर्षोल्लासमय अनुभव तुममें खिलने शुरू हो जाते हैं।

सर्वोच्च शिखर पर गौतम बुद्ध, महावीर अथवा जरथुस्त्र तीन व्यक्ति नहीं रह जाते, क्योंकि तीन मौन अलग नहीं रह सकते, तीन आनंद अलग नहीं रह सकते — तीन शून्य एक शून्य हो जाने को विवश हैं।

यह समझने की बात है कि चीजें जो तुम्हें अलग करती हैं वे सदा ही दर्दनाक चीजें हैं। तुम्हारे माइग्रेन (आधासीसी) में सहभागी होने का कोई उपाय नहीं है, तुम्हारी चिंताओं में, तुम्हारे संतापों में सहभागी होने का कोई उपाय नहीं है। दुख लोगों को अलग करता है; आनदमयता उनको निकट करती है। और जैसे वे शुद्धतम रूप पर पहुंचते हैं, उच्चतम शिखर पर, वे अलग—अलग प्राणी नहीं रह जाते, बल्कि एक ही हृदय, एक ही प्रेम, एक ही हर्षोल्लास, एक ही मस्ती बन जाते हैं। परम में हम एक हैं। केवल नर्क में हम तमाम हैं।

जितना ज्यादा तुम स्वय को औरों से अलग महसूस करते हो उतना ही ज्यादा तुम दुख का, पीड़ा का जीवन जी रहे हो — एक जीवन जो जीवन कहे जाने योग्य नहीं है।

पृथ्वी पर देखने से तुम्हें इतने सारे अलगाव, इतने सारे भेदभाव मिलेंगे। गहराई से देखने पर, वे सांयोगिक नहीं हैं। इतने सारे राष्ट्र, इतने सारे धर्म, इतने सारे संप्रदाय, मत और वाद केवल एक ही सत्य की तरफ इशारा करते हैं : कि मनुष्य अस्तित्व की इतनी अतल गहराइयों में गिर गया है कि वह किसी से भी कोई संबंध, कोई सेतु नहीं बना सकता।

यह एक सर्वाधिक आश्चर्यजनक तथ्य है कि निम्नतम तल पर तुम एकाकी हो, क्योंकि तुम अपने आसपास सेतु नहीं बना सकते। तुम प्रेम की भाषा भूल गये हो, तुम भूल गये हो कि कैसे संवाद करना, कैसे संबंध बनाना। अंधकार में तुम एकाकी हो — घोर व्यथा के आसू और विशाल पीड़ा की एक चीत्कार मात्र।

आनंदमयता के उच्चतम शिखर पर, पुन तुम अकेले हो, लेकिन एकाकी नहीं। तुम अकेले हो, क्योंकि उस शिखर पर जो कोई भी पहुंचता है वह एक ही अलमस्तीजन्य अनुभव में, एक ही महासागरीय अनुभव में विलय हो जाता है — ठीक जैसे कि नदियां महासागर में विलय होती जाती हैं। वे भिन्न—भिन्न पहाड़ों से, भिन्न—भिन्न झीलों से, भिन्न—भिन्न राहों से होकर, भिन्न—भिन्न क्षेत्रों से गुजर कर आ रही हो सकती हैं, लेकिन महासागर में अचानक वे समस्त सीमाएं खो देती हैं। वे उतनी ही स्वतंत्र बन जाती हैं जितना कि महासागर है।

पूराने ईश्वरों के बाबत बहुत समयं हुआ उनका अंत हुए — और सच में उनका अंत बहुत उत्कृष्ट जिंदादिल दिव्य रहा था!

वे 'धुंधलके में विलीन हो गये' ऐसा नहीं — वह एक झूठ है। उलटे एक बार वे — तब तक हंसते रहे जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो गयी!

वह तब हुआ जब सर्वाधिक अनीश्वरीय कथन स्वयं एक ईश्वर से निकला यह कथन : 'एक ही ईश्वर है! तुम्हें मेरे समक्ष अन्य ईश्वर नहीं अपनाने चाहिए!'

यही है जो 'ओल्ड टेस्टामेंट' कहती है, यही है जो ईसाई मानते हैं, यही है जो मुसलमान मानते हैं. एक ही ईश्वर है, और जिस ईश्वर को वे मानते हैं उसके अलावा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

लेकिन जरथुस्त्र कहते हैं, यह वक्तव्य सर्वाधिक अनीश्वरीय वक्तव्य है। क्यों है यह अनीश्वरीय? — क्योंकि एक ईश्वर की धारणा मात्र अस्तित्व के स्वभाव के ही खिलाफ है।

प्रत्येक आत्मा का अधिकार है शिखर तक पहुंचना और एक ईश्वर बन जाना। वही है जो गौतम बुद्ध मानते हैं, वही है जो महावीर सिखाते हैं, और वही है जो जरथुस्त्र कह रहे हैं। बौद्ध धर्म में एक ईश्वर नहीं है, हिंदू धर्म में एक ईश्वर नहीं है — एक की धारणा एकाधिकारवादी है; यह कुछ एक—पली अथवा एक—पति—व्रत जैसा है, यह कुरूप है। क्यों, इतने विशाल जगत में, केवल एक ईश्वर हो? क्यों इस जगत को गरीब बनाना? — केवल एक ईश्वर!

विविध प्रकार के ईश्वर होने दो, ठीक जैसे कि विविध प्रकार के फूल हैं। विविध प्रकार की खिलती हुई चेतनाएं होने दो — अपने आप में भिन्न, अद्वितीय — और अस्तित्व अधिक समृद्ध होगा। यही कारण है कि जरथुस्त्र कहते हैं यह एक अनीश्वरीय कथन था। और क्योंकि एक ईश्वर ने कहा इसे, अन्य सारे ईश्वर इतना हैसे कि उनकी मृत्यु हो गयी। वे इतना हैसे, "यह का खूसट जरूर पागल हो गया है! वह कह क्या रहा है? वह पूरे अस्तित्व की गरिमा नष्ट कर रहा है और स्वयं एकमात्र ईश्वर होने का ढोंग कर रहा है! "

और तब सारे ईश्वर हंस पड़े और अपनी कुर्सियों में आगे— पीछे झूलते रहे और चीख पड़े : 'क्या ठीक यही नहीं है ईश्वरीयता कि ईश्वर हैं न कि है?'

जिस किसी के पास भी सुनने के लिए कान हो उसे सुन लेने दो।"

क्या चाहते हैं जरथुस्त्र कि तुम सुनो? 'क्या ठीक यही नहीं है ईश्वरीयता, कि ईश्वर हैं, न कि है?'

यही है जो मैं तुमसे बार—बार कहता रहा हूं : पूरा अस्तित्व ही दिव्य है। सर्वत्र ईश्वरीयता है, लेकिन एक अकेला ईश्वर किसी व्यक्ति के रूप में नहीं है। जिस दिन हम किसी व्यक्ति के रूप में एक अकेले ईश्वर की धारणा छोड़ देंगे, हमारे समस्त धर्म और उनके भेदभाव विदा हो जाएंगे। तब केवल ईश्वरीयता है — निराकार, बस एक गुणवत्ता, एक सुगंध। तुम उसका अनुभव कर सकते हो, लेकिन तुम उससे प्रार्थना नहीं कर सकते; तुम

उसका आनंद ले सकते हो, लेकिन उसके आसपास मंदिर खड़ा नहीं कर सकते; तुम उसके साथ नाच सकते हो, तुम उसके साथ गीत गा सकते हो, लेकिन तुम उसकी स्तुति नहीं कर सकते।

तुम्हें उसकी स्तुति करने के लिए शब्द नहीं मिलेंगे, लेकिन तुम आनंद का एक गीत गा सकते हो। और तुम इतनी समग्रता से नाच सकते हो कि नर्तक खो जाए और केवल नृत्य बच रहे — वही सच्ची धार्मिकता और सच्चा अहोभाव है।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

तीन बुरी बातों की बात

प्यारे ओशो,

... अब मैं सर्वाधिक बुरी बातों को तराजू पर रखूंगा और उनको भलीभांति और

मानवीयता सहित तौलूंगा.....

ऐंद्रिक सुख, शक्ति की लिप्सा, स्वार्थपरायणता : ये तीन अब तक सर्वाधिक कोसे गये हैं और सबसे बुरी तथा सर्वाधिक अन्यायपूर्ण ख्याति में रखे गये हैं — इन तीनों को मैं भलीभांति और

मानवीयता सहित तौलूंगा ऐंद्रिक सुख : एक मीठा जहर केवल मुरझा गये लोगों के लिए लेकिन सिंह—संकल्पी के लिए महा पुष्टिकर और सम्मानपूर्वक परिरक्षित की गयी शराबों की शराब।

ऐंद्रिक सुख : महान प्रतीकात्मक सुख एक उच्चतर सुख और उच्चतम आशा का....

शक्ति की लिप्सा : इसकी निगाह के सामने मनुष्य रेगंता है और झुकता है और एड़ी— चोटी का पसीना एक करता है और सूअर अथवा सांप से भी नीचा बनता है — जब तक कि अंतत: विशाल घृणा की चीख उससे फूट नहीं पड़ती....

शक्ति की लिप्सा : जो कि बहरहाल बड़े सम्मोहक रूप से उठती है पवित्र व एकांतवासी तक को और आत्मनिर्भर ऊचाइयों तक एक ऐसे प्रेम की तरह दमकती हुई जो सांसारिक स्वर्गों पर

लुभावने रूप से नीललोहित (पर्पल) खुशियां उकेरता है।

शक्ति की लिप्सा : लेकिन. कहेगा इसे लिप्सा, जब कि शक्ति के पीछे ऊंचाई नीचे हकने की अभीप्सा करती है! सच में ऐसी अभीप्सा और अवरोह (उतार) में रूग्णता और लिप्सा नहीं है।

चाहे व्यक्ति ईश्वरों और दैवी पादप्रहारों के समक्ष खुशामदी हो, अथवा मनुष्यों और उनकी तुच्छ रायों के समक्ष " यह सब प्रकार के गुलामों पर थूकती है यह यशस्वी स्वार्थपरनायणता!..... ... स्वार्थपरायणता का दुरुपयोग करना — ठीक वही सद्गुण रहा है। और सद्गुण कहा गया है। और 'निःस्वार्थ' — वही है जो भले कारणों से ये सारे दुनिया से थके हारे कायर... होने की अभिलाषा करते थे!

लेकिन अब वह दिन वह रूपांतरण वह फैसले की तलवार वह महा मध्याह्न वेला उन सब पर आती है : तब बहुत सी बातें खुलासा होंगी! और वह जो अहंकार को स्वस्थ व पवित्र घोषित करता है और स्वार्थपरायणता को यशस्वी — सच में वह एक पैगंबर उसे भी घोषित करता है जो वह जानता है : 'लो, वह आती है, वह निकट

है, महा मध्याह्न वेला!'

... ऐसा जरमुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र के पूर्व, और उनके बाद भी, समस्त शिक्षकों ने चीजों को बहुत पूर्वाग्रहयुक्त चित्त से देखा है। उन्होंने हर अनुभव के बहु—आयामीपन को अनुमति नहीं दी है। उन्होंने एक आयाम—विशेष थोप दिया है और मनुष्य के चित्त को संस्कारित कर दिया है चीजों को एक ढंग—विशेष से देखने के लिए। जरथुस्त्र का महान योगदान यह है कि वह मनुष्य की मदद करते हैं चीजों को नये ढंग से देखने के लिए — सर्वथा नये, ताजे, और महान उद्बोधक ढंग से देखने के लिए। कभी—कभी तुम स्तब्ध रह जाओगे, क्योंकि वह तुम्हारे पूर्वाग्रहों के खिलाफ बात कर रहे होंगे। तुम्हें अपने समस्त पूर्वाग्रहों को एक किनारे रख देने के लिए पर्याप्त साहसी होना होगा।

महान अंतर्दृष्टि वाले इस व्यक्ति को समझने के लिए, जो चीजों को किसी पूर्वनिर्धारित सिद्धात—विशेष के अनुसार नहीं देखता, बल्कि चीजों को वैसे ही देखता है जैसी वे हैं अपने आप में... वह कोई अर्थ नहीं थोपता, उलटे यह पता करने की कोशिश करता है : क्या स्वयं चीजों में ही कोई अर्थ छिपा है? वह बहुत वस्तुगत, बहुत यथार्थवादी और नितांत स्वस्थचित्त हैं। वह किसी विचार से मनोग्रस्त (आब्सेस्ड) नहीं हैं और वह किसी प्रकार के दर्शन अथवा धर्म—विशेष का प्रतिपादन नहीं करना चाहते हैं।

उनकी पहुंच का मार्ग इतना समग्र रूप से भिन्न है। वह तुम्हें सिखाते हैं कि कैसे स्पष्टता से देखना। वह तुम्हें नहीं सिखाते कि क्या देखना, वह केवल इतना सिखाते हैं कि कैसे स्पष्टता से देखना।

तुम्हारे देखने की स्पष्टता ही तुम्हें सत्य से मिला देगी। वह तुम्हें सत्य हस्तांतरित नहीं करने जा रहे हैं तैयारशुदा चीज के समान। वह नहीं चाहते कि सत्य इतना सस्ता हो। और कोई भी चीज जो बहुत सस्ती हो सच नहीं हो सकती। सत्य मांग करता है तुम्हारे एक जुआरी होने की ताकि तुम सब कुछ दाव पर लगाने का जोखिम उठा सको। सत्य तुम्हारी मालिकियत नहीं बन सकता। उलटे, यदि तुम सत्य की मालिकियत में आने को तैयार हो, केवल तभी वह तुम्हें मिल सकता है।

इस शाम वह जो कुछ कहने जा रहे हैं वह सभी धर्मों से, सभी तथाकथित नैतिकताओ से इतना विपरीत है कि जब तक तुम अपने चित्त को रास्ते से अलग ही न हटा दो तुम उन्हें सुनने में समर्थ न होओगे और तुम समझने में समर्थ न होओगे। और वह तुम्हारी राह पर हीरे फेंक रहे हैं। लेकिन तुम अंधे बने रह सकते हो; तुम अपनी आंखें बंद रख सकते हो ताकि तुम्हारे पूर्वनिर्धारित विश्वासों में बाधा न पहुंचे।

वह तुम्हें बाधा पहुंचाने पर आमादा हैं — क्योंकि जब तक तुम्हें बाधा न पहुंचे तुम हिल—डुल ही नहीं सकते, तुम आगे बढ़ ही नहीं सकते; तुम्हारे पास सुदूर सितारों तक पहुंचने की उत्तेजना ही नहीं हो सकती; तुम परममानव बनने की अभीप्सा से उद्वेलित ही नहीं हो सकते। तुम्हें हिलाया जाना ही होगा — और निर्दयतापूर्वक हिलाया जाना होगा। केवल बाद में तुम समझोगे : वह करुणा थी — सच्ची करुणा।

तुम्हारे सुविधाजनक झूठों में तुम्हें मदद पहुंचाया जाना प्रेम नहीं है। उससे तुम्हें अच्छा लगता है, लेकिन वह विनाशकारी है — वह बुरा है। वह तुम्हारे विकास की संभावनाओं को नष्ट करता है। और जरथुस्त्र की केवल एक ही एकनिष्ठ शिक्षा है : मनुष्य को स्वयं का अतिक्रमण करना चाहिए। लेकिन क्यों वह अतिक्रमण करे यदि वह बहुत आराम में है? उसका आराम नष्ट किया जाना होगा, उसकी सुविधाएं छीन लेनी होंगी; उसके पूर्वाग्रह छिन्न—भिन्न किये जाने होंगे; उसके धर्म, उसके ईश्वर, उसके दर्शनशास्त्र सब जला दिये जाने होंगे; उसे निपट नग्न छोड़ना होगा, ठीक जैसे कोई नवजात शिशु।

हम इस मानवता के आदी हो गये हैं — यही कारण है कि हम उसकी बीभत्सता को नहीं देख पाते। हम उसकी कुरूपता को नहीं देख पाते, हम उसकी ईर्ष्या को नहीं देख पाते, हम उसकी अप्रेम-दशा को नहीं देख पाते; हम उसके प्रतिभाशून्य, जडमति, अतिसामान्य व्यवहारों को नहीं देख पाते। जरथुस्त्र को सुनते हुए तुम मनुष्यजाति को देखने के एक सर्वथा अलग ही ढंग के प्रति जाग सकते हो। जरथुस्त्र कहते हैं, अब मैं तीन सर्वाधिक बुरी बातों को तराजू पर रखूंगा और उनको भलीभांति और मानवीयता सहित तौलूंगा.. मैं चाहूंरग्र कि तुम मानवीयता सहित शब्द का स्मरण रखो, क्योंकि समस्त तथाकथित धर्म और आध्यात्मिक दर्शनशास्त्र चीजों का मूल्यांकन बहुत अमानवीय ढंग से करते रहे हैं। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम मानवीयता सहित शब्द का स्मरण रखो।

जरथुस्त्र मनुष्य के साथ असीम प्रेम में हैं। वह शत्रु नहीं हैं; वह एक मित्र हैं। वह वर्तमान दशा से घृणा करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि तुम दूर तक जा सकते हो तुम उच्च शिखरों तक पहुंच सकते हो। यह होने के

लिए तुम नहीं हो । वर्तमान मनुष्य— जाति के प्रति उनकी घृणा तुम्हारे भविष्य के लिए परममानव के सुदूर लक्ष्य के लिए उनके गहन प्रेम के कारण है । वह अमानवीय मूल्यों के निपट खिलाफ हैं । समस्त धर्म तुमसे अपेक्षा करते हैं अमानवीय मूल्यों का अनुसरण करने की ।

यदि तुम सब धर्मों के धर्मग्रंथों में देखो तो तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे : जो वे तुमसे करने के लिए कह रहे हैं वह इतना अप्राकृतिक है कि तुम उसे पूरा ही नहीं कर सकते । निश्चित ही उनके कहने के पीछे उद्देश्य कुछ ऐसा है जिसका तुम्हें पता नहीं है । वे भी जानते हैं कि तुम उन मार्गो को पूरा नहीं कर सकते जो वे तुमसे कर रहे हैं । लेकिन तब क्यों वे उन मांगों को कर रहे हैं? उनका छद्म उद्देश्य है तुम्हें अपराधभाव महसूस करवाना । और तुम्हें अपराधभाव महसूस करवाने का एकमात्र उपाय है कुछ अप्राकृतिक की मांग करना, जिसे तुम कर नहीं सकते; चाहे किसी भी ढंग से तुम प्रयास करो, तुम असफल ही होने वाले हो ।

ऐंद्रिक सुख, शक्ति की लिप्सा, स्वार्थपरायणता : ये तीन अब तक सर्वाधिक कोसे गये हैं और सबसे बुरी तथा सर्वाधिक अन्यायपूर्ण ख्याति में रखे गये हैं — इन तीनों को मैं भलीभांति और मानवीयता सहित तौलूंगा ।

यह बात वह कभी नहीं भूलते : स्वयं पर अमानवीय मापदंड थोपने की कोशिश मत करो जो कि तुम्हें केवल अपंग करने वाले हैं, जो कि केवल तुम्हारे पंख काट देनेवाले हैं, जो कि तुम्हें केवल ऐसी गहन मनोवैज्ञानिक गुलामी में कैद करने वाले हैं कि उसमें से निकल पाना बहुत कठिन होगा — क्योंकि व्यक्ति की उससे चिपकने की प्रवृत्ति होती है : वह अधिक सुरक्षित प्रतीत होती है, वह अधिक सुविधाजनक प्रतीत होती है, वह समाज द्वारा अधिक स्वीकार्य प्रतीत होती है ।

जितना ज्यादा कोई मनुष्य स्वयं को अमानवीय मूल्यों में अनुशासित करने का प्रयास करता है, निश्चित ही वह केवल एक पाखंडी हो जानेवाला है । लेकिन भीडें उसे एक संत के समान आदर देंगी — इस सीधे से कारणवश कि वे स्वयं नहीं कर सके इसे । उन्होंने प्रयास किये हैं, लेकिन यह व्यक्ति महान होना चाहिए यह करके दिखा रहा है । सर्वाधिक संभावना यह है कि उसके पास दोहरा व्यक्तित्व है; दो चेहरे हैं उसके : एक तो दुनिया को दिखाने के लिए और एक जो निजी चीज है जिसे वह गुप्त रूप से जीता है । जीवन भूमिगत हो जाता है । सतह पर वह उन समस्त मूल्यों का दिखावा करता है जो मानवीय रूप से असंभव हैं ।

जरथुस्त्र कहते हैं, पहला है ऐद्रिक सुख : एक मीठा जहर केवल मुरझा गये लोगों के लिए लेकिन सिंह— संकल्पी के लिए महा पुष्टिकर और सम्मानपूर्वक परिरक्षित की गयी शराबों की शराब । जरथुस्त्र निश्चित ही बेमिसाल हैं । जब बात सत्य को कहने की आती है वह बस कह देते हैं बिना इस बात की परवा किये कि कोई उन्हें सुनने जा रहा है अथवा नहीं । भले वह पूरी दुनिया के खिलाफ जाती हो, लेकिन वह अकेले खड़े होंगे, सत्य के साथ बने रहेंगे ।

वह कह रहे हैं, ऐंद्रिक सुख : एक मीठा जहर केवल मुरझा गये लोगों के लिए है.. केवल कमजोरों के लिए । और कमजोर शासन करते रहे हैं मजबूतों के ऊपर । गैर—बुद्धिमान बुद्धिमानों के लिए जीवन—ढांचा निर्धारित कर रहे हैं । भीड़ जीने के लिए धर्मों का निर्माण कर रही है, अनुसरण करने के लिए धमदिशों का निर्माण कर रही है । ये सारी नैतिकताएं ये सारे नैतिक विधान मुरझा गये और कमजोरों द्वारा, कुदबुद्धि और मूढ़ों द्वारा निर्मित किये गये हैं ।

... एक मीठा जहर केवल मुरझा गये लोगों के लिए लेकिन सिंह— संकल्पी के लिए महा पुष्टिकर और सम्मानपूर्वक परिरक्षित: की गयी शराबों की शराब । जरथुस्त्र असीम महत्व व महानता की कुछ बात कह रहे हैं : सम्मानपूर्वक परिरक्षित की गयी । वह ऐंद्रिक सुख को पवित्रता का दर्जा प्रदान कर रहे हैं । यदि कुछ तुम्हें नष्ट

करता है तो यह ऐंद्रिक सुख नहीं है, यह तुम्हारी कमजोरी है। मजबूत बनो! लेकिन तुम्हारे तथाकथित धर्मनेता तुम्हें ठीक उलटी ही बात कह रहे हैं : ऐंद्रिक सुख त्यागो और कमजोर बने रहो। और जितना ज्यादा तुम उन्हें त्यागोगे उतना ही ज्यादा कमजोर तुम बनते जाओगे, क्योंकि तुम सारी पुष्टिकर शक्ति खो दोगे, सारी नवजीवनदायी शक्ति खो दोगे। तुम अस्तित्व के साथ संपर्क खो दोगे — क्योंकि इंद्रियों के माध्यम से ही तुम अस्तित्व से जुड़े हो। यदि तुम अपनी इंद्रियों को बंद कर लो, तुमने अपनी कब्र पहले ही तैयार कर ली।

जरथुस्त्र ठीक इससे उलटा कहेंगे। यदि ऐंद्रिक सुख तुम्हें नष्ट करता है, उसका अर्थ है कि तुम्हें और अधिक मजबूत होने की जरूरत है। और तुम्हें अनुशासन दिया जाना चाहिए जिससे कि तुम और अधिक मजबूत बन सको। ऐंद्रिक सुख का त्याग नहीं किया जाना है, कमजोरी का त्याग किया जाना है। और हर व्यक्ति इतना मजबूत बनाया जाना चाहिए कि वह "शराबों की शराब" का आनंद ले सके, बिना उसके द्वारा नष्ट हुए, बल्कि, उलटे, उसके द्वारा अधिक मजबूत, अधिक युवा, अधिक तरोताजा कर दिया गया। ऐंद्रिकता की इतनी निंदा की गयी है कि इस बात ने मनुष्यों के पूरे जगत को निपट कमजोर, असंवेदनशील, जीवन से असंबंधित बना दिया है। तुम्हारी अधिकांश जड़ें काट दी गयी हैं; केवल कुछ जड़ें छोड़ दी गयी हैं ताकि तुम जीवन के नाम पर जैसे—तैसे जीवित भर रहो।

ऐंद्रिक सुख : महान प्रतीकात्मक सुख एक उच्चतर सुख और उच्चतम आशा का ऐंद्रिक सुख को एक संकेत के रूप में समझा जाना है कि और बड़े आनंद भी संभव हैं। सब कुछ तुम्हारे कलापूर्ण होने पर निर्भर करता है। सब कुछ निर्भर करता है कि कैसे तुम अपनी जीवन—ऊर्जाओं का उपयोग करते हो। सब कुछ निर्भर करता है यदि तुम ऐंद्रिक सुख पर रुक न जाओ। ऐंद्रिक सुख केवल एक तीर है यह संकेत करता हुआ कि और भी बड़े सुख हैं, कि और भी बड़ी खुशियां हैं, कि और भी बड़ी परितृप्तिया हैं।

लेकिन यदि तुम ऐंद्रिक सुख का त्याग करो... यह ऐसे ही है जैसे तुम किसी मील के पत्थर पर तीर का निशान देखो जो यह दिखा रहा हो कि यह जगह नहीं है रुक जाने की — आगे चलते चलो! त्यागी कह रहे हैं, उस तीर के निशान को पोंछ दो; उस मील के पत्थर का त्याग करो! लेकिन तब कौन तुम्हें संकेत देनेवाला है कि इसके पहले कि तुम जीवन के महानतम आनंद तक पहुंचो अभी तुम्हें काफी दूर जाना है?

ऐंद्रिक सुख केवल प्रारंभ है, अंत नहीं। लेकिन यदि तुम प्रारंभ का इनकार करते हो, तुमने अंत का भी इनकार कर दिया। यह इतना सरल तर्क है, लेकिन कभी—कभी जो बहुत स्पष्ट है वह सरलता से भूल जाता है। समस्त धर्म तुम्हें सिखाते रहे हैं, यदि तुम पेंइद्रक सुख का त्याग करो तो ही तुम आध्यात्मिक आनंदमयता को उपलब्ध हो सकोगे। यह बेतुका और अतर्कपूर्ण है।

ऐंद्रिक सुख आध्यात्मिक आनंदमयता की दिशा में कदम रखने का पत्थर होनेवाला है। तुम कदम रखने के पत्थर को ही नष्ट किये दे रहे हो। तुम कभी भी उच्चतर तलों तक नहीं पहुंचोगे — तुमने सीढ़ी ही हटा दी। सीढी कुछ ऐसी चीज है जिसका अतिक्रमण किया जाना है, त्याग नहीं! अतिक्रमण और त्याग के बीच के भेद को स्मरण रखना।

जरथुस्त्र कहेंगे, अतिक्रमण करो लेकिन त्यागो कभी नहीं; क्योंकि यदि तुम त्याग कर दो तो अतिक्रमण करने को ही कुछ न रहा। ऐंद्रिक सुखों का उनकी समस्त विविधताओं में आनंद लो और उतनी त्वरा से जितना संभव हो। उन्हें चुका डालो, ताकि अचानक तुम्हें चता चले — ऐंद्रिक सुखों का जगत तो खतम हुआ और मुझे और आगे जाना है। लेकिन ऐंद्रिक सुख ने तुम्हें रास्ता दिखाया है। तुम उसके प्रति अनुगृहीत होगे, तुम उसके खिलाफ न होगे। उसने तुम से कुछ छीना नहीं है, उसने तुम्हें केवल दिया है।

शक्ति की लिप्सा. इसकी निगाह के सामने मनुष्य रेगंता है और झुकता है और एड़ी— चोटी का पसीना एक करता है और सूअर अथवा सांप से भी नीचा बनता है — जब तक कि अंतत: विशाल घृणा की चीख उससे फूट नहीं पड़ती ।

शक्ति की लिप्सा : जो कि बहरहाल बडे सम्मोहक रूप से उठती है पवित्र व एकांतवासी तक को और आत्मनिर्भर ऊंचाइयों तक एक ऐसे प्रेम की तरफ दमकती हुई जो सांसारिक स्वर्गों पर लुभावने रूप से नीललोहित (पर्पल) खुशियां उकेरता है ।

शक्ति की लिप्सा : लेकिन कौन कहेगा इसे लिप्सा, जब कि शक्ति के पीछे ऊंचाई नीचे हकने की अभीप्सा करती है । सच में ऐसी अभीप्सा और अवरोह (उतार) में रुग्णता और लिप्सा नहीं है!

पूरी बात पर ही नजर डालनी होगी । शक्ति की लिप्सा ने गुलामी पैदा की है, मानवता को बहुत ढंगों से नष्ट किया है । शक्ति की लिप्सा हर हृदय मैं प्रज्वलित है । जरथुस्त्र इस प्रकार की शक्ति की लिप्सा के पक्ष में नहीं हैं — वह विध्वंसक और कुरूप है ।

लेकिन एक सृजनात्मक ढंग भी हो सकता है, और इस सृजनात्मक चीज को वह शक्ति की आकाक्षा कहते हैं, शक्ति की लिप्सा नहीं । शक्ति की आकाक्षा एक सर्वथा भिन्न घटना है; लेकिन धर्मों ने कोई विभेद नहीं किया है । उनके लिए शक्ति की लिप्सा ही सब कुछ है — उसमें कुछ भी ऐसा नहीं है जो कोई भी योगदान कर सकता हो । लेकिन जरथुस्त्र को लगता है कि उसके भीतर इतनी क्षमता है कि वह दुनिया का महानतम सृजनात्मक बल बन सकती है । लेकिन वह लिप्सा नहीं हो सकती । और उसे लिप्सा कहा तक नहीं जा सकता ।

शक्ति की लिप्सा : लेकिन कौन कहेगा इसे लिप्सा, जब कि शक्ति के पीछे ऊंचाई नीचे झुकने की अभीप्सा करती है! सच में ऐसी अभीप्सा और अवरोह (उतार) में रुग्णता और लिप्सा नहीं है! शक्ति की आकाक्षा महान फर्क पैदा करती है । शक्ति की आकाक्षा का सीधा सा मतलब है कि दूसरों के ऊपर शक्ति नहीं । शक्ति की लिप्सा का मतलब दूसरा के ऊपर शाक्ति । शक्ति की आकाक्षा का मतलब अपने आप में अधिक—अधिक शक्तिशाली होते जाना, अधिक—अधिक तेजोमय, अधिक—अधिक मजबूत, अधिक—अधिक अखंड, अधिक—अधिक एक शेर, एक निजतासंपन्न व्यक्ति ।

शक्ति की आकाक्षा का दूसरे से कुछ लेना—देना नहीं है । यह तुम्हारी अपनी निजी कसरत है ऊंचाइयों तक उठने की । यह तुम्हारा अपना निजी अनुशासन है अपनी आत्मा के उच्चतम शिखरों तक पहुंचने का । यह किसी के भी प्रति विध्वंसात्मक नहीं है; उलटे, यह औरों के लिए प्रेरणा बन सकता है । इसे दूसरों के लिए प्रेरणा बनना ही है । यह एक महान प्रोत्साहन हो सकता है : यदि एक व्यक्ति जो एक दिन तुम्हारे बीच था आज चेतना के उच्चतम शिखर पर है, यह बात एक ललक, एक अभीप्सा, एक संकल्प पैदा कर सकती है — जो तुम्हारे ही भीतर सुषुप्त पड़े हैं, जो तुम्हारे ही भीतर निष्किय पड़े हैं — कि तुम भी उच्च शिखर हो सकते हो, कि यह तुम्हारी भी क्षमता के भीतर है ।

चाहे व्यक्ति ईश्वरों और दैवी पादप्रहारों के समक्ष खुशामदी हो अथवा मनुष्यों और उनकी तुच्छ रायों के समक्ष : यह सब प्रकार के गुलामों पर मूकती है यह यशस्वी स्वार्थपरायणता!...

... स्वार्थपरायणता का दुरुपयोग करना — ठीक वही सद्‌गुण रहा है और सद्‌गुण कहा गया है । और 'नि:स्वार्थ' — वही है जो भले कारणों से ये सारे दुनिया से थके— हारे कायर... होने की अभिलाषा करते थे!

जरथुस्त्र कह रहे हैं कि स्वार्थपरायणता सहज स्वभाव है चीजों का । लेकिन कायर लोग चाहते हैं कि निस्वार्थता सद्‌गुण हो, क्योंकि निस्वार्थता में कायर लोग जीतने वाले हैं ।

भारत में तुम्हें पूरे देश भर में हर कहीं भिखारी मिलेंगे । और हर भिखारी कह रहा है, 'कुछ मिल जाए मुझे । भिखारी को देना पुण्य है, और इसके बदले में तुम्हें महान लाभ होगा । ' अब भिखारियों का होना ही जाहिर करता है कि समाज रुग्ण है, कि समाज विक्षिप्त है; कि वह उन बच्चों को पैदा किये चला जाता है जिन्हें वह भोजन भी नहीं दे सकता, कि यह नितात अतार्किक बात है कि समाज का एक वर्ग देश का पूरा धन इकट्ठा कर लेगा और करोड़ों लोग भूखे मर रहे होंगे ।

एक स्वस्थचित्त समाज उन सब प्रकार के लोगों को होने से रोकेगा जो निःस्वार्थ सेवा चाहते हैं । हम ऐसा समाज निर्मित कर सकते हैं जो स्वस्थ हो; हम ऐसा समाज निर्मित कर सकते हैं जो धनी हो, आरामदेह रूप से धनी, आरामदेह रूप से स्वस्थ । लेकिन यह केवल तभी संभव है यदि हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी स्वयं अपने कंधों पर ले ।

यही है जो उनका स्वार्थपरायणता से अर्थ है ।

और यदि तुम्हारे पास बहुत ज्यादा है बांटने के लिए तो वह तुम्हारा आनंद होना चाहिए कर्तव्य नहीं । वह तुम्हारा आनंद होना चाहिए पुण्य नहीं ।

लेकिन अब वह दिन वह रूपांतरण वह फैसले की तलवार वह महा मध्याह्न वेला उन सब पर आती है : तब बहुत सी बातें खुलासा होगी ।

और वह जो अहंकार को स्वस्थ व पवित्र घोषित करता है और स्वार्थपरायणता को यशस्वी — सच में वह एक पैगंबर उसे भी घोषित करता है जो वह जानता है : 'लो, वह आती है, वह निकट है, महा मध्याह्न वेला!'

मानवता के जीवन में महानतम क्षण को जरथुस्त्र "महा मध्याह्न वेला" कहते हैं — जब स्वार्थपरायणता महज स्वस्थ होगी, जब हर वह चीज जो पहले निंदित की गयी है वैसा नहीं होगा और हर चीज जो स्वाभाविक व मानवीय है हमारे धर्म के रूप में, हमारी आध्यात्मिकता के रूप में घोषित कर दी जाएगी । स्वभाव स्वयं हमारा धर्म है, और किसी अन्य धर्म की जरूरत नहीं है ।

'लो वह आती है वह निकट है महा मध्याह्न वेला!'

.....ऐसा जरमुस्त्र ने कहा ।

भारता—मनोवृत्ति की बात-भाग-1

प्यारे ओशो,

... मैं भारता की मनोवृत्ति का शत्रु हूं : और सच में घातक शत्रु महा शपूर जन्मजात शत्रु!... मैं उस संबंध में एक गीत गा सकता हूं — और मैं गाऊंगा एक यद्यपि मैं एक खाली मकान में अकेला हूं और उसे मुझे स्वयं के कानों के लिए ही गाना पड़ेगा।

अन्य गायक भी हैं ठीक से कहें तो जिनकी आवाजें मृदु हो उठती हैं जिनके हाथ भावभंगिमायुक्त हो उठते हैं जिनकी आखें अभिव्यक्तिपूर्ण हो उठती हैं जिनके हृदय जाग उठते हैं केवल जब मकान लोगों से भरा हुआ होता है : मैं उनमें से एक नहीं हूं। वह व्यक्ति जो एक दिन मनुष्यों को उड़ना सिखाएगा समस्त सीमा— पत्थरों को हटा चुका ' होगा; समस्त सीमा— पत्थर स्वयं ही उस तक हवा में उड़ेगे वह पृथ्वी का नये सिरे से बप्तिस्मा करगे? — 'निर्भार' के रूप में।

शुतुरमुर्ग किसी भी घोडे से तेज दौड़ता है लेकिन वह भी अपना सिर भारी पृथ्वी में भारी रूप से गड़ाता है : वैसा ही है वह मनुष्य जो उड़ नहीं सकता अभी। वह पृथ्वी और जीवन को भारी कहता है : और यही भारता की मनोवृत्ति को चाहिए! लेकिन वह व्यक्ति जो हल्का और एक पंछी बनना चाहता हो उसे स्वयं को प्रेम करना अनिवार्य है — ऐसा ही मैं सिखाता हूं ठीक से कहें तो बीमारों और मृतकों के साथ प्रेम से युक्त नहीं... व्यक्ति को स्वयं को एक गहन एवम् स्वस्थ प्रेम सहित प्रेम करना सीखना अनिवार्य है ताकि व्यक्ति इसे स्वयं अपने साथ टिकासके और इधर-उधर भटकता न फिरें—ऐसा हीमैं सिखाता हूं।

ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

कोई व्यक्ति जो चाहता है कि मनुष्य सितारों की ऊंचाइयों तक उठे वह भारता (गुरुत्व) की मनोवृत्ति का शत्रु होने को विवश है। भारता (गुरुत्व) केवल एक भौतिक घटना भर नहीं है, उसका प्रतिरूप आध्यात्मिक जीवन में भी उपस्थित है। ठीक जैसे कि वस्तुएं पृथ्वी द्वारा नीचे की तरफ खींची जाती हैं और हम इसे गुरुत्वाकर्षण का बल (फोर्स ऑफ ग्रेविटी) कहते हैं, वैसे ही कोई चीज मनुष्य के भीतर भी उसे नीचे की तरफ खींचती है, जिसे जरथुस्त्र भारता की मनोवृत्ति (स्पिरिट ऑफ ग्रेविटी) कहते हैं क्यों मनुष्य एक बौना ही बना रह गया है जबकि उसकी क्षमता बृहत होने की है? क्यों मनुष्य एक नन्ही सी झाड़ी ही बना रह गया है जबकि उसकी क्षमता लेबनान के विशाल देवदार होने की है, आकाश की ऊंचाइयों में पहुंचता हुआ, खुलेपन में, स्वतंत्रता में? क्यों मनुष्य निम्नतम बातों से ही चिपकता है बजाय उस सबसे मुक्त हो जाने के जो उसे नीच, कुरूप, हिंसक, ईर्ष्यालु बनाते हैं? क्यों नहीं वह प्रेम, चेतना, आनदमयता की ऊंचाइयों में विकसित हो सकता और हर ओर मंगलमयता के फूल बरसा सकता? ऐसा कुछ होना ही चाहिए जो उसे नीचे की तरफ खींचता है और ऊपर की दिशा में नहीं उठने देता। जरथुस्त्र इसे बिलकुल सही नाम देते हैं — गुरुत्व (भारता) की मनोवृत्ति। और व्यक्ति को बहुत सजग होना होगा इस गुरुत्वाकर्षण से छुटकारा पांने के लिए। यह गुरुत्वाकर्षण मनुष्य पर तभी काम करता है जब वह अचेतन हो; जितना अधिक अचेतन वह है, उतना ही अधिक वह भारता के शिकंजे में है। जितना ज्यादा चैतन्य वह बनता है, उतना ही ज्यादा वह स्वयं से ऊपर उठने के लिए स्वतंत्र होता है। और जब तक मनुष्य स्वयं से ऊपर न उठे आगे ऊर्ध्व—विकास की कोई संभावना नहीं बची है।

जरथुस्त्र कहते हैं, मैं भारता की मनोवृत्ति का शत्रु हूं : और सच में घातक शत्रु: महा शत्रु जन्मजात शत्रु। — प्रत्येक रहस्यदर्शी है। रहस्यदर्शिता की परिभाषा भारता की मनोवृत्ति के खिलाफ संघर्ष के रूप में की जा सकती है।

मैं उस संबंध में एक गीत गा सकता हूं — और मैं गाऊंगा एक यद्यपि मैं एक खाली मकान में अकेला हूं और उसे मुझे स्वयं के कानों के लिए ही गाना पड़ेगा।

अन्य गायक भी हैं ठीक से कहें तो जिनकी आवाजें मृदु हो उठती हैं जिनके हाथ भावभगिमायुक्त हो उठते हैं जिनकी आखें अभिव्यक्तिपूर्ण हो उठती हैं जिनके हृदय जाग उठते हैं केवल जब मकान लोगों से भरा हुआ होता है : मैं उनमें से एक नहीं हूं।

वह व्यक्ति जो एक दिन मनुष्यों को उड़ना सिखाएगा समस्त सीमा— पत्थरों को हटा चुका होगा; समस्त सीमा— पत्थर स्वयं ही उस तक हवा में उडेगे वह पृथ्वी का नये सिरे से बप्तिस्मा करेगा निर्भार के रूप में।

पहले, इस बात की हलकी झलक लें कि क्या तुम्हारे भीतर भारता की मनोवृत्ति निर्मित करता है।

चीजों पर सब प्रकार की अधिकार— भावना तुम्हें भारी बनाती है, तुम्हें उड़ने नहीं देती; वह तुम्हारे पंख नष्ट कर देती है। मैं चीजों के उपयोग के खिलाफ नहीं हूं। उतनी सारी चीजों का उपयोग करो जितनी तुम कर सको, लेकिन उन पर कब्जा मत जमाओ, क्योंकि जैसे ही तुम किसी चीज पर कब्जा जमाते हो, बिना तुम्हें पता चले ही तुम उन चीजों के कब्जे में हो जाते हो। कोई मनुष्य जो केवल रुपये—पैसों की चाह करता है, स्वयं को अपनी ही धन—दौलत का कैदी हो गया पाता है। वह सोचा करता था कि उसका कब्जा है, लेकिन अंततः वह पाता है कि वह कब्जे में है।

यह रहस्यदर्शी उस गुरुत्वाकर्षण नियम के अंतर्गत नहीं है जो लोगों को नीचे की ओर खींचता है। समस्या के प्रति उसकी पद्य का ढंग संकेत देता है कि उसके पास पंख हैं। भारता की मनोवृत्ति उसे बाधा नहीं पहुंचा सकती।

जब कभी भी तुम्हें कुछ ऐसा करने का भाव होता है जो किसी व्यक्ति के लिए नुकसानमंद है, जब कभी भी तुम कुछ ऐसा करते हो जो केवल एक पाखंड है, जब कभी भी तुम कुछ करते हो जो अभिनय, अप्रामाणिक, गैरनिष्ठापूर्ण के सिवाय अन्य कुछ नहीं है, जब कभी भी तुम सच्चे नहीं हौ रहे हो, तब तुम नीचे की ओर गिर रहे हो, तुम अपनी ऊंचाइयां खो रहे हो। जब कभी भी तुम ईर्ष्यालु महसूस करते हो, घृणा से भरे हुए, हिंसा, क्रोध, रोष से भरे हुए तुम इसे महसूस कर सकते हो कि तुम भारी हो गये। ईर्ष्या तुम्हें भारी करती है, क्रोध तुम्हें भारी करता है, अहकारपूर्ण दिखावे तुम्हें भारी करते हैं।

तुम करीब—करीब इसे महसूस कर सकते हो और चीजों के बीच भेद कर सकते हो — क्या तुम्हें भारी करता है और क्या तुम्हें हल्का करता है। प्रेम तुम्हें हल्का करता है, दयाभाव तुम्हें हल्का करता है, करुणा तुम्हें हल्का करती है, मौन तुम्हें हल्का करता है, उल्लास तुम्हें हल्का करता है। कोई भी चीज जो तुम्हें हल्का और निर्भार करती है तुम्हें कैद से मुक्त होने में मदद पहुंचाती है।

वह पृथ्वी और जीवन को भारी कहता है : और यही भारता की मनोवृत्ति को चाहिए! लेकिन वह व्यक्ति जो हल्का और एक पंछी बनना चाहता हो उसे स्वयं को प्रेम करना अनिवार्य है — ऐसा ही मैं सिखाता हूं।

पहली शिक्षा उसके लिए जो भारता की कैद से निकलना चाहता है स्वयं को प्रेम करने की है। कोई धर्म उसे नहीं सिखाता। दरअसल, समस्त धर्म ठीक उससे उलटा सिखाते हैं — स्वयं से नफरत करो। वे इसे इतने साफ तौर से नहीं कहते, लेकिन जो कुछ भी वे कहते हैं, यही उसका अंतरस्थ अर्थ है। तुम किसी योग्य नहीं; तुम एक पापी हो; तुम्हें अपनी योग्यता नैतिक होकर, धार्मिक होकर, संत होकर सिद्ध करनी होगी। वे तुम्हें आदर्श देते हैं और तुम्हें उन आदर्शों की कार्बन प्रतिलिपि होना है — तब वे तुम्हें सम्मान देते हैं। लेकिन कार्बन प्रतिलिपि कार्बन प्रतिलिपि ही है; वह तुम्हारी मौलिक आत्मा नहीं है — वह तुम नहीं हो!

तुम गौतम बुद्ध बनने की कोशिश कर सकते हो — और पच्चीस शताब्दियों से पूरब में लाखों—लाखों लोगों ने गौतम बुद्ध बनने की कोशिश की है, लेकिन कोई एक भी उस ऊंचाई तक पहुंच नहीं सका है। ज्यादा से ज्यादा वे बौद्ध बनकर रह गये, बुद्ध के अनुयायी, और वह भी बहुत कुनकुने—कुनकुने, सब प्रकार के पाखंडों से युक्त; न गौतम बुद्ध की निष्ठा उनमें, न गौतम बुद्ध जैसी खोज उनमें।

भारता की मनोवृत्ति तुम्हें सिखाती है कि जीवन भारयुक्त है; लेकिन जरथुस्त्र कह रहे हैं, यह तुम पर निर्भर है। यह तुम्हारा चुनाव है कि जीवन भारयुक्त होनेवाला है अथवा हलका होनेवाला है। यदि तुम भीड़ के साथ न चिपको, यदि तुम मालिकियत के साथ न चिपको, तो जीवन नितांत हलका हो सकता है। उसके लिए पहला नींव का पत्थर है स्वयं को प्रेम करना। किसी की नकल करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वही बिंदु है जहां हर व्यक्ति भटक गया है।

स्वयं को वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम हो।

वह तुम्हारे विकास को नहीं रोकता। दरअसल, जितना अधिक तुम स्वयं को प्रेम करते हो उतना ही अधिक तुम स्वयं को परिष्कृत करते हो। जितना अधिक तुम स्वयं को प्रेम करते हो उतने ही अधिक तुम प्रसादपूर्ण बनते हो। जितना अधिक तुम स्वयं को प्रेम करते हो उतनी ही अधिक मौलिक व प्रामाणिक तुम्हारी निजता है। और केवल एक मौलिक निजता—संपन्न व्यक्ति ही एक पक्षी की तरह इतना हलका हो सकता है कि उसकी अंतश्चेतना का समग्र आकाश ही उसे उड़ने के लिए उपलब्ध होता है। तब कोई इसे रोक नहीं सकता।

ठीक से कहें तो बीमारों और मृतकों के साथ प्रेम से युक्त नहीं... धर्म तुमसे कहते रहे हैं : बीमारों को प्रेम करो, मृतकों को प्रेम करो। अस्पताल जाओ, अस्पताल बनवाओ, गरीबों की सेवा करो। ऐसा लगता है कि सभी धर्मों का लेना—देना बीमारों से ही है, मृतकों से ही है, गरीबों से ही है; किसी का भी लेना—देना तुमसे और तुम्हारी समृद्धियों से और तुम्हारी महानताओं से और तुम्हारी भव्यताओं से नहीं है। मैं तुमसे कहता हूं : जब तक तुम स्वयं को प्रेम नहीं करते, जब तक तुमने अपनी ही समृद्धियों, अपनी ही ऊंचाइयों को नहीं पा लिया है, तुम किसी भी व्यक्ति के साथ अपना प्रेम बांटने में समर्थ न होओगे। निश्चित ही, बीमार व मृत को देखभाल की जरूरत है, लेकिन उनको प्रेम की जरूरत नहीं है। इसे समझ लेना जरूरी है, क्योंकि ईसाइयत ने इसे करीब—करीब सार्वभौम रूप से स्वीकृत सत्य बना दिया है—, किं— बीमारों और मृतकों को प्रेम करना महानतम धार्मिक बात है, सर्वाधिक आध्यात्मिक। लेकिन यह नितात रूप से मनोविज्ञान कें विपरीत है और स्वभाव के विपरीत है।

मैं तुम्हारे साथ स्पष्ट रहना चाहता हूं — बीमारों की देखभाल करो, लेकिन प्रेम कभी मत प्रदर्शित करो। बीमार की देखभाल करना बिलकुल ही अलग बात है। तटस्थ रहो, क्योंकि सिरदर्द ऐसी कोई महा घटना नहीं है; देखभाल करो, लेकिन अपनी मिठबोलियों से बचो! बहुत ही व्यावहारिक ढंग से देखभाल करो। उसके सिर में दवा लगाओ, लेकिन प्रेम मत दर्शाओ क्योंकि वह खतरनाक है। जब एक बच्चा बीमार है, उसकी देखभाल करो, लेकिन नितात तटस्थ रहकर। बच्चे को समझ में आने दो किं बीमार होकर वह तुम्हें ब्लैकमेल नहीं कर सकता। पूरी मानवता ही एक—दूसरे को ब्लैकमेल कर रही है। रुग्णावस्था, वृद्धावस्था, बीमारियां करीब—करीब मांगपूर्ण बन चुकी हैं — तुम्हें मुझे प्रेम करना ही होगा क्योंकि मैं बीमार हूं मैं वृद्ध हूं...

जरथुस्त्र सही हैं ठीक से कहें तो बीमारों और मृतकों के साथ प्रेम से युक्त नहीं।

व्यक्ति को स्वयं को एक गहन एवम् स्वस्थ प्रेम सहित प्रेम करना सीखना अनिवार्य है ताकि व्यक्ति इसे स्वयं अपने साथ टिका सके और इधर—उधर भटकता न फिरे — ऐसा ही मैं सिखाता हूं।

तुम्हें स्वयं को प्रेम करना चाहिए बिना यह सोचे कि तुम इसके पात्र हो अथवा नहीं। तुम जीवित हो—वह पर्याप्त सुबूत है कि तुम प्रेम के पात्र हो, ठीक जैसे कि तुम सांस लेने के पात्र हो। तुम नहीं सोचते कि तुम सास लेने के पात्र हो अथवा नहीं। प्रेम आत्मा के लिए ख्म पोषण है, ठीक जैसे कि भोजन है शरीर के लिए। और यदि तुम स्वयं के प्रति प्रेम से भरे हुए हो तो तुम दूसरों को भी प्रेम करने में सक्षम होओगे। लेकिन स्वस्थ को प्रेम करो, मजबूत को प्रेम करो।

बीमार की देखभाल करो, वृद्ध की देखभाल करो; लेकिन देखभाल बिलकुल भिन्न बात है। प्रेम और देखभाल के बीच का भेद एक मा और एक नर्स के बीच का भेद है। नर्स देखभाल करती है, मा प्रेम करती है। जब बच्चा बीमार है तो मां के लिए भी केवल नर्स भर होना बेहतर है। जब बच्चा स्वस्थ है, उतना प्रेम बरसाओ उस पर जितना तुम बरसा सकते होओ। प्रेम का साहचर्य स्वस्थता, शक्ति और मेधा के साथ होने दो; वह बच्चे को उसके जीवन में बहुत दूर तक मदद करेगा।

और सच में, स्वयं को प्रेम करना सीखना न आज के लिए आदेश है न कल के लिए। बल्कि कला सब में उत्कृष्टतम सूक्ष्मतम परम और सर्वाधिक अध्यवसायी है। यह आदेश नहीं है, यह कला है, एक अनुशासन; तुम्हें इसे सीखना होगा। संभवत: प्रेम महानतम कला है जीवन में। लेकिन व्यक्ति सोचता है कि वह प्रेम करने की क्षमता लेकर ही पैदा हुआ है, तो कोई भी उसे परिष्कृत नहीं श्च? वह अपरिष्कृत और आदिम ही बना रह जाता है। और यह उन ऊंचाइयों तक परिष्कृत किया जा सकता कि उन ऊंचाइयों में तुम कह सकतै हो : प्रेम परमात्मा है।

एक प्रतिभाशाली व्यक्ति, एक व्यक्ति जिसके पास थोड़ी भी ध्यानमय चेतना है, अपने जीवन कला का एक सुंदर नमूना बना सकता है; उसे प्रेम से, संगीत से, काव्य से, नृत्य से इतना भर सकता जिसकी कोई सीमाएं नहीं हैं। जीवन कठोर नहीं है। यह मनुष्य की मूढ़ता है जो उसे कठोर बना देती है।

ऐसा जरमुस्त्र ने कहा.....

प्यारे ओशो

खोजे जाने के लिए मनुष्य दुष्कर है, सबसे बढ़कर स्वयं के लिए; मन प्राय: आत्मा के संबंध से झूठ बोलता है

सच में, मैं उनको भी नापसंद करता हूं जो हर चीज को अच्छा कहते हैं और इस दुनिया को

सर्वोत्तम। मैं ऐसे लोगों को सर्व— तुष्ट कहता हूं।

सर्व—तुष्टता जो हर चीज का स्वाद लेना जानती है : वह सर्वोत्तम रुचि नहीं है। मैं हठीली और तुईनुकमिजाज जीभों और पेटों का सम्मान करता हूं जिन्होंने 'मैं' और 'हां' और 'ना' कहना सीखा यह बहरहाल मेरी शिक्षा है : वह व्यक्ति जो एक दिन ल्टना सीखना चाहता है पहले उसे खड़ा होना और चलना और दद्वैना और चढ़ना और नाचना सीखना जरूरी है — तुम उड़कर ही उड़ना नहीं सीख सकते!

मैं अपने सत्य तक विविध मार्गों से और विविध तरीकों में पहुंचा : यह अकेली एक सीढ़ी न थी जिस पर मैं उस ऊंचाई तक चढ़ा जहां मेरी आखें मेरे विस्तारों का सर्वेक्षण करती हैं।

और मैने अनिच्छापूर्वक ही मार्ग पूछा है — उसने सदैव मेरी रूचि को ठेस पहुंचायी। उसके बजाय मैने स्वयं मार्गों से ही प्रश्न पूछा है और उन पर प्रयास किया है।

मेरी सारी प्रगति एक प्रयास और एक प्रश्नात्मकता रही है —और सच में, व्यक्ति को सीखना ही पड़ता है कि कैसे इस प्रश्नात्मकता का समाधान करना। वह बहरहाल—मेरी रुचि के अनुकूल है :

अच्छी रुचि नहीं बुरी रुचि नहीं बस मेरी रुचि जिसे न अब मैं और अधिक छिपाता हूं और जिसके प्रति न अब मैं और अधिक शर्मिंदा हूं।

'यह — है अब मेरा मार्ग : तुम्हारा कहां है?' इस प्रकार मैने उन्हें जवाब दिया जिन्होने

मुझसे 'मार्ग' पूछा। क्योकि मार्ग — है ही नहीं!

ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।.....

समस्त धर्म और समस्त दर्शन इस मान्यता पर आधारित हैं कि परम सत्य के लिए मार्ग है। जरथुस्त्र इसे सर्वथा अस्वीकार करते हैं। वह कहते हैं कि मार्ग जैसी कोई चीज नहीं है। और यदि मार्ग जैसी कोई चीज नहीं है, तो इस बात के विशाल निहितार्थ हैं।

पहली बात, यदि वे लोग जो मार्ग में यकीन करते हैं सही थे, तो मार्ग पहले से ही है — तुम्हें केवल अनुसरण करना है, तुम्हें केवल मार्ग पर आगे बढ़ना है। यही है जिस प्रकार संगठित धर्मों का जन्म होता है। उनके पास राजमार्ग और महा राजमार्ग होते हैं, और करोड़ों लोग साथ—साथ परम सत्य की तरफ चलते हैं। कोई भी कभी फिक्र नहीं करता कि क्या कोई व्यक्ति कभी भी कहीं पहुंचता है।

पच्चीस शताब्दिया बीत गयी हैं, और करोड़ों लोग उस मार्ग पर चले हैं जिसे उन्होंने सोचा कि गौतम बुद्ध का मार्ग है। लेकिन किसी ने भी पलट कर नहीं कहा है, कि मैं पहुंच गया हूं मार्ग ने मुझे वायदा किये गये देश में पहुंचा दिया है। और यही हालत शेष सारे धर्मों की है। हिंदू दूसरा कृष्ण नहीं पैदा कर पाए हैं न ही ईसाइयों ने दूसरा क्राइस्ट पैदा किया है।

यह अजीब है.... तो भी करोड़ों लोग क्रियाकाडो विशेष, प्रार्थनाओं विशेष, ग्रंथों विशेष का अनुसरण कर रहे हैं; वे उनके "मार्ग" के अंग हैं। और समस्त मार्ग असफल रहे हैं — क्योंकि यदि ये मार्ग सफल हुए होते तो दुनिया पूरी तरह भिन्न होती। यह सतत युद्धों, हिंसाओं, अपराधों, हत्याओं, आत्मघातों, पागलपनों और सब

प्रकार की विकृतियो की दुनिया न होती। और मनुष्य ऐसी दुर्दशा में न होता जैसा वह है। वह अन्य कुछ नहीं क्येल एक गहरा घाव है जो अच्छा होना जानता ही नहीं।

हर व्यक्ति अपना घाव छिपा रहा है। तुम केवल अपने आसुओ को छिपाने के लिए हंसते हो, और तुम एक दूसरे को दिखाते हो कि सब कुछ एकदम ठीक है; और हर व्यक्ति जानता है कि कुछ भी जरा भी ठीक नहीं है।

हर व्यक्ति एक ऐसा चेहरा दिखा रहा है जो उसका है ही नहीं। कोई भी स्वयं को और अपनी पीड़ाओं को प्रगट नहीं करना चाहता। हजारों वर्षों से लोग महान धर्मों का पालन करते रहे हैं महान धार्मिक नेताओं का अनुसरण करते रहे हैं, और यह है उसका फल। यदि वृक्ष की पहचान उसके फल द्वारा होती है, तो तुम्हारे समस्त धर्मों के संबंध में निर्णय तुम्हारी पीड़ा और दुर्दशा की दशा से किया जाना चाहिए। तुम अपने समूचे अतीत के फल हो।

जरथुस्त्र बिलकुल सही हैं : कोई मार्ग नहीं है। उनका ठीक—ठीक मतलब क्या है जब वह कहते हैं कि मार्ग नहीं है?

वह बहुत सी बातें कह रहे हैं। एक बात : तुम्हें चलना होगा, और अपने चलने के द्वारा मार्ग निर्मित करना होगा; तुम्हें बना—बनाया मार्ग नहीं मिलेगा। यह इतना सस्ता नहीं है, सत्य के परम साक्षात्कार तक पहुंचना। तुम्हें स्वयं चलकर ही मार्ग बनाना होगा; मार्ग बना—बनाया हुआ नहीं है, पडा, तुम्हारा इंतजार करता। वह ठीक आकाश के जैसा है : पक्षी उड़ते हैं, लेकिन वे कोई पदचिह्न नहीं छोडते। तुम उनका अनुसरण नलईं कर सकते; पीछे कोई पदचिह्न नहीं छूटे हैं।

यही कारण है कि सत्य का अनुभव सदा कुआरा है। तुमसे पहले वहा कोई भी नहीं गया है। तुमसे पहले वहा कोई हो ही नहीं सकता। वे सब के सब अपने ही अंतर्केंद्र में गये; तुम्हारा अंतर्केंद्र अभी भी फ्लुंारा है और कुआरा रहेगा जब तक तुम वहां पहुंचते नहीं।

सत्य की खोज स्वयं के साथ प्रेम में पड़ना है।

सत्य का पाया जाना कोई वस्तुगत बात नहीं है; यह बस स्वयं का उद्घाटन है, बस अपने ही होने के सौंदर्य और आनदमयता, शाति और शाश्वतता का पता चल जाना है।

आत्मखोज की राह में मनुष्य का मन ही उसकी सबसे बड़ी बाधा है, क्योंकि मन तुम से तुम्हारे ही बारे में झूठ बोले चला जाता है : तुम यह हो, तुम वह हो। वह सुंदर—सुंदर झूठ बोलता है : तुम अमर्त्य आत्मा हो, तुम स्वयं ब्रह्म हो, तुम शाश्वत चेतना हो, तुम सत्य हो, तुम सौंदर्य हो, तुम शिव हो। लेकिन ये सब केवल रिक्त शब्द हैं। तुमने उन्हें सीख लिया है, भिन्न—भिन्न स्रोतों से उधार ले लिया है। वे सब के सब बस कचरा हैं। लेकिन वे तुम्हें अटका ले सकते हैं, क्योंकि वे तुम्हें मिथ्या बोध दे सकते हैं कि तुम स्वयं को जानते ही हो। और यदि तुम स्वयं को जानते ही हो, तो अन्वेषण पर निकलने में कोई तुक नहीं है।

यह है तुम्हारे मन के संबंध में छलपूर्ण सर्वाधिक कुरूप तथ्य, कि वह बहुत सुंदर ढंग से झूठ बोलता है। वह धर्मग्रंथों से उद्धरण देता है, वह तुम्हें आश्वस्त करता है कि तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है — बस पवित्र बाइबिल पढ़ो, अथवा पवित्र गीता, अथवा पवित्र कुरान और तुम्हें सब कुछ मिल जाएगा। खोज में जाने की जरूरत नहीं है; लोग आत्मा के संबंध में सब कुछ पहले ही खोज चुके हैं। यह सच है, लोगों ने आत्मा के संबंध में सब कुछ पहले ही पता कर लिया है, ठीक जैसे कि लोगों ने प्रेम के संबंध में सब कुछ पहले ही जान लिया है, लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि प्रेम के संबंध में उनके निष्कर्ष तुम्हें प्रेम का स्वाद दे देंगे? उनके निष्कर्ष तुम्हारे लिए केवल शब्द ही रहेंगे; वे अनुभव नहीं बन सकते।

हर व्यक्ति को एक ऐसे अद्वितीय स्थान पर आना होगा — जिसकी पहले कभी किसी ने छानबीन नहीं की है; वह उसका अपना है। यह है गरिमा, यह है विशेषाधिकार मनुष्य होने का।

सच में, मैं उन सबको नापसंद करता हूं जो हर चीज को अच्छा कहते हैं और इस दुनिया को सर्वोत्तम! मैं ऐसे लोगों को सर्व— तुष्ट कहता हूं।

जरथुस्त्र की भाषा में सर्व—तुष्ट लोग मनुष्य भी नहीं हैं; वे भैंसें हैं। भैंसें सर्व—तुष्ट होती हैं। क्या तुमने कोई अ—तुष्ट भैंस देखी है, दुखी, उदास, निराश? नहीं, भैंसें सर्व—तुष्ट हैं — वे तुम्हारे सब संत हैं जो भैंसों के रूप में पैदा हो गये हैं।

प्रामाणिक मनुष्य विशाल असंतोष में होता है — हर चीज से असंतोष। उस असंतोष के बिना कोई प्रगति नहीं है; उस असंतोष के बिना कोई विकास नहीं है; उस असंतोष के बिना सितारों तक पहुंच जाने की कोई कशमकश नहीं है।

तुम्हारे पास एक महान असंतोष की जरूरत है — आध्यात्मिक होने के लिए। संतोष निम्नतमों के लिए है। जरथुस्त्र के लिए सर्व—तुष्ट महत अपमान का शब्द है।

वह कह रहे हैं : सच में मैं उन सबको नापसंद करता हूं जो हर चीज को अच्छा कहते हैं और इस दुनिया को सर्वोत्तम। और यही है जो तुम्हारे धर्म तुम्हें सिखाते रहे हैं : सब कुछ अच्छा है, अपने जीवन के साथ संतुष्ट बनो। यदि कहीं कोई दुख भी है, वह बस तुम्हारी श्रद्धा की परीक्षा है। उससे गुजरो, लेकिन असंतुष्ट मत बनो और सब कुछ अच्छा है।

इन शिक्षाओं के कारण मनुष्य कुठितमति रह गया है — कुठितमति जहा तक आध्यात्मिक उत्काति का संबंध है; कुठितमति जहा तक परममानव के रूप में उसके विकास का संबंध है। तुम्हें एक दिव्य असंतोष की जरूरत है। केवल तब तुम्हारे भीतर एक गहन अभीप्सा जगेगी स्वयं के पारु जाने की, अपने तथाकथित ज्ञान के पार जाने की, अपनी तथाकथित नैतिकता के पार जाने की, अपने तथाकथित समाज के पार जाने की।

यह पार—गमन एक सतत प्रक्रिया है; यह कभी रुकता नहीं।

जीवन का मूलभूत नियम है : स्वयं पर विजय पाना, फिर—फिर से। यही जरथुस्त्र सिखाते हैं और मैं उनके साथ अपनी निपट समग्रता से राजी हूं।

मनुष्य को दिव्य असंतोष की जरूरत है — एक अभीप्सा सुदूर के लिए एक अभीप्सा असंभव के लिए। जब तक तुम्हारे पास असंभव के लिए अभीप्सा न हो तुम्हारे पास महान आत्मा न होगी। छुद्र आत्मा सर्व—तुष्ट है — एक पत्नी हो, दो—तीन बच्चे हों, एक घर हो, एक पंसारी की दुकान हो, हर रविवार सिनेमा देखने मिलता हो। यह जीवन और तुम सर्व—तुष्ट हो; सब कुछ बिलकुल ठीक चल रहा

जैसे तुम हो ऐसे ही रहकर तुम स्वयं को नहीं जान सकते। तुम्हें स्वयं को परिष्कृत करना होगा, तुम्हें और अधिक मौन सीखना होगा, तुम्हें और अधिक काव्यमय होना होगा, तुम्हें और अधिक संवेदनशील होना होगा, तुम्हें और अधिक सचेत होना होगा, तुम्हें और अधिक ध्यानपूर्ण होना होगा, तुम्हें और अधिक अनुग्रहपूर्ण होना होगा। और तुम्हें सब प्रकार की घिसी—पिटी बातों के प्रति विशाल रूप से असंतुष्ट होना होगा; लोग तो संतुष्ट हैं....

कितना आसान है मिथ्या पहचान निर्मित कर लेना।

यह बहरहाल मेरी शिक्षा है : वह व्यक्ति जो एक दिन उड़ना चाहता है पहले उसे खड़ा होना और चलना और दौडना और चढना और नाचना सीखना जरूरी है — तुम उड़कर ही उड़ना नहीं सीख सकते।

तुम्हें कदम—कदम ही जाना होगा। यदि तुम एक दिन सितारों तक उड़ना चाहते हो, तो धीरे—धीरे बढ़ो, कदम—कदम। भरपूर नृत्य करो। इतनी गहनता से नृत्य करो कि नर्तक खो जाए और केवल नृत्य बचे, और शायद तुम्हें पंख ऊग आएंगे। ऐसा नर्तक उड़ सकता है; ऐसा नर्तक निश्चित ही सितारों तक उड़ान भरता है।

यह — है अब मेरा मार्ग : तुम्हारा कहां है?' इस प्रकार मैने उन्हें जवाब दिया जिन्होंने मुझसे 'मार्ग' पूछा। क्योकि मार्ग — है ही नहीं!

यह उन महानतम वक्तव्यों में से एक है जो किसी द्वारा कभी भी दिये गये हों : क्योकि मार्ग — है ही नहीं! उसे चलने में ही निर्मित किया जाना है, उसे नृत्य करने में ही निर्मित किया जाना है, उसे खोजने में ही निर्मित किया जाना है। तुम्हें दोनों बातें करनी होंगी. मार्ग पर चलना, जैसे—जैसे तुम उसे निर्मित करते जाते हो; राह बनाए जाना और उस पर चलते जाना।

कभी तुमने गौर किया. है कि नदियां कैसे महासागर में पहुंचती हैं? उनके पास कोई बना—बनाया मार्ग नहीं होता; उनके पास दिशा के संबंध में कोई मार्गदर्शन नहीं होता। वे पटरियों पर दौड़ती रेलगाड़ी की भांति नहीं चलतीं। सुदूर हिमालय में निकलने वाली गंगा, अपनी यात्रा यह न जानते हुए प्रारंभ करती है कि मार्ग कहां है — किसी से फती तक नहीं। लेकिन वह पहाड़ों में, घाटियों में, मैदानों में अपना मार्ग पाने का प्रयास किये चली जाती है। और हजारों मीलों के बाद, अंतत: वह महासागर को पा लेती है।

यह एक चमत्कार है कि सारी नदियां अंततः महासागर को पा लेती हैं। तो मनुष्य के साथ इससे अन्यथा क्यों होगा? क्यों मनुष्य की चेतना परम सत्य को, महासागरीय सत्य को नहीं पा सकती?

व्यक्ति के पास केवल साहस की जरूरत है।

निश्चित ही, एक तालाब होना बहुत सुरक्षित व सुविधाजनक है — किसी रेगिस्तान में खो जाने का खतरा नहीं, रास्ता भटक जाने की आशंका नहीं, सर्व—तुष्ट — लेकिन तालाब मृत है, नदी जीवंत है। तालाब गंदा व कीचड़ होता चला जाता है, और नदी स्वच्छ बनी रहती है। गत्यात्मकता उसे युवा व स्वच्छ रखती है। मनुष्य को एक नदी होना होगा।

ऐसा जरमुस्त्र ने कहा।.....

पुरानी व नयी नियम— तालिकाओं की बात-भाग-1

प्यारे ओशो

यहां मैं बैठता और प्रतीक्षा करता हूं, पुरानी छिन्न— भिन्न नियम— तालिकाएं मेरे चारों ओर बिखरी हुईं और नयी अर्द्धलिखित नियम— तालिकाएं भी। कब मेरी घड़ी आएगी? — मेरे नीचे जाने की घड़ी मेरे अवरोह की : क्योकि एक बार और मैं मनुष्यों तक जाना चाहता हूं।

उसके लिए मैं अब प्रतीक्षा करता हूं : क्योंकि पहले इस बात का संकेत मुझ तक आना आवश्यक है कि यह मेरी घड़ी है — अर्थात फाख्ताओं के झुंड से युक्त हंसता हुआ शेर।

इस दरम्यान मैं स्वयं से ही बातचीत करता हूं ऐसे व्यक्ति की भांति जिसके पास बहुत सारा समय है। कोई भी मुझे कुछ भी नया नहीं बताता; इसलिए मैं स्वयं को ही स्वयं को बताता हूं।

जब मैं मनुष्यों से मिला मुझे वे एक पुराने अभिमान पर सवार मिले। प्रत्येक का सोचना था कि उसे बहुत काल से पता था कि मनुष्य के लिए अच्छा क्या है और बुरा क्या है। सद्‌गुणों की समस्त बातचीत उन्हें एक प्राचीन थका— हारा मामला लगा; और जो भलीभांति सोने की चाहत रखता था वह विश्राम में जाने से पहले 'अच्छाई' और 'बुराई' के संबंध में बातचीत करता था।

मैने इस निद्रालुता को अस्तव्यस्त कर दिया जब मैने सिखाया कि अब तक कोई भी नहीं जानता कि अच्छा और बुरा क्या है — जब तक कि वह सृजनकर्ता न हो!

ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।.....

जरथुस्त्र केवल एक धर्म में यकीन करते हैं : उद्विकास (एवकान) का धर्म। स्वभावत:, यदि उद्विकास जीवन का धर्म है तो परिवर्तन को इसका सिद्धात होना होगा — एक सतत परिवर्तन। समस्त धर्म स्थायी मूल्यों पर आश्रित रहे हैं; उन्होंने अपने मूल्य सदा—सदा के लिएं निर्धारित कर लिए हैं।

जीवन बदलता जाता है; उनके मूल्य स्थिर बने रहते हैं और अस्तित्व से संपर्क खो देते हैं। उससे मनुष्य के मन में असीम तनाव पैदा होता है। यदि वह उन मूल्यों का अनुसरण करे तो वह समकालीन नहीं रह जाता; वह जीवन के जीवित स्रोतों के साथ संपर्क में नहीं रह जाता। यदि वह उनका अनुसरण नहीं करता, वह अपराधी महसूस करता है, वह अनैतिक महसूस करता है, वह अधार्मिक महसूस करता है। और तब भय उसे जकड़ लेता है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन और तथाकथित स्थायी मूल्यों के बीच डावांडोल रहा आता है। वह जहां कहीं भी होता है, आधे—आधे मन से होता है। वह जहा कहीं भी होता है, दुखी होता है — क्योंकि हर्षोल्लास तो केवल तभी उमगता है जब तुम समग्रमना होते हो।

हर्षोल्लास कुछ भी नहीं है एक अखंड मन की सुगंध के सिवाय, और दुख—दुर्दशा एक ऐसे मन के फल हैं जो खंडों में, टुकड़ों में बांट दिया गया है।

जहा तक जरथुस्त्र का सवाल है केवल एक ही बात अपरिवर्तनशील है और वह है स्वयं परिवर्तन। परिवर्तन के सिवा सब कुछ परिवर्तित होता चला जाता है। और चैतन्य व्यक्ति प्रत्येक परिवर्तन को प्रतिध्वनित करेगा — निर्धारित मूल्यों के अनुसार नहीं बल्कि अपनी सजगता व चेतना के अनुसार, अपनी सहजस्फूर्तता के अनुसार।

जीवन अतीत के अनुसार नहीं जीआ जा सकता है।

वह जरथुस्त्र की मूलभूत शिक्षाओं में से एक है. व्यक्ति को वर्तमान के अनुसार ही जीना होगा, भविष्य के प्रति सजग। और व्यक्ति को याद रखना जरूरी है : जो मेरे लिए सच है वही सब के लिए सच नहीं है, और जो मेरे लिए आज सच है वही आवश्यक रूप से मेरे लिए कल सच रहनेवाला नहीं है। हमारे मूल्यों को जीवन के अनुसार होना होगा — उसका उलटा सही नहीं है।

जिस क्षण तुम जीवन को अपने मूल्यों के अनुसार बना देने का प्रयास करते हो, तुम जीवन—ध्वंसक बन जाते हो, जीवन—निषेधक। और जीवन को नष्ट करना स्वयं अपने को नष्ट करना है। तब दुख—दुर्दशा ही तुम्हारे हिस्से में पड़ने वाले हैं।

जरथुस्त्र कह रहे हैं, यहां मैं बैठता और प्रतीक्षा करता हूं पुरानी छिन्न— भिन्न नियम— तालिकाएं मेरे चारों ओर बिखरी हुईं और नयी अर्द्धलिखित नियम— तालिकाएं भी।

जीवन इतनी तेजी से बदलता है कि जब तक तुमने अपने नियम, विधान लिखे वे पहले ही तिथिबाह्य हो चुके। यही कारण है कि जरथुस्त्र कहते हैं, मैं यहा बैठा हूं प्रतीक्षा करता, मेरे चारों ओर पुरानी छिन्न—भिन्न नियम—तालिकाएं और नयी, अर्द्धलिखित नियम—तालिकाएं भी।

अर्द्धलिखित क्यों? — क्योंकि जब तक तुम उन्हें लिखते हो, हो सकता है तब तक वे प्रासंगिक न रह गयी हों। व्यक्ति को सहजस्फूर्त रूप से ही जीना होगा, किसी लिखित नियम के अनुसार नहीं। व्यक्ति को पूरी तरह से उत्तरदायित्व अपने ही कंधों पर लेना होगा।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे बच्चे बुद्धिमान हों, तो उन्हें बुद्धिमत्ता कभी मत दो। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे बच्चों के पास जीवन के प्रति एक स्पष्टता और लोगों तथा स्थितियों के प्रति एक सहजस्फूर्त जिम्मेदारी हो, तो उन पर अच्छे और बुरे की अवधारणाएं मत लादो, क्योंकि वे तुम्हारे समय में नहीं रह रहे होंगे — और तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि वे किस समय में रह रहे होंगे, उनकी परिस्थितियां क्या होंगी। सारा कुछ जो तुम कर सकते हो वह यह कि उन्हें अधिक मेधापूर्ण बनाओ, उन्हें अधिक सजग बनाओ, उन्हें अधिक सचेत बनाओ, उन्हें अधिक प्रेमपूर्ण बनाओ, उन्हें अधिक शात व मौन बनाओ। ताकि जहा कहीं भी वे हों उनका प्रत्युत्तर उनके मौन से निकले और उनके प्रेम से निकले और उनकी सजगता से निकले; वह ठीक होने वाला है। उन्हें यह मत बताओ कि अच्छा क्या है, बल्कि उन्हें ठीक संसाधन दो खोज निकालने के लिए कि क्या अच्छा है एक भिन्न परिस्थिति में।

हम बच्चों को उत्तर प्रदान करने की इतनी जल्दी में होते हैं कि हम कभी गहराई से पता नहीं करते कि उनके प्रश्न क्या हैं? कोई प्रश्न हैं भी अथवा नहीं? एक धैर्यपूर्ण मा अथवा पिता को प्रतीक्षा करनी चाहिए। लेकिन नहीं, बच्चा पैदा हुआ और तुरंत उसका एक ईसाई के रूप में बप्तिस्मा कर दिया जाना है। उसका अर्थ यह है कि तुमने उसे वे समस्त उत्तर प्रदान कर दिये जो ईसाइयत के पास हैं। अथवा उसका खतना कर दिया जाना है, और इस प्रकार तुमने वे सारे उत्तर उसे प्रदान कर दिये जो यहूदी धर्म के पास हैं। अथवा हिंदू धर्म में, बौद्ध धर्म में या इस्लाम धर्म में उसका संस्कार किया जाना है, और उन सबके अपने क्रियाकांड हैं। लेकिन वह उत्तरों की शुरुआत है।

बच्चे से कोई पूछ ही नहीं रहा। और यह पूछने का समय तक नहीं है, क्योंकि बच्चा कुछ भी जवाब नहीं दे सकता — वह ऐसा नवागंतुक है अभी। वह भाषा नहीं जानता, वह दुनिया के संबंध में कुछ भी नहीं जानता। उसे परवाह ही नहीं है कि किसने बनायी दुनिया। उसे कोई अवधारणा ही नहीं स्कइ 'ईश्वर' कहने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है।

यह दुनिया उत्तरों से भरी हुई है। हर व्यक्ति का सिर उत्तरों से भरा हुआ है जिसके लिए तुम्हारे पास अपना प्रामाणिक प्रश्न ही नहीं है। यही कारण है कि तुम्हारे ज्ञान को मैं कचरा कहता हूं। पहले तुम्हारे भीतर प्रश्न तो उठना चाहिए। और प्रश्न का उत्तर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं दिया जा सकता; तुम्हें खुद ही उत्तर पाना होगा। केवल तब, जब उत्तर तुम्हारा अपना है, उसमें एक सत्य होता है। यदि वह तुम्हें किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रदान किया गया है तो वह पुराना, सड़ा—गला और घृणित है। तुम्हारी अपनी ही खोज तुम्हें एक ताजे उत्तर तक ले आएगी।

ऐसा जरमुस्त्र ने कहा।.....

पुरानी व नयी नियम— तालिकाओं की बात-भाग-2

प्यारे ओशो ,

जब पानी पर पटरे बिछा दिये जाते हैं ताकि उस पर चला जा सके जब मार्ग और हस्तावलंब (रेलिंग्स) धारा के आरपार फैल जाते हैं : सच में उस पर कोई विश्वास नहीं करता जो कहता है : ' सब कुछ प्रवहमान है। '

उलटे बुद्ध भी उसका प्रतिवाद करते हैं। 'क्या? : बुद्ध कहते हैं 'सब कुछ प्रवहमान? लेकिन धारा के ऊपर पटरे और हस्तावलंब लगे हुए हैं!

'धारा के ऊपर सब कुछ सुदृढ़ रूप से जड़ दिया गया है सभी बातों के मूल्य सेतु अवधारणाएं समस्त "अच्छाई" और "बुराई" : सब कुछ सुदृढ़ रूप से जड़ दिया गया है!'

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

जरथुस्त्र हेराक्लाइटस और गौतम बुद्ध के समकालीन थे। यह एक अजीब संयोग है कि इन तीनों ही महान शिक्षकों ने जीवन के प्रति मूलभूत रूप से एक ही रुख प्रदान किया है : जीवन एक प्रवाह है, सब कुछ सतत परिवर्तित हो रहा है, और जो परिवर्तित नहीं होता वह मृत है। परिवर्तन ही जींवन का प्राण है; स्थायित्व मृत्यु का अंग है।

यह समस्त पुरानी परंपराओं के खिलाफ था और उन समस्त अन्य परंपराओं के खिलाफ था जो जरथुस्त्र के बाद पैदा होने को थीं। वे सब की सब स्थायित्व में यकीन करने वाली थीं। उनके लिए, परिवर्तन स्वप्न का गुण था, और स्थायित्व यथार्थ का गुण था — जो परिवर्तित होता है वह अयथार्थ है और— जो हमेशा वही का वही रहता है वह यथार्थ है। इन तीनों शिक्षकों के खिलाफ दुनिया के समस्त शिक्षक — धार्मिक अथवा दार्शनिक — इस एक बात पर राजी हैं।

लेकिन मैं जरथुस्त्र के और गौतम बुद्ध के और हेराक्लाइटस के समर्थन में हूं — क्योंकि तीन सौ वर्षों की सारी वैज्ञानिक शोधों ने उन्हें सच सिद्ध किया है, न कि दुनिया के सारे दार्शनिकों की और सारे संतों की और सारे धर्मशास्त्रियों की भीड को।

जरथुस्त्र विज्ञान द्वारा मान्य होते हैं — ऐसे ही गौतम बुद्ध, ऐसे ही हेराक्लाइटस होते हैं। निश्चित ही स्वयं अपने दिनों में वे हंसी के पात्र बने थे। वे कुछ बात भीड़ के खिलाफ कह रहे थे, समूचे लंबे अतीत के खिलाफ, समस्त विचारकों के खिलाफ और मनुष्य की मानसिकता में छिपी एक इच्छा विशेष के खिलाफ : मनुष्य चाहता है कि चीजें स्थायी हों। और इस बात को याद रखना है, मनुष्य परिवर्तन से भयभीत है। वह परिवर्तन से भयभीत है क्योंकि कोई नहीं जानता कि परिवर्तन क्या सामने लाएगा।

तुम उससे परिचित हो जो स्थायी है; तुम जानते हो कि उससे कैसे व्यवहार करना। तुमने उसके संबंध में सब कुछ सीख लिया है। तुम उसके साथ चैन में होते हो, वह अनोखा, अपरिचित नहीं रह गया है। लेकिन यदि जीवन एक सतत प्रवाह होने वाला है, एक क्षण— क्षण परिवर्तन, तो उसका अर्थ है कि तुम सदाइही अज्ञात का सामना करनेवाले हो। वह एक गहन भय पैदा करता है, क्योंकि उसका सामना करने के लिए तुम पहले से तैयार नहीं रहोगे। तुम्हें सहजस्फूर्त रूप से ही व्यवहार करना होगा। यह है समस्या। सहजस्फूर्तता को सजगता की जरूरत है, चेतना की एक खास गहराई की जरूरत है — क्योंकि यदि हर क्षण जीवन बदल रहा है तो हर क्षण तुम्हें अज्ञात को, अपरिचित को, अजनबी को प्रसरित करने के लिए तैयार रहना होगा। तुम उसके लिए पहले से

तैयार नहीं हो सकते क्योंकि तुम नहीं जानते कि कल क्या होने वाला है। तुम कोई पूर्वाभ्यास नहीं कर सकते; यह कोई नाटक नहीं है।

जरथुस्त्र की अंतर्दृष्टि को समझना ही होगा, क्योंकि वही मनुष्य का भविष्य का धर्म होने जा रही है। विज्ञान की जड़ें अधिकाधिक मनुष्य की चेतना में अवस्थित होंगी। अब तक हम विज्ञान का उपयोग केवल वस्तुगत जगत की खोज में करने में सक्षम हुए हैं। वह दिन बहुत दूर नहीं है जब विज्ञान मनुष्य की आत्मपरकता की तरफ बढ़ने व गवेषणा करने लगेगा — उसके अतंर्जगत की।

कब तक तुम स्वयं से बच सकते हो?

कब तक वैज्ञानिक वस्तुओं पर काम करते और चेतना के संबंध में भूलते जा सकते हैं? कब तक वैज्ञानिक स्वयं का इनकार कर सकता है, और रसायनशास्त्र और भौतिकी और जीव—विज्ञान और भूगर्भशास्त्र के क्षेत्रों में काम करता जा सकता है? देर—अबेर उसे इसके संबंध में सोचना ही होगा। 'मेरे भीतर यह चेतना कौन है? मैं कौन हूं?' — वह पूछने ही वाला है। पहले ही काफी देर हो चुकी है; अब तक उसे पूछ ही लेना था।

जरथुस्त्र की अंतर्दृष्टिया इतनी महान हैं कि यह लगभग अविश्वसनीय प्रतीत होता है कि कोई व्यक्ति पच्चीस सदियों पूर्व उसे देखने में समर्थ था जिसे वैज्ञानिक अब जान रहे हैं : कुछ भी, एक पल को भी, स्थिर नहीं है।

दुनिया में सब कुछ केवल एक प्रवाह है; कुछ भी स्थायी नहीं है। और जरथुस्त्र अथवा गौतम बुद्ध अथवा हेराक्लाइटस क्यों इस तथ्य पर जोर दे रहे हैं? — क्योंकि यह नैतिकता के प्रति, धर्म के प्रति, हमारे संबंधों के प्रति, हमारे जीवन के प्रति हमारे पूरे रुख को प्रभावित करेगा।

इसके निहितार्थ बहुत—बहुत सुदूरगामी होनेवाले हैं। यदि सब कुछ परिवर्तित हो रहा है तो अच्छाई और बुराई की कोई अवधारणा स्थायी के रूप में नहीं हो सकती, तब कोई परमात्मा स्थायी के रूप में नहीं हो सकता, तब कोई भी मूल्य लोगों पर सदा—सदा के लिए समस्त आने वाले युगों के लिए नहीं थोपे जा सकते। तब हमें स्वतंत्रता में जीना होगा और लोगों को स्थितियों को सहजस्फूर्त रूप से प्रस्थरित करने की अनुमति देनी होगी, क्योंकि तुम निर्धारित सिद्धात लेकर नहीं चल सकते।

निर्धारित सिद्धात बहुत—बहुत पीछे घिसट रहे होंगे, और तुम अस्तित्व के साथ सदा ही बेमेल (मिसफिट) रहोगे। सारे तुम्हारे धर्मग्रंथ निरर्थक हो जाते हैं, क्योंकि वे बदलते नहीं। सारे तुम्हारे दर्शनशास्त्र निरर्थक हो जाते हैं, क्योंकि जीवन बदलता जाता है।

कोई भी चीज जो अपरिवर्तित बनी रहती है वह समस्त सार्थकता खो देती है — वह जीवन के किसी काम की नहीं, उसे मार्ग से हटा देना होगा। केवल तब एक चीज उभरती है और वह है : सजगता। तुम्हें उन समस्त परिवर्तनों के प्रति सजग होना होगा जो तुम्हारे चारों तरफ जारी हैं, ताकि तुम पीछे न घिसटो। अपनी सजगता के रहते, हर परिवर्तन के साथ तुम भी परिवर्तित होते हो। तुम निर्धारित आदर्शों के वश होकर कृत्य नहीं करते, तुम क्षण की अपनी सबगतावश कृत्य करते हो।

इसका मतलब है कि किसी धर्म के रहने के लिए कोई कारण नहीं है। इसका मतलब है कि किसी नैतिकता के रहने के लिए कोई वैधता नहीं है। इसका मतलब है कि केवल एक ही चीज है जो अर्थवान है, और वह है : कैसे अधिक होशपूर्ण होना, ताकि तुम्हें जीवन के सुर—ताल से बाहर पड़ने की जरूरत न रह जाए ताकि तुम्हारे हृदय की धड़कन समूचे अस्तित्व के हृदय की धड़कन के साथ समस्वर रहे। यही एकमात्र आध्यात्मिकता है।

और यह तुम्हें हर रोज नयी अंतर्दृष्टियां, नये मूल्य लाएगा। यह तुम्हें सदैव संवेदनशील रखेगा, तुम्हारी अंतिम सांस तक तुम युवा बने रहोगे। तुम्हारा शरीर बूढ़ा हो सकता है, लेकिन तुम्हारी चेतना स्वयं को प्रतिपल

नया कर रही होगी — जैसे कि नदी बढ़ती जाती है, बहती और स्वयं को तरोताजा करती; वह कभी गंदी नहीं होती।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

स्वास्थ्य— लाभ करनेवाला

प्यारे ओशो,

एक प्रात: अपनी गुफ़ा में अपनी वापसी के थोड़ी देर बाद ही जरमुस्त्र सात दिनों की एक अवधि से गुजरते हैं जब वह मृतवत हैं। जब वह अंतत: अपने—आप में लौटते हैं वह पाते हैं कि वह फलों और मधुरगंधी जड़ी— बूटियों से घिरे हुए हैं जो उनके लिए उनके जानवरों द्वारा लायी गयी हैं। उन्हें जगा हुआ देखकर उनके जानवर जरमुस्त्र से पूछते हैं कि क्या वे अब बाहर दुनिया में कदम नहीं रखेगे जो उनकी प्रतीक्षा कर रही है :

'हवा भारी सुवास से बोझिल है जो आपकी अभीप्सा करती है और सारे नदी— नाले आपके पीछे— पीछे दौड़ना चाहेगे ' वे उनसे कहते हैं..

'क्योंकि देखो हे जरथुस्त्र! तुम्हारे नये गीतों के लिए नयी वीणाओं की जरूरत है। '

.....ऐसा जरमुस्त्र ने कहा।

प्राचीन साहित्य में बहुत सी सुंदर दृष्टात—कथाएं हैं। लोगों ने उनका आनंद लिया है लेकिन कभी— कभार ही उनको समझा है। दृष्टात—कथा कुछ कविता जैसी बात है; वह प्रतीकात्मक ज्यादा है। व्यक्ति को गहरे टटोलना पड़ता है उसमें छिपे हुए 'खजाने को पाने के लिए। ऊपरी तौर से वह केवल एक कहानी है और ऐसा लगता है कि वह केवल मनोरंजन के लिए है, लेकिन यह सच नहीं है।

एक प्रात: अपनी गुफा में अपनी वापसी के थोड़ी देर बाद ही जरमुस्त्र सात दिनों की एक अवधि से गुजरते हैं जब वह मृतवत हैं)। दृष्टात—कथाओं में हर चीज को खोजना पड़ता है, क्योंकि व्यक्ति को कुछ पता नहीं होता कि तात्पर्य को उसके शब्दों में कहां छिपाकर रखा गया है। उदाहरण के लिए : जरथुस्त्र सात दिन की एक अवधि से गुजरते हैं। सात दिन प्रतीकात्मक और अर्थपूर्ण हैं; वे मानव चेतना के सात तलों के प्रतीक हैं। शताब्दियों से मानवता की तथाकथित भीड़ ने केवल एक तल को जाना है, जिसमें हम जीते हैं — तथाकथित चेतना।

यह केवल इस शताब्दी में जाकर पश्चिम में था कि सिग्मंड फ्रायड और उसके सहकर्मियों ने एक बहुत स्तब्ध करने वाली अचेतन मन की अवधारणा पेश की — क्योंकि वह सपनों पर, सम्मोहन पर, विश्लेषण पर काम कर रहा था, और उसे मनुष्य के भीतर एक विशाल अचेतन क्षेत्र मिला, जिसका उसे कुछ पता नहीं है, यद्यपि यह उसके कृत्यों को, उसके विचारों को, उसके व्यवहार को, उसकी पूरी जीवनशैली को प्रभावित करता है।

सिग्मंड फ्रायड तुम्हारे अचेतन में ज्यादा उत्सुक हुआ बजाय उसमें जिसे तुम अपनी चेतना कहते हो, क्योंकि तुम्हारी चेतना, उसने पाया, विश्वसनीय नहीं है। तुम झूठ बोलते हो, और तुम झूठ इतनी निष्ठा से बोलते हो कि उसका पता लगा पाना बहुत कठिन है। तुम्हें पता तक नहीं चलता कि तुम झूठ बोल रहे हो। तुम झूठ बोलने के इतने आदी हो गये हो कि तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम सत्य ही बोल रहे हो।

लेकिन जब तुम नींद में होते हो तब तुम समस्त धर्मों के, समस्त तथाकथित नैतिकताओं, समाजों, संस्कृतियों, सभ्यताओं के नियंत्रण के बाहर होते हो। अचानक तुम ज्यादा प्रामाणिक होते हो। तुम्हारे सपने तुम्हारे संबंध में ज्यादा सच्ची बातें कहते हैं अपेक्षा उसके जो तुम स्वयं कहते हो। यहौ तक कि तुम उनका उलटा भी कह सकते हो। तुम्हें इस पर यकीन करना बहुत मुश्किल हो सकता है कियह तुम्हारे अपने ही अचेतन से आया है।

सिग्मंड फ्रायड तुम्हारी चेतना की एक और पर्त को प्रकाश में लाया जिसे उसने अचेतन मन कहा। उसके शिष्य और बाद में उसके प्रतिद्वंदी, कार्ल गुस्ताव जुग, ने अचेतन से भी गहरे जाने का प्रयास किया, और पाया कि हर व्यक्ति अपने प्राणों में एक सामूहिक अचेतन भी लिए हुए है — जो उसका नहीं है, जो हजारों—हजारों वर्षों का है, जो स्वयं में समूचा अतीत समेटे हुए है।

यह और भी धक्का पहुंचाने वाली बात थी : हमें पता नहीं है कि हम मानवता का समूचा इतिहास ढो रहे हैं। लेकिन पूरब में हमें इन तलों का पता रहा है : अचेतन, सामूहिक अचेतन, और एक और, जिसे संभवत: जल्दी ही पश्चिम को पता लगाना होगा — जागतिक अचेतन। सामूहिक अचेतन का संबंध केवल मानवता से है, जागतिक अचेतन का संबंध समूचे जगत से है। तुम न केवल, सूक्ष्म रूपों में, मनुष्यजाति का समूचा इतिहास ढो रहे हो, तुम अपने भीतर स्वयं जगत का ही समूचा इतिहास ढो रहे हो। ये हैं तीन त। तुम्हारे तथाकथित चेतन मन के नीचे। मैं इसे तथाकथित कह रहा हूं क्योंकि पूरब में हमने असली चेतन मन पा लिया है। तथाकथित चेतन मन केवल व्यावहारिक उपयोग के लिए है — एक छोटा सा अंश जो रोजमर्रा के काम के लिए उपयोगी है, लेकिन वह तुम्हें सत्य की झलक नहीं दे सकता। ठीक जैसे कि ये तल हैं तुम्हारे चेतन मन के नीचे के, पूरब को तुम्हारे चेतन मन के ऊपर के तीन ऐसे ही तलों का भी पता रहा है। और वह बहुत तर्कसंगत और बहुत वैज्ञानिक प्रतीत होता है, क्योंकि वह तुम्हें समतुलित करता है। पूरब, कम से कम पच्चीस सदियों से, निपट रूप से जानता रहा है कि तुम्हारे चेतन मन के ऊपर परम चेतन मन है, और परम चेतन मन के ऊपर सामूहिक परम चेतन मन है, और सामूहिक परम चेतन मन के ऊपर जागतिक परम चेतन मन है।

इन सात तलों का उल्लेख बहुत ढंग से किया गया है, लेकिन जरथुस्त्र की दृष्टात—कथा में उनका सात दिनों तक एक अजीब दशा में होना जो ऐसी दिखती थी जैसे कि वे लगभग मृत हो चुके हों — वह जीवित थे.. वह इन सारे ही सात तलों से गुजरे, निम्नतम से उच्चतम तक। उन्हेंने चेतना के समूचे इंद्रधुनष का अनुभव कर लिया — सातों रंग, समूचा वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम)। और जब वह सात दिनों बाद जगे वह पहले वाले जरथुस्त्र न थे। परममानव आ चुका था, जो अपनी समूची सत्ता के प्रति पूर्णत: चेतन था। उनके भीतर अब कोई छोटा कोना—कातर भी न था जो अंधेरा हो। सब कुछ प्रकाश हो गया था। और यही है जिसका आत्मज्ञान, अथवा संबोधि, अथवा अपने परम सत्य के प्रर्ति जागरण के रूप में उल्लेख किया गया है।

जब वह अंतत: अपने—आप में लौटते हैं वह पाते हैं कि वह फलों आऊऐर मधुरगंधी जड़ी— बूटियों से घिरे हुए हैं जो उनके लिए उनके जानवरों द्वारा लायी गयी हैं।

संभवत: जानवर ऐसे व्यक्ति के साथ एक सौहर्दमय संबंध—सेतु (रैपेर्ट) में पड़ सकते हैं जो अपनी पूरी सत्ता के प्रति जाग गया है; किसी भाषा की जरूरत नहीं। लेकिन वे जरथुस्त्र की देखभाल कर रहे थे। वे फल और जड़ी—बूटियां लाए थे और वे उनके जागने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उन्हें जगा हुआ देखकर उनके जानवर जरमुस्त्र से पूछते हैं कि क्या वे अब बाहर दुनिया में कदम नहीं रखेगे जो उनकी प्रतीक्षा कर रही है

अब वह तैयार हैं। वह बात जिसके लिए वह प्रतीक्षा कर रहे थे उन्हें घट चुकी है। वह सर्वोत्तम जागरण तक पहुंच चुके हैं। यही समय है : लोगों तक जाओ; वे अंधकार में टटाले रहे हैं।

'हवा भारी सुवास से बोझिल है जो आपकी अभीप्सा करती है और सारे नदी— नाले आपके पीछे—पीछे दौड़ना चाहेगे: वे उनसे कहते हैं। यह दृष्टात—कथा एक महत्वपूर्ण बात की तरफ संकेत करती है : जरथुस्त्र जैसा व्यक्ति केवल निदाषिता द्वारा समझा जा सकता है। जानकारों द्वारा नहीं, विद्वानों द्वारा नहीं; उनके द्वारा नहीं जो स्वयं को सुंदर—सुंदर शब्दों और दर्शनशास्त्रों में खो चुके हैं बल्कि उनके द्वारा जो निपट मौन हैं।

'क्योंकि देखो हे जरथुस्त्र! तुम्हारे नये गीतों के लिए नयी वीणाओं की जरूरत है। ' तुम अब वही पुराने जरथुस्त्र नहीं रह गये हो जो नींद में गया था। इन सात दिनों में तुम मर चुके हो और तुम पुनरुज्जीवित हुए हो; तुम एक सर्वथा नये व्यक्ति हो। तुम्हें अपने नये गीतों के लिए नयी वीणाओं की जरूरत होगी।

……..ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

उच्चतर मानव से मुलाकात की बात

प्यारे ओशो,

महीने और बीतते हैं, और जरमुस्त्र के बाल सफेद होते हैं जबकि वह प्रतीक्षा करते हैं उस संकेत की कि यही समय है नीचे उतरकर मनुष्यों तक उनके फिर से जाने का। एक दिन जबकि वह अपनी गुफा के बाहर बैठे हैं जरमुस्त्र के पास वृद्ध पैगंबर आता है जो जरमुस्त्रू को सावधान करता है कि वह उनको उनके चरम पाप के प्रति फुसलाने के लिए आया है — दया खाने का पाप

'उच्चतर मानव' के लिए दया? जरमुस्त्र इससे दहल जाते हैं लेकिन अंतत: राजी होते हैं उच्चतर मानव की चीख का जवाब देने के लिए उसे खोज निकालने और उसकी मदद करने के लिए जरयुस्त्र तेजी से आगे बढ़ते हैं और अपने समस्त अभ्यागतों को वहां एकत्र पाते हैं —

राजे— महाराजे सदसद्विवेकी भावना का व्यक्ति जादूगर खा पोप इत्यादि : क्योकि वे ही 'उच्चतर मानव' हैं।

जरथुस्त्र के पास उच्चतर मानव के लिए कोई सम्मान नहीं है, क्योंकि उच्चतर मानव अन्य कोई नहीं केवल पुराना मनुष्य है और भी बड़े अहंकार से युक्त। वह उच्चतम हो सकता है क्योंकि उसके पास शक्ति है, वह एक राजा है; वह उच्चतर हो सकता है क्योंकि उसके पास ज्ञानहै, जो सारा का सारा उधार है; वह उच्चतर हो सकता है क्योंकि उसके पास सद्गुण और एक नैतिक आचरण है, जो सब के सब सड़े—गले और पुरातनपंथी हैं जो समय के साथ जरा भी तालमेल में नहीं हैं। इस उच्चतर मानव को जरथुस्त्र का परमानव समझने के भ्रम में नहीं पड़ना है। परममानव एक सातत्यभंग है मनुष्य के साथ जैसा वह है। परममानव के देखे, उच्चतर मानव को मरना होगा — अपने समस्त ज्ञान सहित, समस्त सद्गुणों सहित, समस्त अहंकार सहित — और बच्चों जैसी शुद्ध चेतना के लिए जगह खाली करनी होगी। उच्चतर मानव एक सातत्य है। यह वही पुराना मनुष्य ही है, धन से आध्यात्मिकता से, धार्मिकता से, सम्माननीयता से, शक्ति और सत्ता से सुसज्जित — लेकिन मूलत: यह वही पुराना मनुष्य ही है। परममानव एक निपट सातत्यभंग है; वह पूर्णत: नया है। तो इस भेद को अपने मन में स्मरण रखना।

उच्चतर मानव से मुलाकातें परममानव से मुलाकातें नहीं हैं, यद्यपि उच्चतर मानव ने सदा स्वयं को परममानव समझा है। व्ह उसकी अहंकारी प्रवृत्ति है। परममानव को श्रेष्ठता का कुछ भी पता नहीं है — यही उसकी श्रेष्ठता है। वह केवल एक निर्दोष, बच्चों जैसी स्वतंत्रता को जानता है। उसके लिए संपूर्ण अस्तित्व ही एक रहस्य है और उसकी आखें विस्मयबोध से भरी हुई हैं, ज्ञान से भरी हुई नहीं। तो दोनों अवधारणाओं को अलग —अलग रखो। उच्चतर मानव निंदित है, क्योंकि वह परममानव होने का ढोंग कर रहा है। वह परममानव के आगमन की राह में रुकावट डाल रहा है। वह नकली है, मिथ्या।

परममानव के पास एक ही गुण है : वह इतना निर्दोष है जैसे कोई नवजात शिशु। और वह किसी भी प्रकार के बोझ से नितांत स्वतंत्र है, चाहे वह धन—दौलत का हो अथवा ज्ञान का हो अथवा सद्गुणों का हो अथवा संतत्व का हो। उसको पूरा आकाश ही उपलब्ध है, क्योंकि वह निर्भार है और वह सुदूरतम सितारों तक उड़ सकता है; पूरा अस्तित्व ही उसका क्षेत्र बन जाता है। एक अर्थों में कुछ भी उसका नहीं है, और एक दूसरे अर्थों में सब कुछ केवल उसका ही है। लेकिन वह मालिकियत का दावा नहीं करता — कोई जरूरत नहीं है, सब कुछ उसका है।

मालिकियतपना सदैव ही शक्ति की निशानी है, और शक्ति केवल गरीबी, हीनता सूचित करती है। केवल हीन व्यक्ति श्रेष्ठ होना चाहता है, क्योंकि हीनता के साथ जीना कठिन है। हीन व्यक्ति धन—दौलत पाना चाहता है, राज्य पाना चाहता है, ज्ञान पाना चाहता है, धार्मिक व्यक्ति बनना चाहता है, लेकिन किसी ढंग से वह अपनी हीनता को छिपाना चाहता है ताकि वह उसके बारे में सब कुछ भूल सके। वह एक खुली किताब नहीं है; खुली किताब होने की उसकी सामर्थ्य नहीं है। वह बहुत छिपाऊ है, क्योंकि वह जानता है कि वह क्या छिपा रहा है अपने भीतर।

जरथुस्त्र. नाचता—गाता मसीहा परममानव बस एक खुली किताब है। कुछ भी छिपाने को नहीं है, और कुछ भी मालिक बनने को नहीं है। शिशुवत संत की उन विस्मयविमुग्ध आखों में सब कुछ पर मालिकियत है बिना किसी मालिकियत के। परममानव गरीब नहीं है — इतना गरीब नहीं कि मालिकियत करे, इतना गरीब नहीं कि अपनी श्रेष्ठता की अथवा अपनी पवित्रता की डींग हाके। डींग हाकने का उसे कुछ भी पता नहीं है। वह इतना भरा है हर्षोल्लास से — पक्षियों का, फूलों का, नदियों का सीधा—सादा हर्षोल्लास; हर्षोल्लास जिस पर कोई खर्च नहीं लगता; क्योंकि जरथुस्त्र के अनुसार कोई भी चीज जिस पर कीमत है किसी मूल्य की नहीं, केवलवे ही चीजें मूल्यवान हैं जिन पर कोई कीमत नहीं।

परममानव के पास समस्त मूल्य हैं, लेकिन उसके मूल्यों का क्रय—विक्रय नहीं हो सकता; वे वस्तुएं नहीं हैं। उसके पास अपरिसीम प्रेम है, विशाल स्पष्टता है; उसके पास आत्मा की शुद्धता है; वह चालबाजी, राजनीति, कूटनीति द्वारा अप्रदूषित है। वह बस वही है जो वह है, और वह सब के लिए उपलब्ध है।

परममानव के गुण क्या होंगे?

उसका मूलभूत गुण होगा परम चेतना। उसके कृत्य चैतन्य से निकलेंगे, किसी नैतिक विधान से नहीं। वह हर स्थिति को सहजस्फूर्त रूप से प्रतिसंवेदित करेगा। — किसी धर्मशास्त्र के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी ही परम चेतना के अनुसार। वह परमात्मा की, स्वर्ग और नर्क की समस्त कल्पनाओं से नितांत मुक्त होगा। स्वतंत्रता ही उसके हृदय की धड़कन होगी, और चेतना उसे एक प्रसाद, सौंदर्य, आनदमयता, धन्यता का जीवन प्रदान करेगी। वह प्रेम से छलक रहा होगा। वह अतिशय रूप से शक्तिशाली होगा, लेकिन दूसरों के ऊपर नहीं। उसकी शक्ति उसका प्रेम होगा।

उसकी शक्ति उसका खजाना होगा जिसे वह बांट सके।

उसकी शक्ति उसका सतत बांटना होगा।

वह किसी व्यक्ति को भिखारी नहीं बना सकता; वह किसी व्यक्ति की गरिमा नहीं छीन सकता। वह एक मित्र के रूप में, एक सहयात्री के रूप में प्रेम व चेतना प्रदान करेगा, लेकिन वह कभी भी, सपने में भी, स्वयं को उच्चतर अथवा पवित्रतर नहीं समझेगा।

वह नितांत निर्दोष होगा।

अपनी निदाषिता में वह पवित्र होगा, और अपने प्रेम में वह धनी होगा, और अपनी परम चेतना में वह भगवत्ता के गुणवाला होगा।

.....ऐसा जरथुस्त्र ने कहा।

हास्य व नृत्य की बात

प्यारे ओशो,

यहां पृथ्वी पर सबसे बड़ा पाप क्या रहा है? क्या यह उसका कथन नहीं थी जिसने कहा : 'धिक्कार है उनको जो हंसते हैं!'

क्या स्वयं उसने पृथ्वी पर हंसने का कोई कारण नहीं पाया? यदि ऐसा है तो उसने खोज बुरी तरह की। एक बच्चा भी कारण पा सकता है।

उसने — पर्याप्त रूप से प्रेम नहीं किया : अन्यथा उसने हमको भी प्रेम किया होता हसनेवालो को! लेकिन उसने घृणा की और हम पर ताने कसे उसने शाप दिया कि हम बिलखें व दांत किटकिटाएं।

ऐसे समस्त गैर— समझौतावादी मनुष्यों से बचो! वे दीन व रुग्ण प्रकार के हैं भीड़ वाले प्रकार के : वे इस जीवन को दुर्भावना से देखते हैं इस पृथ्वी के प्रति उनके पास कुदृष्टि है। ऐसे समस्त गैर— समझौतावादी मनुष्यों से बचो! उनके पैर बोझिल व हृदय उमसदार हैं — वे नहीं जानते कि नाचना कैसे ऐसे मनुष्यों के लिए पृथ्वी हलकी कैसे हो सकती है!...

यह हंसी का ताज यह गुलाब— मालाओं का ताज : मैने स्वयं ही इस ताज को अपने सिर पर जमाया है मैने स्वयं ही अपने हास्य का संतघोषण किया है। मैने आज इसके लिए किसी अन्य को पर्याप्त मजबूत नहीं पाया है।

नृत्यकार जरयुस्त्र हलका जरथुस्त्र जो अपने पंखों से संकेत करता है। उड़ान के लिए तैयार समस्त पक्षियों को संकेत करता तत्पर एवम् तैयार आनंदपूर्वक निर्भार—हृदय :

पैगंबर जरमुस्त्रु हंसता पैगंबर जरमुस्त्रु न अधैर्यवान न गैर— समझौतावादी मनुष्य वह जो कूद— फांद व नटखटपने से प्रेम करता है; मैने स्वयं ही इस ताज को अपने सर पर जमाया है!... तुम उच्चतर मनुष्यो तुम्हारे संबंध में सर्वाधिक बुरा है : तुममें से किसी ने भी नृत्य करना नहीं सीखा है जैसा कि मनुष्य को नृत्य करना चाहिए — स्वयं के पार तक नृत्य करना। इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुम असफल होते हो)।

कितना कुछ अभी भी संभव है। तो स्वयं के पार तक हंसना सीखा। अपने हृदयों को उन्नत करो तुम उत्कृष्ट नर्तको ऊंचे! और ऊंचे! और जी भर कर हंसना मत भूलो! यह हंसी का ताज यह गुलाब— मालाओं का ताज : तुम तक मेरे बंधुओ मैं फेकता हूं यह ताज! मैने हास्य का

संतघोषण कर दिया है; तुम उच्चतर मनुष्यो सीखो — हंसना!...

'यह मेरी सुबह है मेरा दिन प्रारंभ होता है : उठो अभी, उठो, महा मध्याह्न वेला!'

... ऐसा जरमुस्त्र ने कहा और अपनी गुफा छोड़ दी प्रदीप्त और ओजस्वी जैसे सुबह का सूरज अंधेरे पर्वतों के पीछे से उभर रहा हो।

जरथुस्त्र नितात सही हैं जब वह कहते हैं, यहां पृथ्वी पर सबसे बड़ा पाप क्या रहा है? क्या यह उसका कथन नहीं था जिसने कहा : 'धिक्कार है उनको जो हंसते हैं। 'लेकिन सारे तुम्हारे संत यही कह रहे हैं, सारे तुम्हारे धर्म यही कह रहे हैं, सारे तुम्हारे तथाकथित महान लोग यही कह रहे हैं। और इसे वे बिना कारण के नहीं कह रहे हैं।

एक सर्वाधिक क्र बात जो मनुष्य के साथ की गयी है वह है उसे उदास और गंभीर बनाना। इसे किया जाना ही था, क्योंकि मनुष्य को बिना उदास व गंभीर बनाए उसे गुलाम बनाना असंभव है — गुलाम गुलामी के समस्त आयामों में : आध्यात्मिक रूप से किसी काल्पनिक ईश्वर का गुलाम, किसी काल्पनिक स्वर्ग व नर्क का;

मनोवैज्ञानिक रूप से गुलाम, क्योंकि उदासी, गंभीरता स्वाभाविक नहीं हैं, उन्हें मन पर जबरन लादा जाना होता है और मन खंड—खंड हो जाता है, छिन्न—भिन्न हो उठता है; और शारीरिक रूप से भी गुलाम, क्योंकि जो व्यक्ति हंस नहीं सकता वह सचमुच में स्वस्थ व समग्र नहीं हो सकता।

हास्य एक—आयामी नहीं है; इसमें मनुष्य की आत्मा के तीनों आयाम हैं। जब तुम हंसते हो, तुम्हारा . शरीर उसमें सम्मिलित होता है, तुम्हारा मन उसमें सम्मिलित होता है, तुम्हारी आत्मा उसमें सम्मिलित होती है। हास्य में भेद खो जाते हैं, विभाजन खो जाते हैं, खंडमना व्यक्तित्व खो जाता है। लेकिन यह उन लोगों के विपरीत पड़ता था जो मनुष्य का शोषण करना चाहते थे — राजे—महाराजे, पंडित—पुरोहित, चालबाज राजनीतिश। उनके समस्त प्रयास जैसे—तैसे मनुष्य को कमजोर व रुग्ण करने के थे : मनुष्य को दुखी बना दो और वह कभी विद्रोह नहीं करेगा।

मनुष्य का हास्य उससे छीन लेना उसका जीवन ही छीन लेना है। मनुष्य से हास्य का छीना जाना आध्यात्मिक बधियाकरण है।

क्या उसने स्वयं पृथ्वी पर हंसने का कोई कारण नहीं पाया 7 यदि ऐसा है तो उसने खोज बुरी तरह की। एक बच्चा भी कारण पा सकता है। वास्तव में, केवल बच्चे ही खिलखिलाते व हंसते पाये जाते हैं। और वयस्क लोग सोचते हैं कि क्योंकि वे अज्ञानी बच्चे हैं उन्हें क्षमा किया जा सकता है — अभी वे सभ्य नहीं हुए हैं, अभी वे आदिम ही हैं। मां—बाप का, समाज का, शिक्षकों का, पंडित—पुरोहितों का सारा प्रयास ही यही है कि कैसे उन्हें सभ्य बना देना, कैसे उन्हें गंभीर बना देना, कैसे उन्हें ऐसा बना देना कि वे गुलामों की तरह व्यवहार करें, स्वतंत्र व्यक्तियों की तरह नहीं।

उसने — पर्याप्त रूप से प्रेम नहीं किया : अन्यथा उसने हमको भी प्रेम किया होता हंसनेवालों को। दरअसल, समाज में जो व्यक्ति दिल खोल कर हंसता है—एक समग्र हंसी—उसका सम्मान नहीं होता। तुम्हें गंभीर दिखना होगा; उससे पता चलता है कि तुम सभ्य हो और पागल नहीं हो। हंसना तो बच्चों का काम है और पागलों का, या फिर आदिम लोगों का।

बच्चे हंस सकते हैं क्योंकि उन्हें किसी बात की अपेक्षा नहीं है। क्योंकि उन्हें किसी बात की अपेक्षा नहीं है, उनकी आखों में एक स्पष्टता है चीजों को देखने की — और दुनिया इतने बेतुकेपन से इतनी हास्यास्पदताओं से भरी हुई है! केले के छिलकों पर फिसल कर इतना गिरना हो रहा है कि बच्चा उसे देखने से बच नहीं सकता! यह हमारी अपेक्षाएं हैं जो हमारी आखों पर परदे का काम करती हैं।

क्योंकि सारे धर्म जीवन के खिलाफ हैं, वे हंसी के पक्ष में नहीं हो सकते। हास्य तो जीवन और प्रेम का अनिवार्य अंग है। धर्म तो जीवन के, प्रेम के, हास्य के, हर्षोल्लास के खिलाफ हैं; वे उस सब कुछ के खिलाफ हैं जो जीवन को धन्यता और वरदान की एक विराट अनुभूति बना सकता है।

अपनी जीवन—विरोधी प्रवृत्ति के कारण, उन्होंने पूरी मानवता को नष्ट कर दिया है। उन्होंने उस सब को छीन लिया है जो मनुष्य के भीतर रसपूर्ण है; और उनके संत दूसरों द्वारा अनुसरण किये जाने के लिए उदाहरण बन गये हैं। उनके संत बस सूखी हड्डियां हैं — उपवास करते, स्वयं को तमाम—तमाम ढंगों से यातनाएं देते, अपने शरीर को यंत्रणा देने के लिए नये उपाय, नये ढंग खोजते। जितना ज्यादा वे स्वयं को सताते रहे हैं, उतने ही ऊंचे उनकी सम्माननीयता उठती रही है। उनको एक सीढ़ी मिल गयी है, एक उपाय और—और सम्माननीय होते जाने का : बस स्वयं को सताओ, और लोग शताब्दियों तक तुम्हारी पूजा करने और तुम्हें याद रखने वाले हैं।

आत्म—प्रताड़ना एक मनोवैज्ञानिक बीमारी है। पूजा करने के लिए उसमें कुछ भी नहीं है; वह एक धीमी आत्महत्या है। लेकिन हमने सदियों से इस धीमी आत्महत्या को सहारा दिया है, क्योंकि यह धारणा हमारे मन में कहीं गहरे बैठ गयी है कि शरीर और आत्मा दुश्मन हैं एक—दूसरे के। जितना ज्यादा तुम शरीर को सताते हो उतने ही ज्यादा आध्यात्मिक तुम हो। जितना ज्यादा तुम शरीर को सुख, मौज, प्रेम, हास्य की अनुमति देते हो, उतने ही कम आध्यात्मिक तुम हो। यह दो में विभाजन मूल कारण है कि क्यों मनुष्य से हास्य विदा हो गया है।

उसने — पर्याpt रूप से प्रेम नहीं किया : अन्यथा उसने हमको भी प्रेम किया होता हंसनेवालों को! लेकिन उसने घृणा की और हम पर ताने कसे उसने शाप दिया कि हम बिलखें और दांत किटकिटाए

मैंने मध्ययुगीन यूरोप के गिरजाघरों के चित्र देखे हैं... उपदेशक का काम था लोगों को नरकाग्नि से और उन यंत्रणाओं से जो वे वहां झेलेंगे बहुत ज्यादा डरा देना। उनके वर्णन इतने सजीव होते कि बहुत सी स्त्रिया गिरजाघरों में ही बेहोश हो जाया करतीं। ऐसा सोचा जाता था कि महानतम उपदेशक वह था जो सबसे ज्यादा लोगों को बेहोश बना सके — वह एक तरीका था पता करने का कि महानतम उपेदशक कौन ???

है। समूचा धर्म एक सरल से मनोविज्ञान पर आधारित है : नर्क के नाम पर भय का विस्तार, और स्वर्ग के नाम पर लोभ का विस्तार। वे लोग जो पृथ्वी पर स्वयं का आनंद ले रहे हैं वे नर्क में पड़ने वाले हैं। स्वभावत: मनुष्य भयभीत हो उठता है — बस छोटे से सुखों के लिए केवल सत्तर वर्ष के जीवन के लिए उसे अनंत काल तक नरक भोगना पडेगा!

यदि सचमुच कहीं नर्क और स्वर्ग हैं, तो स्वर्ग के बजाय नर्क कहीं ज्यादा स्वस्थ जगह होगी क्योंकि स्वर्ग में तुम सारे सूखी हड्डी वालों को पाओगे, कुरूप जंतु जो संत कहे जाते रहे हैं, स्वयं को सताते हुए। वह जाने योग्य जगह नहीं है। नर्क में तुम्हें सारे कवि मिलेंगे, सारे चित्रकार, सारे मूर्तिकार, सारे रहस्यदर्शी, सारे वे लोग जिनका संग — साथ वरदान सिद्ध होनेवाला है। तुम वहा सुकरात को पाओगे, तुम वहा गौतम बुद्ध को पाओगे — हिंदुओं ने उनको नर्क में फेंक दिया है, क्योंकि वह वेदों में विश्वास नहीं करते थे जिन पर सारा हिंदू धर्म आधारित है। तुम महावीर को पाओगे, क्योंकि वह हिंदू वर्ण—व्यवस्था में विश्वास नहीं करते थे; उन्होंने उसकी निंदा की। तुम बोधिधर्म, च्वाग्ब्ल लाओत्सु को पाओगे। तुम उन सारे महान लोगों को पाओगे जिन्होंने जीवन क्रो योगदान किया है — सारे महान वैज्ञानिक और कलाकार जिन्होंने इस पृथ्वी को थोड़ा और सुंदर किया है।

तुम्हारे संतों ने क्या योगदान किया है? वे सर्वाधिक निरर्थक लोग हैं, सर्वाधिक अनुर्वर। वे बस एक बोझ रहे हैं; और वे परजीवी रहे हैं, वे बेचारे मनुष्यों का खून चूसते रहे हैं। वे स्वयं को यातना दे रहे थे और दूसरों को सिखाते रहे अपने आप को यातना देना; वे मनोवैज्ञानिक रुग्णता फैला रहे थे।

ऐसे समस्त गैर— समझौतावादी मनुष्यों से बचो! वे दीन व रुग्ण प्रकार के हैं भीड़ वाले प्रकार के : वे इस जीवन को दुर्भावना से देखते हैं इस पृथ्वी के प्रति उनके पास कुदृष्टि है। ऐसे समस्त गैर— समझौतावादी मनुष्यों से बचो! उनके पैर बोझिल व हृदय उमसदार हैं — वे नहीं जानते कि नाचना कैसे। ऐसे मनुष्यों के लिए पृथ्वी हलकी कैसे हो सकती है!

जिस दिन मनुष्य हंसना भूल जाता है, जिस दिन मनुष्य हसी—खेलपूर्ण रहना भूल जाता है, जिस दिन मनुष्य नाचना भूल जाता है, वह मनुष्य नहीं रह जाता; वह अर्ध—मानवीय योनियों में गिर गया। खिलवाड़पना उसे हलका बनाता है; प्रेम उसे हलका बनाता है; हास्य उसे पंख देता है। हर्षोल्लास से नाचते हुए वह सुदूरतम सितारों को छू सकता है, वह जीवन के रहस्यों में ही प्रवेश पा सकता है।

हास्य व नृत्य की बात यह हंसी का ताज यह गुलाब— मालाओं का ताज : मैने स्वयं ही इस ताज को अपने सिर पर जमाया है, मैंने स्वय ही अपने हास्य का संतधोषण किया है। मैंने आज उसके लिए किसी को

मजबूत नहीं पाया है। समस्त रहस्यदर्शियों ने स्वयं को बहुत अकेला महसूस किया है — उनकी ऊंचाइयां उनको बहुत अकेला कर देती हैं। भीड़ तो नीचे घाटियों में अंधेरी गुफाओं में जीती है। वे अपनी गुफाओं से कभी बाहर नहीं आते।

नृत्यकार जरमुस्त्रु हलका जरथुस्त्र जो अपने पंखों से संकेत करता है उड़ान के लिए तैयार समस्त पक्षियों को संकेत करता तत्पर एवम् तैयार आनंदपूर्वक निर्भार— हृदय :

पैगंबर जरमुस्त्रु हंसता पैगंबर जरमुस्त्रु न अधैर्यवान न गैर— समझौतावादी मनुष्य वह जो कूद— फांद व नटखटपने से प्रेम करता है; मैने स्वयं ही इस ताज को अपने सिर पर जमाया है! तुम उच्चतर मनुष्यो तुम्हारे संबंध में सर्वाधिक बुरा है : तुममें से किसी ने भी नृत्य करना नहीं सीखा है जैसा कि मनुष्य को नृत्य करना चाहिए — स्वयं के पार तक नृत्य करना! इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुम असफल होते हो!

किसी छुद्र बात में विजयी होने के बजाय किसी महान बात में असफल होना बेहतर है — कम से कम तुमने प्रयास किया! स्वयं का अतिक्रमण करने में असफलता भी महान विजय है। प्रयास मात्र ही, अभीप्सा मात्र ही तुम में एक रूपांतरण लाती है।

स्वयं के पार तक नृत्य करना — वही जरथुस्त्र की अनिवार्य शिक्षा है। वह स्वयं की घोषणा करते हैं.. हंसता पैगंबर के रूप में।

कितना कुछ अभी भी संभव है। तो स्वयं के पार तक हंसना सीखो! अपने हृदयों को उन्नत करो तुम उक्ष्ट नर्तको ऊंचे! और ऊंचे! और जी भरकर हंसना मत भूलो! यह हंसी का ताज यह गुलाब— मालाओं का ताज तुम तक मेरे बंधुओ मैं फेकता हूं यह ताजा मैने हास्य का संतघोषण (कैनेनाइजेशेन) कर दिया है; तुम उच्चतर मनुष्यो सीखो — हंसना।

‘ यह मेरी सुबह है मेरा दिन प्रारंभ होता है; उठो अभी, उठो, महा मध्याह्न वेला!’

… ऐसा जरथुस्त्र ने कहा और अपनी गुफा छोड़ दी प्रदीप्त और ओजस्वी जैसे सुबह का सूरज अंधेरे पर्वतों के पीछे से उभर रहा हो।